राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सपादक – पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि
[सम्मान्य सचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर]

*

ग्रन्थांक १४

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

कूर्मवंश यशप्रकाश

अपर नाम

लावारासा

*

—: प्रकाशक —

राजस्थान राज्यसस्थापित
राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर
जयपुर (राजस्थान)

२) रु० ७५ न० पै०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

'राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी' के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोमें छप रहे हैं उनकी नामावलि ।



पद्यात्मक रचनाएं –

१. कान्हड दे प्रबन्ध-कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ ।
२. गोराबादल-पद्मिणी चउपई-कर्ता कवि हेमरतन ।
३. वसन्तविलास–फागु काव्य ।
४. कूर्मवंशयशप्रकाश अपर नाम लावारासा-कर्ता चारण कवि गोपालदान
५. क्यामखां रासा – कर्ता मुस्लिम कवि जान ।

गद्यात्मक रचनाएं –

६. वांकी दासरी ख्यात ।
७. मुंहता नैणसीरी ख्यात ।
८. राठोड वंसरी उत्पत्ति ।
९. खींची गंगेव नींबावतरो दोपहरो, राजान राउतरो वात वणाव आदि ।
१०. दाढाला एकलगिडरी वात ।

छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर ।
पुरातन राजस्थानी गद्य संचय ।
जहांगिर यशश्चन्द्रिका - कवि केशवदास कृत ।
रणमल्लछन्द - कवि श्रीधरव्यास कृत ।
जलाल गहाणीरी वात ।
कुतवदी साहजादेरी वात ।
हितोपदेश गवालेरी भाषा
वेताल पाचीसीरी वात । इत्यादि - इत्यादि ।

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

विस्तृत भूमिका एव टिप्पणीआदिसे समलङ्कृत

संपादन कर्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशन कर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर, (राजस्थान)

[प्रथमावृत्ति, प्रति स० ७५०]

विक्रमाब्द २०१०] मूल्य १) रु० ७५ न० पै० [खिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—पी एन् रामन, एसोसिएटेड ए एन्ड प्रि लि, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई ७

१) रु० ७५ न० पै०

लावारासा - अनुक्रमणिका

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रथमाला'में प्राचीन राजस्थानी एव हिन्दीके, जिन कतिपय ग्रन्थोके प्रकाशन करनेका निश्चय, पिछले वर्षके प्रारभमें, किया गया था उनमेंका प्रस्तुत ग्रथ चारण कविया गोपालदान विरचित 'कूमवशयशप्रकाश' अपरनाम 'लावारासा' भी एक है जो अब इस प्रकार सुसपादित और समुद्रित होकर, प्रथम वार प्रकाशमें आ रहा है और विद्वानोके कर-कमलमें उपस्थित हो रहा है।

जिस समय प्रस्तुत ग्रन्थके सपादनकर्त्ता श्री महताब चन्द्रजी खारडसे, इस कृतिके विषयमें कुछ परिचय मिला और इनकी की हुई प्रतिलिपि देखनेमें आई, उस समय यह ज्ञात नही हुआ था कि इस ग्रथकी और भी प्रतिया कहींसे उपलब्ध हो सकती है। खारैडजीने जिस मूल प्रतिपरसे अपनी प्रतिलिपि की थी वह प्रति भी मुझे प्रत्यक्ष देखनेको नही मिली। अत जैसी प्रतिलिपि खारैडजीकी थी उसीको छपनेके लिये प्रेसमें भेज दी गई। प्रेसने ग्रन्थका आधेसे अधिक भाग एकसाथ कपोज करके भेज दिया और उसका सशोधन वगरह होकर उतना भाग छप गया, तब फिर प्रेसने वाकीका भाग भी एकसाथ कपोज करके करेक्शनके लिये भेजा। उस समय अकस्मात् भगतपुरा (खूड) के निवासी उत्साही राजपूत युवक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत द्वारा ज्ञात हुआ कि इस ग्रथकी दो एक प्रतिया तो उनके निजके पासमें है और कुछ अन्य प्रतिया अन्य सज्जनोके पास भी उनने देखी है इत्यादि। प्राचीन ग्रथोंके सपादनकी हमारी अपनी शली है कि प्रकाशनके लिये जो ग्रथ तैयार किया जाय उसकी जितनी भी प्राचीन प्रतिया ज्ञात या उपलब्ध हो सकती हो उन्हें प्राप्त करना, देखना एव उनका परस्पर मिलान करना और फिर उनके आधार पर उसका यथाशक्य शुद्ध पाठ तयार करके, उसे प्रेसमें छपनेके लिये भेजना। लेकिन, प्रस्तुत कृतिके विषयमें हम अपनी इस शास्त्रीय सपादन शलीका प्रयोग नही कर सके। क्या कि जिन अन्य प्रतियाके अस्तित्वका जब हमें परिचय मिला, तब तो इसके पाठका मुद्रण काम प्राय समाप्त होने पर था। इसलिये इस ग्रथका प्रस्तुत प्रकाशन केवल एक ही प्रतिकी प्रति-लिपिके आधार पर किया जा रहा है और इससे इसमें शब्द, वाक्य, पक्ति आदिकी दृष्टिसे कई प्रकारकी अशुद्धियोका होना अनिवार्य है। यदि भविष्यमें इसके पुनर्मुद्रणका प्रसग उपस्थित हुआ तो, उपलब्ध अन्यान्य प्रतियोका मिलान कर, उन परसे एक विश्लेषणात्मक और अनुसधाना-त्मक आवृत्ति–जिसे इग्रजीमें 'क्रिटिकल एडिशन' कहते हैं–तयार होनी चाहिये।

श्रीयुत सौभाग्यसिंहजी शेखावत हमें सूचित करते है कि–

'लावारासा' की मेरे पास ३–४ प्रतिया है। एक तो मैने हाजिर कर ही दी थी ३ प्रतिया और है। ये प्रतिया मुझे विभिन्न व्यक्तियोसे उपलब्ध हुई है। इनमेंसे (१) एक प्रति ता मेरे प्रपितामहके पास ही थी जो कि ठिकाना खूडमें कामदार थे। (२) दूसरी कुमार श्री देवीसिंहजी, मडाथावालोंसे मिली है। (३) तीसरी मुकदानजी सिडायच ग्राम दुल्चासकी वस्ती,

बारैठ प्रभुदानजी कवीरसरसे मिली है। कहते हैं कि यह प्रति गोपालदानजीकी हस्तलिखित प्रतिसे अनुकृत हुई है जो सबसे अच्छी है और मेरी प्रतिसे अधिक मिलती है। इनके सिवाय, ठाकुर बहादुरसिंह बानूडा (खूड) के पास भी एक प्रति है जो पहली और तीसरी प्रतिसे मिलती है। इनके अतिरिक्त कल्याणदानजी मानदानजी कविया दीपपुरा, सीकर, ठाकुर किशनसिंहजी परस-रामपुरा (उदयपुरवाटी) एवं रावराजा सरदारसिंहजी, उनियाराके पास भी इसकी प्रतियां हैं।"

यद्यपि जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है प्रस्तुत आवृत्ति, केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर संपादित हुई है अतः उसमें पाठभेद, पंक्तिभेद, छन्दभेद आदि स्थान-स्थान पर दृष्टि-गोचर होंगे – तथापि इसके संपादक श्री खारैडजीने इसे यथाशक्य शुद्ध रूपमें तैयार करनेका यथेष्ट श्रम लिया है और मूलके नीचे कठिन एवं अल्पपरिचित शब्दोंका अर्थ आदि दे कर ग्रन्थके समझने समझानेका यथोचित प्रयत्न किया है। साथ ही में अच्छी विस्तृत भूमिका लिख कर ग्रन्थगत इति-हासका जो स्पष्ट दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया है उससे ग्रन्थके अध्ययनकी उपयोगिता अधिक सिद्ध होगी।

सर्वोदय साधना आश्रम
चंदेरिया (मेवाड)
दि. १०–४–५३.

जिनविजय मुनि

भूमिका

वीरभूमि राजस्थान अपनी अमर वीर सतानोकी वीरता, त्याग एव उदारताके लिये जगप्रसिद्ध है। इसके सपूतोकी गौरव-गाथाएँ गा कर अनेक महाकवि अपने यशको, अक्षुण्ण बना गये हैं। इन महाकवियोने अपनी रचनाएँ राजस्थानकी प्रसिद्ध काव्यभाषा डिंगलमें की हैं। कहना नही होगा कि यह काव्यभाषा वीर-रसके व्यजित करनेमें अन्य भाषाओसे अपना स्थान कुछ ऊँचा रखती है, किन्तु यह भी बात नही है कि इस भाषामें अन्य रस उत्तमतासे व्यजित ही नही हुए हो। इस भाषामें करुण, शृगार और शात रस भी बहुत सुदरतासे व्यजित किये गये है, जिनका अनूठापन चित्तको बरवस अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानकी वीर गाथाओको गाने वाले इन महाकवियोंमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो स्वय युद्धक्षेत्रमें अपनी वाणी और भुजाओ, दोनोका चमत्कार बताते थे, जिनके रचित ग्रथोका उपयोग इतिहासकारोने अपने इतिहासग्रथोमें किया है। इन महाकवियोका उद्देश्य अपने आश्रयदाताओका अत्युक्तिपूर्ण यशोगान ही नही था, वरन् ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करना भी था। ऐसे ही कवि शिरोमणियोमें कविया गोपाल भी थे, जिनके रचित 'कुमवशयशप्रकाश' अर्थात् 'लावारासा' में दोनो उद्देश्योका सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक, अर्थात् कूमवशयशप्रकाश (लावारासा) स्व पुरोहित हरिनारायणजी, बी ए, विद्याभूषणको किसी राजपूत सज्जनसे प्राप्त हुई थी, जिनका विचार इसे प्रकाशित करा देनेका था। श्रद्धेय पुरोहितजीने यह पुस्तक सम्पादन करनेको मुझे दी। सम्पादन और टिप्पणियोका काय सन् १९३७ ई के आसपास ही समाप्त हो चुका था। भूमिकामें देनेके लिये ऐतिहासिक-सामग्री एकत्रित की जा रही थी, इधर महासमर आरभ हो जानेसे कागज दुष्प्राप्य हो गया। सुतराम् इस पुस्तकका प्रकाशन-काय रुक गया। सवत् २००२ वि में पुरोहितजी साहबके निधनसे भूमिकामें जो कुछ उनके विचार लिखे जानेको थे, वह उन्हींके साथ चले गये। अब भूमिकाका भार भी मेरे ऊपर ही आ पडा। मेरे लिये यह काय बिलकुल नवीनतम ही रहा। पुरोहितजी भूमिकामें क्या-क्या देना चाहते थे, यह मुझे इस विषयमें उनसे हुई बातचीतसे मालूम हो गया था। उसी आधार पर चल कर, प्रस्तुत सामग्री एकत्रित कर, उपस्थित कर रहा हूँ। यद्यपि इसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियाँ पाठकोको प्राप्त होगी, तथापि मुझे आशा ही नही, विश्वास है कि विद्वान् पाठकगण मेरी अल्पज्ञता एव प्रथम प्रयासको ध्यानमें रख कर क्षमा करेंगे।

कविया गोपालजीका यह दूसरा ग्रथ प्रकाशित हो रहा है। इससे पूव इनका एक ग्रथ श्रद्धेय स्व पुरोहित श्री हरिनाराणजी द्वारा सपादित "शिखरवशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" (सीकरका इतिहास) नागरी प्रचारणी सभा, काशी, द्वारा सचालित "बालाबक्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" में प्रकाशित हो चुका है। उस पुस्तककी भूमिकामें कविका जो परिचय अन्वेषणके पश्चात् दिया है, उसका सार पाठकोंके लिये यहाँ दे दिया जाता है —

कविया गोपालका पूरा नाम गोपालदान-कविया था। यह अनेक डिंगल-पिंगल शास्त्रोंके ज्ञाता, अनन्य साहित्यसेवी एवं "वालावख्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" के संस्थापक बारहठ श्री वालावख्स पाल्हावतके मामा थे। इन्होंने उक्त दोनों ग्रंथोंके अतिरिक्त 'कृष्णविलास' एवं अनेक स्फुट गीत छंद बनाये थे। यह भी सुना जाता है कि उन्होंने 'काव्य प्रकाश भाषा' और 'सभा-प्रकाश भाषा' नामक दो ग्रंथ और बनाये थे। ये अभी अप्रकाशित हैं। कविने अपना परिचय 'कृष्णविलास' और 'लावारासा' में दिया है, वह क्रमशः इस प्रकार है–

कृष्णविलाससे–

कवि जन कवियो दिव्यकुल, चारण चंडीवाल।
'अलूभक्त'के, वंशमें, कहत नाम गोपाल॥
'अलू' नंद 'नरपाल' भय, 'नरु' नंद 'मघवान'।
'मेघराजके' सुत भये, 'गिरवर' नाम सुजान॥
'गिरवर' सुत 'माहू' भये, 'माहू' सुत 'हरिराम'।
पुत्र भये हरिरामके, 'विजयराम' गुण धाम॥
'विजयरामके' पुत्र फिर, 'दौलतराम' वखान।
सुत भये 'दौलतरामके', ताको नाम जु 'ज्ञान'॥
पुत्र भये फिर 'ज्ञानके' 'जलूदान' 'खुमान'।
'रामनाथ' 'स्योनाथ' ये, चार वंधु समजान॥
हम भये पुत्र 'खुमानके', नाम 'गुपाल' कहाय।
वरन्यूं ग्रंथ नवीन यह, नृपकी आज्ञा पाय॥

लावारासासे–

दांतोपुर दक्खिन दिसा, सीकर उत्तर कोन।
कूहर पच्छिम जानिये, पूर्व जीणको भोन॥
ताके मध्य उदैपुरो, वसत सुकविको ग्राम।
उन्नत 'पर्वतहर्ष'को, तहँ भैरवको धाम॥
कविजन कवियो दिव्यकुल, चारण चंडीवाल।
'अलूभक्तके' वंशमें, अह मम नाम गुपाल॥

इन उद्धरणोंके आधार पर चारण-कुलभूषण 'गोपालदान' कविया सीकर के 'उदयपुरा' अपर नाम 'चोखाका वास' ग्रामके निवासी थे। यह ग्राम सीकरसे ५ कोस दक्षिणकी तरफ हर्षके ऐतिहासिक पर्वतसे १ कोस और 'जीणमाता'के स्थानसे दो कोस है। इनके पिताका नाम 'खुमान' था। इनके तीन भाई और एक वहिन थी। इनके दो विवाह हुए थे और पाच पुत्र और २ पुत्रियां थी। इनकी जन्मतिथि ठीक ठीक तो ज्ञात नही हुई, किन्तु इनका स्वर्गवास भाद्रपद कृष्ण ४ सं.

१९४२ विक्रमाब्दमें, १५ दिनकी बीमारीके पश्चात्, अपने ग्राम उदयपुरामें, ७० वर्षकी अवस्थामें हुआ। इससे इनका जन्म संवत १८७२ वि निकलता है। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने काका कवि रामनाथसे और तिजारेमें–जो इलाका अलवरमें है–रह कर श्रीबलवतसिंह रईससे प्राप्त की थी। यह श्रीबलवतसिंह अलवरके रावराजा श्रीबख्तावरसिंहकी पासवान 'मूसी'के पुत्र थे।

'शिखरवंशोत्पत्ति पीढी वार्तिक'में कविने ग्रंथ निर्माणका समय सं १९२६ वि दिया है उस प्रकार इस ग्रंथ 'लावारासामें' नही दिया। यह ग्रंथ किस समय लिखा गया, इसका ठीक ठीक समय प्रमाणाभावमें कुछ बताया नही जा सकता है। किन्तु अनुमान ऐसा होता है कि लावारासाके पाचवे प्रसगमें जिस युद्धका कविने वर्णन किया है, उस युद्धका होना "तवारिखे महमूदाबाद याने टोकके" लेखक सैयद मुहम्मद असगरअली "आबरू"ने हिजरी सन् १२६५ में लिखा है। हिसाबसे यह हिजरी सन् संवत् १९१० वि में पडता है। इससे यह तो निश्चय हो जाता है कि स १९१० से पूर्व यह ग्रंथ नही बना। और यह भी निश्चित ही है कि इस समयके पाच दस वर्ष बाद भी इतना जल्दी यह ग्रंथ नही बना होगा। मेरा अनुमान यह कि इस ग्रंथका निर्माण "शिखर-वंशोत्पत्ति पीढी वार्तिक"के पश्चात् स १९२६ वि के पश्चात् होना चाहिए। एक ऐतिहासिक ग्रंथकी समाप्तिके बाद वैसा ही दूसरा ग्रंथ लिखनेकी प्रवृत्ति होना स्वभावत उचित प्रतीत होती है। 'लावारासा'में कविने ग्रंथ निर्माणका उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही प्रकट किया है–

सूरवीर रजपूत कुल, कवि चारण कुल जानि।
जो न बहत निज धमजुत, दहूँ कुल दीरघ हानि॥
आदि धम छिति छत्रकुल, पूरन पैज प्रतीत।
दान करन मारन मरन, रजपूतो यह रीत॥
सँग रहनो सपति विपति, सुख दुःख सहनो सत्य।
कीरत कहनो दान जुध, कुल चारण यह कत्य॥
यातें हम यह ग्रंथमें, परिश्रम कियो अपार।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार॥

इससे यह प्रकट है कि कविने अपना पूर्ण अधिकार समझ कर इस ग्रंथकी रचना की। इसका रचना-काल जैसा कि ऊपर अनुमान किया गया है–स १९२६ वि के पश्चात् स १९३० वि के आसपास होना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ 'लावा रासामें' कविने अपनी डिंगल भाषाको छोड कर, शताब्दियोंसे क्रमश विकसित होती आ रही उस राजस्थानी भाषाका प्रयोग किया है, जो उत्तर-भारतमें गुजरातसे अतरवेद (प्रयाग) तक प्रचलित थी। इसके साथ ही इस ग्रंथमें फारसी, अरबी, सस्कृत, डिंगल और राज-स्थानके देशी शब्दोंका कविने प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त मुसल्मानोंके मुखसे खडी बोली

और पंजाबीके पुटसे युक्त भाषाका कविने प्रयोग कराया है। ग्रंथमें वर्णन, प्रसंग और रसके अनुकल काव्यके रीतिग्रंथोंके अनुसार किया गया है। स्थान २ पर वर्णनको सजीव करनेके लिए उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षादिका प्रयोग उत्तम रीतिसे किया गया है। जैसे–

"जम्बूर रन्ध्र रन्ध्रके, गिरेन्द्रसे रसैं लवै"।
"हूर अपच्छर मूर वरि, बैठि विमाननि जात।
दम्पति मानहु तीज दिन्, डुलहर बैठि डुलात"॥
"चलत सोर सावात, मनहु डंडुर वृंद घन"।

और भी "कितेक हूर अच्छरी, विमान बैठि ऊतरी, कितेक जात व्योमको मनो अरठ्ठ की घरी"। एक स्थान पर उत्प्रेक्षाओंकी छटा देखिये–

आसुरके उर मध्य, दन्त अन्तक सम वसिय।
यानहु रन्ध्र मुसाल, खंभ ज्वाला गनि जैसिय।।
वसन वेधि कटाल कोर कुलटा दृग कढ्ढिय।
हड्ड वेधि जम हृढ्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय।।
ऊवरी जानि सम्पा जलद, चुवत श्रोन रंग जढ्ढियो।
मानहु कुमारि जावक सहित, करवातायन कढ्ढियो।।

इसके अतिरिक्त और भी कई स्थल है जिन्हें पाठकगण यथास्थान देखेंगे। सम्पूर्ण ग्रंथ वीररस-प्रधान है। अतः इस रसके अनुकूल ही छंदोका प्रयोग कर वर्णनीय दृश्यको साकार बना दिया है। वैसे इस ग्रंथमें दोहा, सोरठा, छप्पय, दुर्मिल, भुजंगप्रयात, मोतीदाम, भुजंगी, त्रोटक, निसाणी और पद्धरी छंदोंका प्रयोग बहुलतासे है, इसके साथ ही त्रिभंगी, वेक्खरी, नाराच, दीर्घनाराच, और वेताल छंदोंका भी कहीं-कहीं प्रयोग है। परन्तु इन छंदोंके प्रयोगमें कविने बड़ी दक्षता दिखाई है। किस वर्णन अथवा विषयमें कौन सा छंद उपयुक्त होगा, जिससे प्रसंग सजीव एवं साकार हो उठे, वैसी ही लय वाला छंद प्रयोग कर, कविने अपनी विशेषता प्रकट की है। यथास्थान पाठकगण इसका अनुभव करेंगे। इसके साथ ही पाठकगण यह भी अवलोकन करेंगे कि जिस विषयका कविने वर्णन आरंभ किया है, उसका शब्दों द्वारा अविकल चित्र सामने उपस्थित कर दिया है। इससे यह न समझा जावे कि वर्णनमें कविने कोई दोष ही नहीं आने दिया है। एकाध ऐसे भी स्थल है, जहाँ कवि वर्णन-प्रवाहमें बह भी गया है। यथा–

"चलावत अंकुगतें हुजदार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार"।
"भरि वत्थ वत्थ गलबाँहि करि, ऐम असुर हिन्दुव मिलत।
मानहु अनेक दिन बीछुरे, उर मिलाय बंधव मिलत"॥

चाहिए। किन्तु अमीरखाने इसकी बात नही मानी और किलेको घेर लिया। लावा-पतिने भी प्रत्युत्तर अच्छा दिया। इस प्रकार यह युद्ध छै मास तक चलता रहा। इसमे नरूकोका प्रसिद्ध वीर सहलसिंह मारा गया, मीरखाकी भी बहुत हानि हुई। इससे वह बहुत घबरा गया। अतम 'लेने-देने'की बातचीत आरम कर धोखेसे कवर हनुमतसिहको पकड कर और घेरा उठा कर चल दिया।

[३] तृतीय प्रसग – लदाना-युद्ध

इस प्रकार हनुमतसिंहको ले कर अमीरखा वहाँसे चला गया। यह बात खुमानसिंहको बहुत ही खटकी। वह लावासे लदाने गया, और वहाँ कँवर भारतसिहसे बातचीत की। भारतसिहने युद्धकी तैयारी की और माधवनग्रका (माधवराजपुरका) किला अपने अधीन कर, एक पत्र अमीरखाको लिखा कि या तो तुम कुवर हनुमतसिहको छोड दो या युद्धके लिये तैयार हो जाओ। पत्र पाने पर अमीरखा बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पत्रका प्रत्युत्तर दिया कि हमने लावाके युद्धमे दो लाख रुपये खच किये है, इसलिये हनुमानसिहको छुडानेके लिए दो लाख रुपये दो, नही तो हम भी युद्धके लिये तयार है। यह बात जब आसमानखाने सुनी तब उसने अमीरखाँसे अज की कि आपको ऐसा उत्तर देना उचित नहीं है। मुझे कल ही एक स्वप्न आया है कि उसने (भारतसिहने) आपकी स्त्रियो आदिको कद कर लिया है। इस पर बडा भयकर युद्ध हुआ है। इस युद्धमें हमारी बहुत बडी हानि हुई है। इसलिए पत्र सोच समझ कर भेजा जावे। इस तरह आसमानखाने बहुत समझाया किन्तु अमीरखाने एक भी बात नही सुनी। अतमे दूतको उत्तर दिया कि वह (भारतसिंह) हमारे पावामें आ कर गिरे और दड स्वरूप हमको रकम दे। यह समाचार दूतने आ कर भारत-सिहको कह। भारतसिहने क्रुद्ध हो कर अमीरखाकी बेगमाको जो उस समय 'टोरडीमें' थी पकड लिया। जब यह बात अमीरखाको ज्ञात हुई तो वह अत्यन्त ही क्रोधित हुआ और उसने माधवराजपुरे पर चढाई कर दी। यह युद्ध नौ महिने तक चलता रहा। इसमे अमीरखाकी बहुत हानि हुई। अतमें उसने एक दूत भारतसिहके पास भेजा और कहलाया कि आप हमारे कुटुम्बको छोड दीजिये, हम हनुमतसिहको छोड़ देंगे। भारतसिहने इसका उत्तर भेजा कि तुम हनुमतसिहको तो छोड ही दो और अपनी बेगमाको छुडवानेके लिए एक लाख रुपया हर्जानेका दो। यदि यह अस्वीकार हो तो युद्धके लिए तयार रहो। अतमें विवश हो कर अमीरखाको हनुमतसिहको छोडना पडा और एक लाख रुपये और अनेक वस्तुएँ भारतसिहको भेजी। इस प्रकार अपनी बेगमोको छुडा कर अमीरखा वहाँसे चला गया।

[४] – चतुर्थ प्रसग – उणियारा-युद्ध

यहाँसे अमीरखा अजमर जियारतको गया। वापिस आते समय उसन साभरको लूटा। इस समय तक राजस्थानमें अग्रेजोके पाँव बहुत कुछ जम गये थे। अग्रेजाने साभर पर

आ कर अमीरखाकों घेर लिया। फिर अग्रेजी सरकारने अमीरखाको टोंक आदि दिला कर उसे नवाव वना दिया। कुछ दिनो वाद अमीरखांका देहान्त हो गया। अब टोकका स्वामी उसका पुत्र वजीरउद्दौला हुआ। टोंककी सीमा पर उणियारा एक ठिकाणा है। वहाँके स्वामीका भी स्वर्गवास हो गया। उनके स्थान पर फतहसिह वहाँके स्वामी हुए। स्वर्गवासी उणियारे नरेशने वभोरका किला अपने दूसरे पुत्रको दिया था। उसने आपसी झगडेसे वह किला टोक वालोको दे दिया। जब यह किला टोंक वालोके हाथमे आ गया तब उणियारे वालोकी कुछ और जमीन भी अपने अधिकारमे कर ली। जब यह बात फतहसिंहको ज्ञात हुई तो उसने अपने सिपाही वहाँ भेजे। इस स्थान पर एक छोटा युद्ध हो गया जिसमे २० व्यक्ति मुसलमानोके मारे गये और वाकीके भाग गये। वजीरउद्दौलाको जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उसने एक सेना उणियारेकी ओर भेजी। उस सेनाने वहाँ जा कर बहुत उत्पात किया। फतहसिहने भी मुसलमानी सेनाको दवानेके लिये अपनी सेना भेजी। कई दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। अंतमे मुसलमानी सेनाके पाव उखड़ गये और वे युद्धस्थल छोड़ कर टोक भाग गये।

[५] पंचम प्रसंग – द्वितीय लावा-युद्ध

द्वितीय लावा-युद्धके समय लावाके स्वामी कर्णसिह थे। एक समय भावनगरका एक पहलवान टोंकमें आया। नवाव वजीरउद्दौलाने उसका वहुत सम्मान किया और उसे अपना 'उस्ताद' वना लिया। जब वह जाने लगा तो नवावने उसे बहुत द्रव्य आदि भेटमे दिये। जब वह पहलवान टोकसे विदा हो कर जा रहा था उस समय आगे आ कर मार्ग भूल गया और वह अपने साथियों सहित लावाकी ओर आ निकला। वह लावाके बाहर तालाबके किनारे महादेवके मदिरके पास ठहरा। प्रात.कालका समय था, लावाका कोई राजपूत सुभट महादेवकी पूजन करनेको आया था। उसने महादेवकी पूजन की, और गाल वजा कर स्तुति करने लगा। उसके कपोलोकी आवाज उस पहलवानने बाहरसे सुनी और सुनकर वह जूते पहिने हुए ही मंदिरमे प्रवेश करने लगा, उसको कई व्यक्तियोने अदर जानेसे रोका परन्तु वह उन्मत्त नही रुका। अदर जाने पर उस सुभटने भी पहलवानको निकालना चाहा उस पर दोनो ओरसे तरवारे निकल पडी। एक छोटा-सा युद्ध हो गया, सम्पूर्ण देवालय रक्तसे रग गया। वह पहलवान अपने साथियो सहित मारा गया। एक छोटा लडका बचा, वह भाग कर रोता-रोता नवावके पास आया और उसने सम्पूर्ण कथा सुनाई। इस पर नवाव वहुत क्रुद्ध हुआ और उसने लावा पर चढाई करनेकी आज्ञा दे दी। इस पर स्वर्गवासी नवावके चाचाने उसे वहुत समझाया किन्तु उसने एक भी नही सुनी और अपनी सेना ले कर लावा पर चढ़ाई कर दी। वनास नदीके किनारे अपने डेरे डाले। इस युद्धमे नवावके साथ जावरे भावनगर आदिकी भी सेना थी। लावाके स्वामी कर्णसिंहने भी प्रतिकारका प्रवंध किया। इस युद्धमें फतहसिह उणियारेसे, हनुमंतसिह श्योरासे, भारतसिंह लदानेसे और चोरू महर्याके

स्वामी भी लावाकी सहायतार्थ सम्मिलित हुए। कर्णसिंहके एक भाई अलवरमें थे। उनको भी सूचना भेजी गई। वह अपनी और अलवरकी सेना सहित आये। मारोठके मेडतिया राठौड सुजानसिंह भी इस युद्धमें अपने दलबल सहित सम्मिलित हुए। युद्ध आरभ हो गया। इधर पत्तासिंहने टोकको जा घेरा और वहा लूटमार करने लगा। यह समाचार नवाबको भी मिले। युद्ध भयकर होता जा रहा था। नवाबका सेनापति मसूरखा मारा गया। तब कुतब्बीखाने बडे कौशलसे हमला किया। इस हमलेको सुजानसिंहके दरोगा हाजरयाने बडी वीरतासे रोका और अतमें वह वीरगतिको प्राप्त हुआ। इधर कुतब्बीखा भी मारा गया। अब युद्धकी बागडोर स्वय नवाबने समाली। बहुत भयकर युद्ध हुआ। मुसलमानी सेनाके पाव उखड गये। वह छिन्नभिन्न हो कर इधर उधर भाग निकली। नरूकोकी सेनाने बहुत दूर तक उनका पीछा किया और छोडी हुई युद्ध-सामग्रीको अपने अधिकारमें करके वापिस लौट आई।

इसके अनन्तर कविने अपना परिचय तथा ग्रथनिर्माणका कारण बताया है।

ऊपर कुमवशयशप्रकाशके (लावारासा) के पाचो प्रसगोका जो कथासार दिया गया है, वह सत्य घटनाओके आधार पर, कवि द्वारा कल्पना शक्तिसे काव्यत्वके रूपमें, प्रस्तुत किया गया है। इनमे प्रथम प्रसगकी घटनाको छोड कर बाकी चारो प्रसगकी घटनायें कछावाहोकी नरूका शाखा और मुसलमान लुटेरोके मध्य हुए युद्धोके वर्णनकी है। इनका परिचय देनेसे पूर्व, तत्कालीन परिस्थितियो और वातावरणका सिंहावलोकन कर लेना उपयुक्त होगा।

अठारवी शताब्दीका अतिम चरण और उन्नीसवी शताब्दीका आदि चरण, सम्पूर्ण भारतीय जनताके लिए दुर्भाग्यपूर्ण, अशात एव निकृष्टतम था। देशमे चारो ओर लूटमार एव अराजकताका साम्राज्य था। बगालमे ईस्ट इडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अत्याचारोसे जनता पिसती जा रही थी। मध्यप्रदेश और राजस्थान प्रात मराठे, *पिंडारी और पठान

---

* पिंडारी लोग दक्षिणमें कर्णाटकके निवासी थे। घास काट कर बेचना इनका मुख्य आजीविका कार्य था। ये पहिले हिन्दु थे बादमें मुसलमान हो गये। ये गोमास नहीं खाते थे और दवताओंकी पूजा और व्रत उपवास भी करते थे। इनमें अनेक जातियोंके मिल जानेसे यह सकर जाति बन गई। कहते हैं कि ये लोग पिंड नामक शराबका अधिक सेवन करनेसे पिंडारी कहलाने लग गये। बादमें इन लोगोंने अपनी आजीविकाका साधन दस्युवृत्ति बना लिया था। औरगजेबके शासनकालमें इन पिंडारी दस्युओंका नेता पुनप्पा बहुत प्रसिद्ध हुआ है। मुगल सेनाओंसे इसके कई युद्ध हुए थे। जब मुगल दक्षिणमें अपना आधिपत्य फैला रहे थे उस समय ये पिंडारी महाराष्ट्र सेनामें भरती हो गये थे। धीरे धीरे य लोग भयकर अत्याचारी और दारुण प्रजापीडक हो गये थे। पानीपतकी तीसरी लडाइमें चिंगली और हुल नामक दो सरदार पद्रह हजार सवारोंके साथ उपस्थित थे। पेशवा बाजीराव प्रथमने जब मालवा पर आक्रमण किया था उस समय गाजीउद्दीन पिंडारीने पेशवाकी सहायता की थी। इसी समयसे ये लोग मालवामें बस गये थे। मालवामें इनके बसनेके पश्चात् तुकोजीराव होल्कर और महादजी सिंधियाने इन लोगोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया था। तभीमे इनके दल होल्करशाही और सेंधिया शाहीके नामसे विख्यात हो गये थे। तलवार और भाला इनके मुख्य अस्त्र थे। पद्रह व्यक्तियोंके दलके पीछे एक बदूक भी इन लोगोंके पास थी। घोडेकी सवारीमें ये लोग बहुत ही तेज थे। ये

लुटेरो द्वारा आये दिन रोंदे जा रहे थे। मुगल सम्राटके हाथ नाम मात्रकी सत्ता थी। वह इनका कुछ भी प्रतिकार करनेमे असमर्थ था। राजस्थानके नरेश भी बलहीन हो रहे थे। ये लोग इन लुटेरोको इनके उपद्रवोसे बचनेके लिये अच्छी रकम देते थे, किन्तु ये लोभी लुटेरे अधिक प्राप्तिके लिए अपने उपद्रव बद ही नही करते थे। इन दस्युओंमे पठानो की सख्या अधिक थी। इनका प्रमुख अमीरखां अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान एव शक्तिशाली था। उसने राजस्थान विशेष कर ढूंढाड़में अपनी कार्यवाहियाँ अधिक दिखलाई थीं, जिससे धन-जनकी इतनी अधिक हानि हुई थी कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके साथ इतने अधिक भयकर और बर्बरतापूर्ण युद्ध हुए थे, जिनकी कथा सुनने मात्रसे कायरोके जी दहल उठते है और वीरोके भुजदड फडक उठते है। उस समयमें बहुत ही कम मनुष्य ऐसे रहे होगे, जो इन युद्धोमें सम्मिलित न हुए हो और इन युद्धोमें इतने अधिक व्यक्ति काममें आये थे कि जिनका स्मरण आज भी जयपुरमें एक कहावत द्वारा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्तिकी खोज करता हुआ किसीसे प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है कि वह तो मीरखाकी लडाईमे मारा गया। अस्तु। इस ग्रथ अर्थात् 'लावारासा' में अमीरखा और उसके पुत्रसे हुए युद्धका चार प्रसगोमें वर्णन है। यह अमीरखा ढूंढाड में अमीरखा पीडारीके नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि यह पिडारी नही था, पिडारी दस्युओंकी प्रसिद्धिसे पिडारियो जैसे कार्य करनेसे (लूटमार करनेसे) यह इस नामसे विख्यात हो गया था। यह पठान था जैसा कि निम्नाकित अवतरणोंसे प्रकट होगा—

इतने शीघ्रगामी थे कि एक एक दिनमें चालीस-पचास मीलका सफर कर जाते थे। यही कारण था कि इनका पीछा नहीं किया जा सकता था। इन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। ये लूटके द्रव्यसे सतोष कर लेते थे। इन दिनों करीमखा, वासिल मुहम्मद और चीतू पिंडारियोंके मुख्य सरदार थे। सेंधिया और होल्करने करीम और चीतूको नर्मदाके किनारे जागीरे दे रखी थी। अतः ये नवाव कहलाते थे। इन लोगोंने दस्युवृत्तिमें अत्यधिक धन और शक्ति सचय कर ली थी। इनके इस अभ्युदयसे सेंधिया भी भयभीत हो गया था। अंतमें कुछ लोभ दे कर इन्हे कैद कर लिया था। चीतूने ७ लाख रुपया दे कर ४ वर्ष पश्चात् मुक्ति प्राप्त की। मुक्ति लाभ कर उसके हृदयमें प्रतिहिंसानल धधक उठी। फिरसे सेना एकत्रित कर सेंधियाके अधिकृत प्रदेशोंमें घोर अत्याचार करने आरभ कर दिये। अतमें सेंधिया दौलतरावने भूपालके पश्चिम प्रातवर्त्ति प्रदेशमें और भी ५ जगीरे दे कर उससे अपना पिंड छुड़ाया। करीमको उसकी माताने सेंधियाको छै लाख रुपया दे कर छुड़ाया। इसने भी अपने दलमें सम्मिलित होते ही सेंधियासे बदला लेना आरभ किया। किन्तु यह सेंधियाका अच्छी तरह सामना न कर सका और भाग कर अमीरखाकी शरणमे आ गया। इन पिंडारियोंके दारुण अत्याचारोंसे मालवा, राजस्थान, दक्षिण और ब्रिटिश शासनाधिकृत प्रातवासी अत्यन्त त्रस्त हो गये थे। अत. अतमें लार्ड हेस्टिंगजने इन दस्युओंकी ३४००० सेनाका दमन करनेके लिए एक लाख २० हजार सेना एकत्रित की। पहिले नई सधियोके अनुसार, मराठोंकी शक्ति अच्छी तरह जकडी गयी। फिर पिंडारियों पर चारों ओरसे आक्रमण आरभ किये गये। इतनी बडी सेनाका सामना करना हंसी खेल नहीं था। करीमखाने हथियार डाल दिये, उसको गोरखपुरके जिलेमें एक जागीर दे दी गई। वासिल मुहम्मदने निराश हो कर आत्महत्या कर ली। चीतू कुछ दिनों तक लडता रहा अतमे वह जंगलमें भाग गया, जहा उसको एक चीतेने खा डाला। इनके दल छिन्नभिन्न कर दिये गये। इस तरह सन् १८१८ ई० में पिंडारियोंका अंत हो गया।

कहते ह कि खुदावन्द करीमने व्यक्तिया पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उमके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफगानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आमफ नामक। आसफ राज्यका मन्त्री नियुक्त हुआ और अफगानिया राज्यका सेनापति। इसी अफगानियाकी सतानें अफगान नामसे प्रसिद्ध हुइ और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफगानियाकी सतानोमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति वहुत ख्यात हुआ जिसने 'पठान' की उपाधि धारण की। तबसे ये अफगान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोमेंमे कालेखा बुनरवाल सालारजईका पुत्र ताविलखा उर्फ तालेखा जोहड-बनीर देहलीके मुहमदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढाई की तो तालेखा भी दूसरे अफगानोके साथ साथ नवाबका साथ छोड कर तरीनासरायके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखा भी यही पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखाको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूदेखाने फिर अपने पास नौकर रख लिया, ददेखाके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखान नौकरी छोड दी और कुछ जमीन ले कर खेतीवाडीका काय आरभ कर दिया। सन ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६८ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखा रखा गया। अमीरखा बाल्यावस्थासे ही होनहार वीर मालूम होता था। छ सात वर्ष खेल कूदमे व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसद करता था। वह स्वय बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वजीर, किसीको सेनापति, किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीडा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पसे अपने माता पितासे प्राप्त होते थे, इस खेलमे अपने साथियोंमें बाट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफा डाट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकाक्षी बालकके हृदय पर इन सबका कुछ भी असर नही होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तसा बना रहा। एक दिन एक पहुचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकाक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकाक्षाका दूध पियेगा? दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठो से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नही थी। जसे ही उसने प्याला अपने होठोंमें लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सकडो गालिया दीं। उस महात्माने उसकी गालियाकी ओर ध्यान न दे कर उससे कहा "अरे मूर्ख, तेरी आशाओ और महत्वाकाक्षाओका प्याला तेरे हाथमें था जिसका तूने नासमझीसे फेंक दिया, जा तेरे भाग्यमें यही था।" अमीर उस समय तो कुछ समझ नही सका किन्तु बडे होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहा हुआ।

और उसके कमरवंदसे एक छोटी कटार निकाल कर कहा–"मैं इस समय एकाकी हूँ, यदि मेरे मार डालनेमें तुम्हारी भलाई होती हो तो यह छुरी लो और मुझे मार डालो, जरा भी विलब न करो।" इस पर होल्कर लज्जित हो कर कहने लगा कि ऐसी कोई भी बात नही होगी, जिससे तुम्हे कष्ट हो। इसके पश्चात कभी भी ऐसी कोई घटना नही हुई। तवसे यह वरावर मिल कर कार्य (दस्युता) करते रहे।

उसी समयमे महादजी सिंधिया पूनासे उज्जैन आया था। होल्करकी सेनाने इसे लूट लिया। इस पर महादजी सिंधिया चितौडमे लखवाके पास चला गया। होल्कर और लखवामे शाहजहांपुरके किलेमे युद्ध हुआ जिसमें लखवा हार कर भाग गया। उधर दौलतराव सिंधियाका अंग्रेज सेनापति कुलूससाहव दक्षिणसे सिरोंजमे आया। सिरोज अमीरखा को होल्करकी ओरसे जागीरमें मिला हुआ था। अतः वहॉं अमीरखाकी ओरसे एक प्रवंधक अधिकारी युसुफखा रहता था। उसने अमीरको कुलूस साहवके आनेकी सूचना भेजी। अमीरखाने सिरोज पहुँच कर उसे वहॉंसे भगाया। फिर नागपुरके राजाको ३॥ घंटेके युद्धके पश्चात् देवरीके निकट परास्त किया। इधर फिर दौलतराव सिंधिया, वल्वत राव वोकडा और चौरस साहव जिसके साथ वीस हजार पिंडारी थे, उज्जैन आये। होल्करके पास इस समय सेना कम थी, अतः वह केसूरी चला गया और वहा उसने उन दो सेनाओको लूट लिया जो वलंवतरावकी सहायताके लिए दक्षिणसे आई थी। फिर अमीरखा को चौरस साहव आदिके साथ युद्ध करनेको वुलाया। होल्कर और अमीरखाने मिल कर उन्हे भागनेके लिए विवश कर दिया। इसके पश्चात् दोनोने मिल कर स्थान स्थान पर वड़ी लूटमार की। कुछ दिन साथ रह कर फिर अलग अलग हो कर काम करने लगे। सन् १८०५ ई. मे जसवंतराव होल्कर और अग्रेजोके वीच युद्ध हुआ। यह युद्ध डीगमें हुआ था, जिसमे होल्करको परास्त होना पडा और भरतपुरमे शरण लेनी पडी। लार्ड लेकने होल्करका पीछा किया और भरतपुरके राजा रणजीतसिंहको कहलवाया कि जसवतराव को उन्हे सौप दे। किन्तु राजा रणजीतसिहने जसवतरावको देनेके लिए इनकार कर दिया इस पर भरतपुरका किला घेर लिया गया। इस समय अमीरखा भी होल्करकी सहायताके लिए आ गया था। उसने अंग्रेजोके सिपाहियोको हैरान करना आरंभ किया। उसका विचार था कि जो सहायता और रसद कर्नल मेरीके साथ अग्रेजोके लिए आती है उसे भरतपुर न पहुँचने दी जावे, किन्तु वह सफल नही हो सका। इस पर राजा रणजीतसिहने इन्हे सलाह दी कि एक व्यक्ति तो यहाँ भरतपुरमे रहे और दूसरा शत्रुके देशमे जा कर लूटमार करे। जसवंतरावका जानेका साहस नही हुआ क्यो कि वह फरुखावाद और डीगके युद्धमें हार चुका था। अत. अमीरखा वहॉंसे रुहेलखडकी ओर चला। जैसे ही अमीरखा रवाना हो कर चला, जनरल स्मिथने अपने सवारो और तोपखानेके साथ उसका पीछा किया। अमीरखां आगरा, फरुखावाद आदिको लूटता हुआ मुरादावाद पहुँचा। वहॉं अंग्रेज कुछ सिपाहियोके

साथ पडे हुए थे। दो दिन तक वे उनसे लडते रहे। इतने हीमे जनरल स्मिथ भी जा पहुँचा। जनरल स्मिथके पहुँचनेसे अमीरखा अपनी सेनाको ले कर पहाडोकी ओर भागा, जनरल भी उसके पीछे पीछे चला। अफजलगढके पास दोनोका युद्ध हुआ किन्तु अमीरखा ठहर न सका। युद्धस्थल छोड कर रुहेलखडके गावोको लूटता हुआ गगापार हो गया। इस समय इसके साथ केवल १०० सिपाही रह गये थे। इसलिए फिर इसने सेना एकत्रित की और जसवतरावके पास चला आया। इधर लार्ड लेकने जसवतरावको सधि कर लेनेके लिए विवश कर दिया। जब सधि होने लगी तो लार्ड लेकने जसवतरावसे यह कहा कि इस सधिपत्र पर अमीरखाके भी हस्ताक्षर होने चाहिए। अमीरखाको यह स्वीकार नही था। इस पर जसवतरावने अमीरखाकी बहुत खुशामद की और कहा कि मुझे इस समय एक करोड बीस लाख मिला है, जिसमेंसे म आधा दे दूगा। इस समय ३० लाखके गाव देता हूँ, बाकी दक्षिणा और गाव प्राप्त कर दे दूगा। इस पर बडी कठिनाइसे अमीर राजी हुआ। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर जसवतरावसे गावोका लेखा मगवा लिया। जसवतरावने नवाबकी इच्छानुसार गवनर जनरलसे टोक, अलीगढ, मालवेसे सिरोंज और पडावा, मवाडसे नीमाहडा, खीचीवाडेसे छबडा नवाबको खर्चमें लिख दिये।

अमीरखाको अब रहनेके लिए, अच्छा स्थान मिल चुका था और उसकी अवस्था भी बढ चुकी थी। अत उसने मुहम्मद अय्याज खाकी पुत्रीसे सन १२२१ हिजरी तदनुसार सन् १८०६ ई में अजमेरमें विवाह कर लिया। इस स्त्रीसे हिजरी १२२२ (सन् १८०६) में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम वजीर मुहम्मद रखा गया। इस समय तक इसका (अमीरखाका) दल बहुत बढ गया था। उसका आतक चारो ओर छाया हुआ था। कुछ दिन बाद अमीरखाको जयपुरके राजा सवाई जगतसिहने जोधपुरके राजा मानसिहसे युद्ध करने के लिए अपनी सहायताथ बुला लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि उदयपुरके राणा भीमसिहकी कन्या कृष्णा कुमारी अत्यन्त सुदर थी। उसका वाग्दान (सगाई) राणाने जोधपुर नरेश भीमसिहके साथ किया था। जब भीमसिहका निसतान स्वगवास हो गया और जोधपुरकी गद्दी पर मानसिह बठे तो राणाने कृष्णा कुमारीका विवाह उसके साथ करना चाहा। इस पर मानसिहने उत्तर दिया कि कृष्णा कुमारीकी सगाई उसके पिता भीमसिहके साथ हुई थी, अत माताके साथ म विवाह नही कर सकता। इसलिए राणाने जयपुरके महाराज जगतसिहसे सबध करना चाहा। महाराज जगतसिहने जोधपुर नरेश महाराज मानसिहसे पूछ कर और उनके इनकार होने पर विवाह सबध स्वीकार कर लिया।

तत्कालीन समयमें पोकरणके ठाकुर सवाईसिह बहुत ही प्रभावशाली एव विख्यात व्यक्ति थे जिनके पितामह देवसिहको महाराजा भीमसिहने मरवा दिया था। देवसिहके

दो पुत्र थे। सबलसिंह और श्यामसिंह। सबलसिंहके पुत्र सवाईसिंह पोकरणके स्वामी हुए और श्यामसिंहने जयपुरमे गीजगढकी जागीर प्राप्त की। महाराज मानसिंह जब जोधपुरकी गद्दी पर बैठे, उस समय सवाईसिंह अपनी कन्याका विवाह जयपुरके महाराज जगतसिंहसे करनेकी तैयारी जयपुरमे कर रहे थे। महाराज मानसिंहने सवाईसिंहसे कहलाया कि आजतक राठौडों ने जयपुरवालोंको कभी डोला नहीं दिया है। आप डोला दे रहे हो इससे राठौड़ोका वहुत ही अपयश होगा। सवाईसिंहने, जो मानसिंहसे पहिलेसे ही इस वात पर खिजा हुआ था कि उसकी विना सम्मतिके ही जोधपुरकी गद्दी पर बैठ गया था, उत्तर भिजवाया कि मेरे काका जयपुरमे ही रहते हैं, वहींसे यह विवाह होगा परन्तु यह कहा तक उचित है कि जोधपुरकी मांगको जयपुर वाले व्याह ले जावें। मानसिंहको यह वात वहुत चुभी और उसने उदयपुरके राणाको विवाहके लिए कहलाकर वह स्वयं विवाहकी तैयारी करने लगा। इधर जयपुरमें भी विवाहकी तैयारी हो रही थी। उदयपुरके राणा जयपुरसे संवंध स्थापित कर देनेके कारण कृष्णा कुमारीका विवाह जयपुर नरेशसे ही करना चाहते थे। इस कारण इस युद्धका श्रीगणेश हो गया।

इधर पोकरण ठा. सवाईसिंहने प्रचारित किया कि स्वर्गीय महाराज भीमसिंहकी राणीसे धौकलसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ है जो खेतडीमे पोषण पा रहा है। वही जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी है। साथ ही जयपुर नरेश जगतसिंहको कृष्णाकुमारीसे विवाह करनेके लिए उत्साहित किया और आश्वासन दिया कि समय पडने पर हम सब राठौड आपके साथ हैं। हम केवल यही चाहते है कि भीमसिंहका पुत्र धौकलसिंह ही जोधपुरका स्वामी वने।

ऊपर लिखा जा चुका है कि राजस्थानमें अमीरखां और उसका दल अपने कार्य कलापोंके कारण भयंकरतामें अति प्रसिद्ध हो चुका था। यह दल पैसेके लिए सब कुछ करनेके लिए हर समय तैयार रहता था। जो अधिक रकम देता था उसीकी ओर हो जाता था। इस कारण जयपुर और जोधपुर नरेश दोनोने अच्छी रकम देनेकी प्रतिज्ञा कर अमीरखाके दलसे सहायता प्राप्त करनी चाही। इसमें जगतसिंहको सफलता मिल गई। और मानसिंहको किसी भी ओरसे सहायता प्राप्त न हो सकी। जगतसिंहके साथ इस युद्धमें अमीरखाके अतिरिक्त हैदरावादके मीरमकदून वाजिदखा, खुदावक्स, मीर शदुद्दीन, मीर मरदान अली, नवाव खाजहाँ, वीकानेर नरेश सुरतसिंह और पोकरणके ठा. सवाईसिंह सम्मिलित हुए थे। परवतसर पर जहाँ जयपुर और जोधपुरकी सीमाएँ मिलती है, ये लोग एकत्रित हुए। उधरसे महाराज मानसिंह इन्हे रोकनेके लिये साठ हजार सेना सहित आगे वढ़े। दोनो सेनाओमें भयंकर काटमार हुई, और अंतमें सवाईसिंहके उद्योगसे, राठौड़ी सेना मानसिंहका साथ छोड़ कर, जगतसिंहकी ओर मिल गई। इससे मानसिंह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। जैसे तैसे करके वचे हुए व्यक्तियोको साथ ले जोधपुरकी ओर रवाना हुआ। महाराज जगतसिंह अब

विवाहार्थ उदयपुर जाना चाहते थे, किन्तु सवाईसिंहके अनुरोधसे पहिले मानसिंहसे निबट लेना उचित समझ कर, जोधपुरकी ओर बढ़े। मेडताके पास फिर राठौड़ी सेनासे मुठभेड हुई। और वहा विजय प्राप्त कर कुछ जमीन बीकानेर नरेशको दी। अब मानसिंहके पास केवल जोधपुर और जालोर ही रह गये थे। महाराज जगतसिंहने पीपाड पहुँचकर मारवाडकी २२ तोपें और प्राप्त की। मडोवर और जोधपुरके निकट सूर्यास्तके समय महाराज जगतसिंह धौंकलसिंहके डेरेमें गये। वहाँ धौकलसिंहने महाराजका अच्छा आदर-सत्कार किया। वहा दरबार हुआ, जिसमे बीकानेरके सुरतसिंह भी थे। धौंकलसिंहको जोधपुरका स्वामी घोषित कर आगे बढ़े जहाँ सिंघी रामचन्द्र बक्सी और अमीरखांकी सेनाएँ इनसे आ कर मिल गई। उसी दिन ये लोग सायकाल जोधपुर नगर अधिकृत करनेवाले थे। अत इन्होने विजय घोषित कर दी और धौंकलसिंहके नामसे १६ अप्रैल सन् १८०७ ईको दुहाई फेर दी और जोधपुर आ कर घेरा डाल दिया।

अब तो जोधपुर नरेश बडी कठिनाईमें पडे। एक बार फिर गुलामखा अफगानके द्वारा अमीरखासे सहायताकी याचना की, किन्तु अमीर सहायता देनेसे साफ इनकार कर गया। घेरा कई दिन तक चलता रहा। राठौडोने बड़ी वीरता पूवक सामना किया। अतमें तोपोंके गोलोंसे किलेका कुछ हिस्सा गिरा दिया गया। उधर किलेकी खाद्य-सामग्री दिन दिन कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें महाराज मानसिंहने ठा सवाईसिंहको कहलवाया कि, 'राठौडोंकी इज्जत अब आपके हाथ है। धौंकलसिंह अततोगत्वा राठौड ही है। अत मारवाडके दो हिस्से करके एक हिस्सा धौकलसिंहको दिया जावे, जिसकी राजधानी नागोर रहे, दूसरा अर्द्ध भाग मेरे लिये रहे जिसकी राजधानी जोधपुर रहे।" इस पर सवाईसिंहने प्रत्युत्तर दिया कि आप किला परित्याग कर दीजिए और अपने लिए एक अच्छी जागीर ले लीजिए। इस पर मानसिंहने "साका" करके वीराकी तरह युद्धक्षेत्रमें प्राणोत्सर्ग करनेका विचार किया। इसी समय इन्द्रराज सिंघी और भडारी गगारामने जो किसी कारणवश किलेमें कैद थे—मानसिंहको कहा कि अब यह समय हमारी स्वामिभक्तिका है, आप हमारा विश्वास कीजिए और हमें छोड दीजिये। हम आपको दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते है? अतमें ये दोनो कर्मचारी छोड दिये गये। इन्होने किलेसे बाहर निकल कर मरहठा सरदारो द्वारा अमीरखासे कहलवाया कि यदि आप हमारी सहायता करो तो हम आपको ८ लाख रुपया सालाना और आपकी सम्पूर्ण सेनाका खर्चा देंगे तथा आपको एक अच्छी जागीर भी देंगे। इस पर अमीर सिंघी इन्द्रराजसे बातचीत करनेके लिए घेरेसे हट गया और मरहठा सरदारोंसे मिल कर, मारवाडको लूटता हुआ अरक्षित जयपुर पर आक्रमण कर दिया।

जब यह बात महाराज जगतसिंहको ज्ञात हुई तो प्रथम तो वह बहुत घबडाया, फिर तुरन्त ही बक्सी शिवलालको अमीरके विरुद्ध भेज दिया। शिवलालने आगे बढ कर अमीरकी

सेनाको फागीके पास परास्त किया। तत्पश्चात् अपनी सेनाको छोड कर किसी कार्यवश जयपुर चला आया। जब अमीरखाको अपनी हारका हाल ज्ञात हुआ तो उसने मुहम्मदखा और राजा बहादुरको जो ईशरदाको घेरे हुए थे, बुला लिया और बक्सी शिवलालकी सेनाकी ओर बढे। रास्तेमें इन दोनो सेनाओकी टक्कर हुई। कई स्थानो पर नवाबकी सेना परास्त हुई, किन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण कछवाही सेनाको सांगानेर तक पीछे हटना पड़ा और नवाबकी सेनाने उसका पीछा किया। यहासे जयपुर शहर सिर्फ ५ कोस दूरी पर था। शहर जयपुर पर चढाई करना नवाबके लिए सरल नही था। अत. नवाब अमीरखा सेंधिया और राठौडोके साथ मारवाड़की ओर चला।

इधर अभी तक अम्बाजी इंगलिया और स. जगतसिंह जोधपुर पर घेरा डाले हुए थे, जब कि अन्य सरदार अमीरखाकी तरह घेरा छोड कर जा चुके थे। अत. जगतसिंहने भी घेरा उठा लेनेका विचार कर धौकलसिह और सवाईसिहको नागौर ठहरनेके लिए कहा। और उनकी रक्षार्थ अन्य लोगोको वहा छोड़ा। साथ ही कुछ सेना शेखावाटीमें भी सहायतार्थ छोड़ी और आप स्वयं जयपुरकी ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह घेरा उठाया गया। इससे मानसिह बड़ा ही भाग्यशाली प्रमाणित हुआ जो विना किसी उद्योगके घेरेसे निकल गया।

अब रही कृष्णा कुमारीके विवाहकी बात, उसका हाल यह है कि अमीरखाने पहिले जगतसिह और सवाईसिहसे सच्ची मित्रता प्रदर्शित की, तत्पश्चात् पैसेके लोभसे इनका साथ परित्याग कर दिया और मानसिंहसे जा मिला। लेकिन, उसके साथ भी अपनी कुटिलताका परिचय दिया। उसने सवाईसिह, इन्द्रराज सिंघी और महाराजा मानसिहके गुरु देवनाथकी हत्या की, जिससे मानसिहको अत्यन्त दु.ख हुआ। अतमें उसने यह सोचा कि कृष्णा कुमारी रहेगी तो फिर झगडा होना संभव है, इसे समाप्त कर दिया जाना ही उचित है। अत. उसने उदयपुर जा कर राणा भीमसिहको कृष्णा कुमारीकी हत्या कर देनेके लिये विवश कर दिया। कृष्णा कुमारीके तीन बार हलाहल पी लेने के पश्चात् सदाके लिए झगडेकी सम्भवना जाती रही। सवाईसिहकी हत्याके पश्चात् धौंकलसिह भाग कर बीकानेरकी ओर चला गया। इस प्रकार इस युद्धका अंत हुआ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अमीरका दल बहुत बढ़ गया था। उसकी सेनामें कई रिसालदार थे, जो स्थान स्थान पर रियासतो और ठिकाणे वालोसे अपनी सेनाका व्यय बलात् लेते थे और समय असमय पर जनताको लूटते रहते थे। इस पर भी दलका व्यय नहीं चलता तो वे मिल कर अमीरखांको तग करते थे। एक समय जोधपुर वाले युद्धके पश्चात् खुदाबक्स, मुहम्मद सईदखा, कुतुबुद्दीनखा, फैजुल्लाखा, मुनीरखां, नजीबखा, खान मुहम्मद दाराशाहखा, कमरुद्दीनखां, और अन्य रिसालदारोने मुहम्मदखाके साथ षड़यन्त्र करके अपने वेतनके लिये विद्रोह उत्पन्न किया। उस समय अमीरखा अपने परिवारके साथ डुमकोलाके

किलेमें था, जो उसने कुछ दिन पूव हस्तगत किया था। इन विद्रोहियोने वहाँ जा कर घरना दिया। अमीरखाने राजा बहादुरलालसिंहको, जो उदयपुरमें था, अपनी सेना सहित इन उपद्रवियोको शात करनेके लिये बुलाया, किन्तु इसने उत्तर भिजवाया कि आजकल म महाराणाकी सेवामें हूँ, विना उनकी आज्ञाके नही आ सकता। अत अमीरखाने महाराणाको लिख कर उसे बुला लिया। वह वहासे सीधा जयपुरम नवाव मुस्तारुद्दौलाके पास आया, उसने फिरसे उमकी (नवावकी) अध्यक्षतामें सेनाकी बागडोर सभाली।

जब अमीरखाको ज्ञात हुआ कि उसकी रक्षक सेना जमशेदखा, मुहम्मद सईदखा आदिके साथ इन उपद्रवकारियोसे अलग है और अभी तक शात है तो उसने सोचा कि इनके सामने झुकनेके स्थान पर इस सेनाके सामने प्रकट होना अति उत्तम होगा। इस विचारके अनुसार वह किलेसे बाहर आया और सबको पृथक पृथक बुला कर कहा कि यदि आप यह समझते हो कि मने अपने लिए धन एकत्रित करके छिपा रखा है तो आप तलाश करके कोई भी वस्तु अपने अधिकारमें कर सक्ते हो। किन्तु इन अफगानोने उसका जरा भी विश्वास नही किया और उसे अपने अधिकारमें पा कर उसके साथ अत्यन्त कुत्सित व्यवहार करने लगे। अमीरखाने यह देख कर अपने पुत्र वजीरुद्दौलाके साथ अपने परिवारको द्वाररक्षकोकी अधीनतामें टाक भेजा दिया और आप स्वय उन लोगोके साथ किशनगढकी सीमामें आया। वहा खूब लूटमार की और ७० हजार रुपया सेना खचका राजासे प्राप्त किया। इसी प्रकार शाहपुरा, आदिसे सेनाव्यय प्राप्त कर तत्पश्चात् बूदीकी सीमामें प्रवेश किया, फिर समदी, डूगर और निनवनमें आया। इस स्थान पर कनल मोहनसिंह और मुहम्मद अय्याजखाके रिसालेसे मिला, जो तत्काल ही बूदीसे आये थे। अमीरखाने बूदीसे भी सेना-व्यय मागा और लेनेके बाद जयपुर राज्यकी सीमामें प्रवेश किया। टोरडी और चादसेनके निकट आकर उणियारा और ईसरदासे भी उसी प्रकार अपनी माग रखी तथा निवाईके पास आ कर डेरा डाला। अब उसका विचार जयपुरके साथ द्रव्यके लिए आवश्यक समझौता करनेका हुआ। इसके लिए मुस्तारुद्दौलाको सेना सहित बुलाया था जो उस समय हिण्डौनम था। उसको पत्र लिख-कर आप मोहनसिंहकी सेना सहित चाकसूमें आया। इस स्थान पर अमीरखाने, मेघसिंह आदि जयपुरके अन्य अधिकारियोसे मिल कर त किया कि १२ लाख रुपया उसको (अमीरको) हीराचद सेठक द्वारा मिल जाय जो मुस्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ है। अमीरखा यह समझौता कर किशनगढकी ओर बढा। उधर यह समाचार मुस्तारुद्दौलाने सुने कि जयपुरके साथ इस प्रकार बातचीत निश्चित हो चुकी है तो वह वापिस लौट गया। जयपुरके भूतपूव दीवान राव चतुर्भुजके बहकानेसे शेखावाटीमें नवलगढ और खेतडीके विरुद्ध गया। इसी बीचमें महाराज जगतसिंहने किसी कारणवश मेघसिंहको दीवानपदसे हटा दिया। उसी समय अमीरखाने अपने पुत्रका सपरिवार टाक छोड कर शेरगढ चले जानेकी आज्ञा भजी और स्वय किशनगढसे रवाना हो कर तुजरमें आ कर बाडीके निकट डेरे डाले। इधर मुस्तारुद्दौलाने नवलगढ और खेतडी तथा शेखावाटीके अन्य ठिकाणोसे सेना-व्यय प्राप्त कर अमीरके

पास आ कर पडाव किया। अमीरखा अभी तक अफगानोंकी दुखदाई नीतिके कारण उनके घेरेमें ही था। इस प्रकार आठ मास व्यतीत हो चुके थे। अमीरखाने, दस लाखकी हुडी जो अभी जोधपुरसे प्राप्त हुई थी, उन्हे दे कर अपना पीछा छुडाया और खुशीमें अपने डेरेमे आ कर सलामीकी तोपें दगवाई। जयपुरमे जव इन तोपोकी आवाजकी सूचना महाराज जगतसिंहको मिली तो वे बहुत चकित हुए। प्रातःकाल जव सर्व घटना ज्ञात हुई तव महाराजने वोहरा दीनारामको अमीरखाके पास आवश्यक समझौतेके लिए भेजा। अमीरखा कुछ समय तक वही ठहरा रहा। अपने सेना व्ययको मिलता न देख कर अपनी सम्पूर्ण सेना सहित सांगानेर आया। सागानेरके पास जोधपुरकी सेना थी उस पर आक्रमण कर भगा दिया। अब वह वोहरा दीनारामके वागके (आजका गाधी नगरके) निकट, आ गया। जब यह समाचार जयपुरके अधिकारियोने सुने तो वे वहुत घबराये और उन्होंने दस लाख रुपया वोहरा दीनारामके द्वारा, जो तोजारसे अमीरखाके साथ था, देना स्वीकार किया। जिसमेंसे ६ लाख रुपया तो अमीरखाने मुख्तारुद्दौलाकी सेनाका वंधा हुआ खर्चा रखा, वाकी रुपया जमशेदखा, दाराशाहखां और खैरमुहम्मदखा तथा अन्य स्वतत्र रिसालदारोके लिए रखा। इस प्रकार भाग करनेका कारण यह भी था कि जब अमीर वरनेमे था उस समय यह लोग अत्यन्त ही स्वामि-भक्त रहे थे। अमीरखाने इस रुपयेको प्राप्त कर लेनेका कार्य मुख्तारुद्दौला पर रखा।

इस प्रकार सब कार्यवाही कर अमीरखा लावाकी ओर अग्रसर हुआ। वहाँ उसका विचार पहुँचते ही आक्रमण कर देनेका था, किन्तु मुख्तारुद्दौलाने समझाया कि इस प्रकार आक्रमण करनेसे कुछ भी हाथ नही आवेगा। अतः उसने दाराशाहके साथ अपनी सेनाको, मेवाड़में सेना-व्यय एकत्रित करनेके लिए भेजी और आप स्वयं दो हजार घुडसवारो, जमशेदखा और अफरीदियो सहित वही ठहर कर लावावालोसे सेना-व्ययकी माग करने लगा। लावेके किले पर दो तीन वार आक्रमण भी किये। किन्तु किलेकी सुदृढ दीवारो और खाईकी गहराईके कारण ये सफल नहीं हुए। वहुत समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। इसी वीचमें राय दाताराम, मुख्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ जोधपुर भेजा गया, वह महाराज मानसिंहसे १० लाख रुपया प्राप्त कर आ रहा था। उसके लौटनेके समाचार जसवंतराव होल्करके डेरेमे पहुँचे, उस समय 'अमीरनामे'का लेखक मुशी भुसावनलाल (शाहदान कवि) भी वहां उप-स्थित था, जो उस समय राजा मोहनसिंहकी सेनामें कार्य कर रहा था। उसने (शाहदान-कविने) इस घटनाकी स्मृतिमे कुछ कविताएँ रचीं। इसी समय सन् १२२७ हिजरीमे (ई. सन् १८११) पिंडारी करीमखां, जिसके पास पिंडारी दस्युओंका वहुत वड़ा दल था, दौलतराव सेंधियासे हार कर, वचे हुए सिपाहियोके साथ अमीरके पास आया। इस पर सेंधिया पर, राजाराणा जालिमसिंह, होल्कर 'वाई' (जसवतरावकी विधवा) और अंग्रेजोंने मिल-कर, अमीरको इस दस्यु सरदार करीमखाको पकड़ कर सौंप देनेके लिये बहुत दवाया था। अमीरने इस वातको अपने गौरवके अनुकूल न समझ कर इस पिंडारे सरदार और उसके साथियोको

अपने पास रखा और सधिया आदिको उत्तर भिजवाया कि वह (पिंडारा सरदार) इस समय उसके पास है, इसलिये इस तरफसे कोई चिन्ता नही करनी चाहिए। यद्यपि अमीरखाको उसके बहुतसे रिसालदारोने समझाया कि पिंडारेको पकड कर सौंप देना चाहिए, तथापि उसने उन लोगाकी एक भी न सुनी।

अब हम फिर 'लावा' की ओर आते है। जयपुरसे जो रुपया तय हुआ था वह ठीक समय पर मुख्तारुद्दौलाका मिल चुका था। इस पर जमशेदखा और दूसरे रिसालदारोने जिनके पास सेना थी, समय पा कर नवाब मुख्तारुद्दौलाको पकड लिया और उसके सीनेसे तलवार लगा कर सौगध खाई कि जब तक उन्हे पूरा रुपया न चुका दिया जायगा, तब तक उसे न छोडा जावेगा। सयोगवश उसी समय, जिस समय यह उपद्रव हो रहा था, अमीरखा भी नवाबके डेरेकी ओर जा निकला। उस समय दिनके ३-४ बजेका समय था। वहाँ पहुँच कर जब उसे सब घटना ज्ञात हुई तो उसने विचार किया, कि यदि लोग उसे इस समय इस डेरेमे देख लेगे तो सेनामें सदेह करेगे, कि यह उपद्रव उसीने खडा किया है। अत वह चुपचाप अपने डेरेमें न लौट कर लोगोकी निगाहसे निकल गया। वह फजुल्ला बगसके डेरेमें चला गया। जब तक यह उपद्रव शात न हुआ तब तक वही रहा। जमी कि अमीरखाने आशका की थी, मुख्तारुद्दौलाकी अध्यक्षतामे जो सिपाही थे उन्होने यह समझ कर कि अमीरने ही उनके सरदारके साथ यह गडबडी की है, उसके डेरेका घेर लिया और मोर्चा बदी कर दी। और यह कहा कि जब तक उनके स्वामी मुख्तारुद्दौलाको न छोडा जावगा वे अमीरको अपने अधिकारमें रखेगे। यह समझ कर कि अमीर उनके अधिकारमें है, रात भर आक्रमण करते रहे। उधर अफगान मुख्तारुद्दौलाके सीनेमे तलवार लगाये, बदी बनाये रहे। अतमें अमीरके मुशी राय दाताराम, मुख्तारुद्दौलाके भानजे यारखा और सेठ हीराचदके गुमाश्ते जवाहरसिहकी जमानत पर, उसको छोडनेको उन्हे राजी किया गया। अमीरने रायको बुला कर कहा कि जब तक वह मुख्तारुद्दौलाके धरना देना स्वीकार न करेगा तब तक उन दोनोको न छोडा जावगा। उसे आशा थी कि इस प्रकार राय उसका (मुख्तारुद्दौलाका) जामिन हो जावेगा। रायने अमीरके लिए यह सब स्वीकार कर लिया। यारखा और जवाहरसिहके साथ जमशेदखा और अन्य अफगानोने रायको अपने अधिकारमें रख लिया। इस प्रकार अमीर और मुख्तारुद्दौलाने कठिनाईसे मुक्ति पाई। इसी बीचमें राजा मोहनसिहका सेनाके सिपाही भी अपने वेतनके लिए हल्ला मचाने लगे। अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखाके बहकानेसे अपने सरदार राजाको जयपुरमें टारडाके स्थान पर कैद कर लिया। इसलिए मुशी नुसावनलालने जो उस समय मोहनसिहकी सेनामें था, उसके छुटकारेके लिए उद्योग किया। छुटकारेके पश्चात् राजा मोहनसिहने नौकरी करना उचित न समझ कर त्यागपत्र दे दिया और मुख्तारुद्दौलाके पास चला आया। राजाके त्यागपत्र देने पर उसके दलका नायक मुहम्मद अय्याजखा बनाया गया।

नवाव जमशेदखां, मुहम्मद सईदखां और दूसरे रिसालदार, जिन्होंने राय दाताराम और उसके दो साथियोंको पकड रख था, मेवाड़में निवाहेडाकी ओर अग्रसर हुए। अमीरने दाराशाहखां रिसालदारकी अध्यक्षतामें अपनी प्रधान सेना मेवाड़में सेनाव्यय प्राप्ति हेतु भेजी। आप स्वयं थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ करीमखां पिंडारीको ले कर टोंक और इद्रगढ होता हुआ कोटा राजराणा जालिमसिंहके पास गया। वहाँ पर चार दिन ठहर कर वह भानपुरा गया, जहाँ हालहींमें जसवंतराव होल्करका निधन हुआ था। वहाँ उसकी विधवा बाईसे मिल कर शोक प्रकट किया और उसके आग्रहसे जसवंतरावके उत्तराधिकारी मल्हाररावकी नाबालगीमें राज्यका प्रबंध करना स्वीकार किया। अमीरखांने करीमखा पिंडारीको वहाँ कुछ दिन ठहरनेको सम्मति दी और उसे समझाया कि नामदारखां और उसके (करीमखाके) साथियों, तथा संबंधियोंको, मेरे साथ भेज दिया जाय, जिन्हे मैं राजा दुर्जनसाल खीचींसे मिला दूंगा जो इस समय दौलतराव सेंधियाके विरुद्ध विद्रोह कर रहा है। ये लोग अच्छी सहायता करेंगे। सेंधियाको उसके कियेका फल चखायेंगे। करीमखांको यह योजना पसंद आ गई और वह भानुपुरा ठहरनेके लिए तैयार हो गया। इस पर अमीरने करीमखांको इफ्त-खारुद्दौला और गफूरखाके सिपाहियोंकी नाम मात्रकी चौकसीमें छोड दिया और आप नामदारखा, शहामतखां और दूसरे लोगोंके साथ शेरगढ आ कर दुर्जनसालसे मिला। पिंडारी सरदारोंको यह कह कर उसके पास छोड़ दिया कि ये लोग तुम्हारी अच्छी मदद करेंगे और इनके सहयोगसे बड़े बड़े कार्य हो सकेंगे। उधर पिंडारोंसे यह कहा कि मैं राजा (दुर्जन-साल)का कार्य तुम्हारे हाथमें देता हूँ तुम अपने और राजाके शत्रुके विरुद्ध मिल कर कार्य करो। इसके अतिरिक्त नामदारखाको वजीर मुहम्मदखां भूपाल वालेके नाम भी एक पत्र दिया जिसमें पिंडारियोंको सहायता देनेको लिखा गया था। इसी समय अमीरखाने मुहम्मद सईदखांको 'शमशुद्दौलाजफरजंग' व शरूरखाको 'सरफराजुद्दौला तेगजंगकी' उपाधियां प्रदान की। शरूरखाको मुनव्वरखाके स्थान पर सिरौजका अधिकारी बना कर भेज दिया।

मुख्तारुद्दौला जो लावाके पास सेना डाले पड़ा हुआ था अपने सिपाहियोंकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देख कर भयभीत हो चुका था। अतः लावाका घेरा परित्याग कर किशनगढ़की ओर चला गया। अमीरखाने मोहनसिंहके दलको दूसरे सिपाहियोंके साथ अपने ससुर मोहम्मद अय्याजखांकी अध्यक्षतामें जयपुरके राजावाटी भागमें सेनाव्यय एकत्रित करनेको भेजा। जयपुर वालोंने अभी तक निश्चित रकम नही दी थी और देनेमें आनाकानी कर रहे थे। अतः मुख्तारुद्दौलाके वकीलसे लोगोंने कहा कि जब तक अमीरके ससुरकी अध्यक्षतामें शहर पर तोपखाना न लगाया जावेगा, तब तक रुपया प्राप्त होना कठिन है। इसलिए नवाब सांभरकी ओर रवाना हुआ और तोपखाना लानेका प्रयत्न करने लगा। मार्गमें ठाकुर चांदसिंहकी अध्यक्षतामें जयपुरकी सेनाने उन पर आक्रमण किया। जब यह समाचार राजा बहादुरलालसिंहने सुने जो इस समय लावाके घेरे पर नियुक्त था और जिसने लावा-

वालोंको इतना दबा दिया था कि उनके नाश होनेमें कोई कमी नहीं थी, तो लावावालोंसे ८० हजार रुपया लेनेकी प्रतिज्ञा पर घेरा तोड कर, अमीरके ससुरकी सहायताके लिये शीघ्र पहुँच गया और जयपुरकी सेनाको पीछे हटा दिया। इस प्रकार यह लावेका घेरा कई दिन रह कर समाप्त हुआ। लावाका यह घेरा सन् १८१२ ई में डाला गया था।

अमीरखा करीमखांको मालपुरा छोड कर, घूमता हुआ अजमेर आया, जहाँ उसे मुहम्मद अय्याजखा मिला। मुहम्मद अय्याजखाके सिपाहियोको अभी तक बाकी रुपया नहीं मिला था, अत अमीरखाने शीघ्र ही रुपया दिये जानेका उन्हे आश्वासन दिया। आश्वासन दे कर अमीरखा जोधपुर चला गया। इधर मुल्लाउद्दौलाकी जयपुरकी सेनासे फिर मुठभेड हो गई जिसमें जयपुर सेनाको पीछे हटना पडा और सधि करनी पडी। इसी समय सन् १८१३ ई में जगतसिहकी बहिनका विवाह मानसिह जोधपुरके साथ और मानसिहकी पुत्रीका विवाह जगतसिह जयपुरके साथ हुआ। सधिके पश्चात् मुल्लाउद्दौला मेडता चला आया और अमीरसे मिल कर जोधपुरसे फिर रुपयोकी माग की। यहाँ इद्रराज और महाराज मानसिहके गुरु देवनाथकी हत्याके पश्चात् अमीरखा शखावाटीमें आया। यहाँ श्यामसिह और अभयसिहके विरुद्ध मार्चाबदी की जिन्होंने जमशदखाको हरा कर भगा दिया था। अमीरने इनसे ३ लाख रुपया ले कर जयपुर आ कर रुपयोकी फिर माग की और रुपया प्राप्त न होने पर घेरा डाल दिया। छुटपुट आक्रमणोके अनन्तर मानसिहकी पुत्रीके आग्रहपर, जिसका विवाह कुछ दिन पूर्व जगतसिहके साथ हुआ था—घेरा उठा कर अमीरखा जोधपुरकी ओर चला गया और इधर जोधपुर और बीकानेर रियासतोमें दस्युता करता हुआ कई महीना तक घूमता रहा। तत्पश्चात अमीरखाको माधोराजपुरेके किलेकी ओर आना पडा जहाँ लदानेके कवर भारतसिहने, अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखाके बीबी बच्चोको टोरडीसे ला कर, अमीरखाको अपने ऊपर आक्रमण करनेके लिये विवश कर दिया था।

अमीरखाने जब लावाका घेरा था, उस समय लावाकी सहायताके लिए नरूखडके सभी नरूके सरदार आये थे। जिनमें लदानेके ठा मदनसिहके पुत्र कवर भारतसिह भी थे। यह वीर और उत्साही नवयुवक थ। इन्होने अपने ठिकानेकी 'रखल्ल' नामक तोपसे इतने गोले अमीरखाकी सेना पर बरसाये थे कि विवश हो कर अमीरकी सेनाको घेरा उठाना पडा था। ऊपरकी पक्तियोमे यह लिखा जा चुका है कि लावेका घेरा राजा बहादुर लालसिहने लावा वालोंके ८० हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर उठा लिया था। यह लेख अमीरखाके वतन भोगी मुशी भुसावनलालका ह जिसने अमीरके जीवनकालमें ही अमीरकी जीवनी लिखी थी। किन्तु अन्य इतिहासकारोका कथन है कि भारतसिहके तोपोकी मारसे विवश हो कर यह घेरा उठाया गया था।

लावाके घेरेके पश्चात् एक समय नरूखडमें एक विवाहोत्सव था, जिसमें कवर भारतसिह भी अपने साथियो सहित सम्मिलित हुए थ। प्रसगवश वहाँ पर कई सरदारोके मध्यमें

जिनमें राठोड़ भी थे, लावामें की गई अपनी वीरताका गर्वभरे शब्दोंमे वर्णन किया जिससे कि ले-देकर जो संधिकी चर्चा चल रही थी, वह स्थगित हो गई और लावाका घेरा उठा लिया गया। प्रसगवश यह वताना अनुपयुक्त न होगा कि राठोडों और कछवाहोंमें आपसमें समधियोका संबंध था और वे एक दूसरेसे हँसी मजाक भी किया करते थे। किन्तु इस हास्यमे कभी मनोमालिन्य नही हो पाता था। अस्तु, भारतसिहकी उक्त गर्वभरी वातसे एक राठौड़ सरदारने मुँह वना कर कहा कि, "इसमे आपकी वीरता क्या थी आपने तो अपने दीन आतिथेयको और भी कठिनाईमे फँसा दिया था, वह तो भाग्यकी वात थी कि घेरा उठ गया। आपकी वीरता तो तव समझी जाती कि जव आप नवावको अपने घर पर युद्धार्थ निमंत्रित करते। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा किया जाता तो आप अपने वालवच्चो सहित ठिकानेको भी खो वैठते।" यह शब्द भारतसिहको तीरकी तरह लगे। कुछ क्षणके लिए वह स्तव्ध हो गया, किन्तु उसी क्षण एक व्यक्तिसे जल मंगा कर उसे अपने दाहिने हाथमें ले कर प्रतिज्ञा की, "यदि एक वर्षके भीतर मै नवावको युद्धार्थ निमन्त्रित करके परास्त नही करूं तो मैं असल राजपूत नही और मुझे अपने वंशका कलंक समझा जावे।" इस पर उपस्थित सव ही व्यक्तियोंने भारतसिहको अपनी प्रतिज्ञा वापिस लेनेके लिए वाध्य किया, किन्तु उसने उत्तर दिया कि हाथीके दांत एक वार वाहर निकलनेके पश्चात् कभी अन्दर नही जा सकते है; वैसे ही राजपूतके मुँहसे भी शब्द एक वार कहे जाते है। इस हास्यसे आगेकी घटनाका श्रीगणेश हुआ।

जव भारतसिह अपने स्वामिभक्त, चतुर एवं दूरदर्शी कामदार शंभू धाभाई सहित घर लौट रहे थे, तव मार्गमें कामदारने कुँवर भारतसिहको उसके इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर वहुत वुरा भला कहा। तुम्हारा इस प्रकार अदूरदर्शितापूर्ण कार्य केवल नरूकोंके नाशके अतिरिक्त कुछ नही है। क्या आप अनेक साधन संपन्न अनेक सहायकोयुक्त एवं अदमनीय, कठोर और भयंकर अमीरखा पर विजयकी आशा करते हैं? क्या राजस्थानमें अमीरके विरुद्ध खड़े होनेकी किसीमें शक्ति है? जयपुर, जोधपुर, उदयपुर भी वरावर भय खाते रहते हैं और समय समय पर उसे सेनाव्ययकी रकम देते रहते हैं। इस पर कुँवरको वास्तवमें होश हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि जल्दवाजीमें वड़ी भयंकर भूल हो गयी। फिर भी उसने उत्तर दिया कि आप सव लोग अपने अपने घरोंमें वैठ कर आराम करो। मैं यह जानता हूँ कि आज नवावका राजस्थानमें विरोध करने वाला कोई नही है तो भी नवाव चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, मै एकाकी ही नवावकी सेनाका सामना करूंगा और अंतमें एक वीर योद्धाकी तरह वीरगति प्राप्त करूंगा। इस पर धाभाईने उसे आश्वासन दिया कि आपको किसी प्रकारकी चिन्ता नही करनी चाहिये। यद्यपि मै एक तुच्छ जातिका गूजर हूँ और एक छोटेसे ठिकानेका कामदार हूँ तथापि आप विश्वास रखें और देखें कि मैं किस प्रकार वर्षके अंत तक आपकी प्रतिज्ञापूर्त्तिमें योग देता हूँ। मुझे पूर्ण अधिकार दिया जावे

और आगे मेरा कार्य देखा जावे। इसी तरह वर्षका अन्त होनेमें कुछ ही दिन शेष रह गये थे, किन्तु धाभाईने अभी तक कुछ भी नहीं किया था। इस पर कुवरने एक दिन धाभाईको बुला कर कहा कि तुम तो अपनेको तुच्छ गूजर कह कर अपनी बातसे हट सकते हो, किन्तु मैं राजपूत बिना प्रतिज्ञा पूर्ण हुए कैसे मुँह दिखा सकूगा। इस पर धाभाईने कहा कि आप चिंतित न हों समय अब कार्य करनेका आया ही है। आप मेरी कार्यवाहियोंको चुपचाप देखते रहें।

दूसरे दिन उसने लदानेके हलवाइयोंको बुला कर ५००० व्यक्तियोंके लिए 'हलवा पूरी' तयार करनेको कहा और साथ ही उसने सम्पूर्ण नरूखंडके नरुका राजपूतोंको स्त्री, बच्चा सहित भोजनका निमंत्रण भेजा। यथा समय सब लोग भोजनके लिए आये, भोजनके पश्चात् धाभाईने सबको एकत्रित कर कहा "ठिकानेमें ऐसा कोई बड़ा कार्य नहीं था, जिसके कारण इतना बड़ा प्रीतिभोज दिया जाता, किंतु कुवर वीर और पराक्रमी हैं और नरूओंके टीकाई हैं, अतः आप सबको उन्हें सम्मान देना चाहिये। इसके पश्चात् कुवर घोड़े पर चढ़े और उपस्थित नरूकोंमें से ५०० चुने हुए पराक्रमी एवं साहसी योद्धागण कुवरके पीछे पीछे चले और धाभाई पैदल साथ साथ चला। यह सब लोग माधोराजपुरेके किलेकी ओर जाये। जयपुरमें यह किला अन्य किलोंसे अधिक सुदृढ़ था। जब यह लोग वहाँ पहुँचे तब, रात्रिके १० बज चुके थे। रस्सेकी सीढ़ियों द्वारा किलेमें प्रवेश कर किलेका दरवाजा खोल कर बाकी बचे हुए साथियोंको किलेके अंदर लिया गया और फिर वहाँके रक्षकोंको बाहर निकाल दिया गया जो जगतसिंहकी राठौड़ रानी (मानसिंहकी पुत्री)के द्वारा वहां नियुक्त थे। इसके पश्चात् रातोंरात सम्पूर्ण नरूकाओंकी स्त्रियां बच्चा सहित वहाँ बुला लिया गया। इस प्रकार अपनी रक्षाका प्रबंध कर अमीरखाँसे युद्ध करनेकी तैयारी की जाने लगी।

अमीरखांका ससुर मुहम्मद अय्याजखां उस समय टोरडी ठाकुरके यहाँ सपरिवार ठहरा हुआ था, जिससे उसका सबंध पगड़ीबदल भाईका था और उनकी बेगम ठकुराणीकी धर्मबहिन थी। इस बातको धाभाई अच्छी तरह जानता था। अतः उसने २०० चुने हुए पराक्रमी और उत्साही सवारोंको ले कर रात्रीमें टोरडीके जनाने महलों पर आक्रमण किया। उसने गांवमें जा कर बहुतसे ऊंटोंको एकत्रित कर उनके दोनों सींगों पर मशालें जला कर इधर उधर फैला दिया जिससे यह मालूम हो कि कोई बहुत बड़ा दस्युओंका दल लूटनेको आया है। तब इस प्रकार किसी भी समय लूटमार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। अय्याजखां तथा ठाकुरने जब इन लोगोंका हल्ला सुना तो देखनेके लिये अपने स्थानसे बाहर आये। अय्याजखान यह समझा कि रात्रिके अंधकारके कारण उमींदें व्यक्ति लूटमार करने आये होंगे। उन्हें देखनेको कुछ व्यक्तियोंको गांवकी ओर भेज दिया। इधर धाभाईने जनाने महलों पर आक्रमण कर, अय्याजखांके परिवारकी स्त्रियां और बच्चोंको, जिनमें अमीरखांकी स्त्री भी थी, अपने अधिकारमें करके ले चला और पहरेदारोंमेंसे एकको भी समाचार देनेके लिये जीवित नहीं छोड़ा। इधर ऊंटोंके सींगोंकी मशालें बुझने

लगी तो उनके साथ जो आदमी थे, उन्हें छोड़ कर चले गये। जब नाच, गाना समाप्त हुआ और मुहम्मद अय्याजखा अपने ठहरनेके स्थान पर मध्य रात्रिको वापिस आया, तब वहां उसे कोई भी व्यक्ति नहीं मिला और हत्याकाडको देख कर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि इस इतनी बडी घटनाका उन्हे जरा भी भान न हुआ। उस ओर धाभाई उन बेगमों आदिको आरामके साथ माधोराजपुराके किलेमे ले गया, जहाँ उन्हे बडे ही आरामसे रखा। अब युद्धके लिये रसद आदिका प्रबध किया गया। जब अमीरखाको इस दुर्घटनाका समाचार मिला तो उसने अपनी बडी सेना ले कर माधोराजपुराके किलेको घेर लिया।

घेरा डालनेके पश्चात् अमीरखाने प्रथम भारतसिहको अपने परिवार वालोंको छोड देनेके लिए सदेश भेजा। भारतसिहने फसल पकने तक अमीरको अपना विचार प्रकट नही होने दिया, उसे वस्तुस्थितिसे अधकारमें ही रखा। जब फसल पक कर तैयार हो गई और खाने पीनेकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्रित कर ली गई, तब अपनी इच्छा स्पष्ट रूपसे अमीरको प्रकट कर दी। इस पर अमीरने राणोतकी ओरसे आगे बढ कर घेरेको और भी सकुचित कर लिया। इसके साथ ही उसने राजा बहादुरलालसिह, मिया अकबर, मोहम्मदखा और महमूदखा आदिकी सेनाको बुलवा लिया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमशेदखा और चेला हिम्मतखाकी घुड़सवार सेनाको भी बुलवा लिया। इन्हे किलेके चारो ओर लगा कर, मार्ग अवरुद्ध कर, शहरसे किलेवालोंका संबध विच्छेद करनेके पश्चात् आक्रमण कर दिया। इस प्रकार घेरा डाले हुए और आक्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो जाने पर भी अमीरखाको सफलता नही मिली, तब उसने अपनी सेनाके सम्पूर्ण अधिकारियोंको एकत्रित करके परामर्श किया, और यह निश्चय किया कि किलेकी एक ओरकी दीवारको तोड़ कर किलेमे प्रवेश कर, आक्रमण करना चाहिए। इस योजनाके अनुसार कार्यवाही आरभ की गई, किन्तु अमीरके काबुली सिपाही—जो हिन्दी नही समझ सकते थे—दीवार टूटनेसे पूर्व ही आक्रमण कर बैठे। इससे किलेवालोंने सचेत हो कर ऊपर से जलते हुए छप्परोंके साथ साथ गोलाबारी भी इन लोगों पर की जिससे अमीरकी सेनाके कितने ही व्यक्ति मारे गये और कितने ही झुलस गये और बाकी बचे हुए भाग गये। अमीरने जब यह सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ, और बिना आज्ञा कार्यवाही करनेके अपराधमें बहुतोंको दंड दिया। उसकी यह योजना असफल हो गई जिसको पुनः कार्यान्वित करना भी असभव था, क्योंकि यह योजना प्रगट हो चुकी थी।

इस आक्रमणके समयमें कुवर भारतसिह और धाभाईने स्थितिको इस वीरता और चतुराईसे सभाला कि अमीर जैसा कठोर एव पराक्रमी योद्धा भी विचलित हो गया। नवाबके बीबी-बच्चोंको ऐसे प्रेम एवं आदरसे रखा कि वे उसे जीवन पर्यन्त न भूल सके जिससे

उनमें आपसमें सगे भाई बहिनोंका-सा संबध हो गया था। एक बार फिर नवाबने दीवार तोडनेका यत्न किया तो उस समय नवाबके बीबी बच्चोंने अमीरसे कहलाया कि यदि आपने किलेकी दीवारे तोडनेका फिर प्रयत्न किया तो हम उस स्थान पर पहुँच जावेगें– हमारे मरने पर ही बाबा भारतसिंह व अन्य राजपूतों पर आंच आ सकती है। इस पर अमीरने किलेकी दीवार तोडनेका विचार त्याग दिया। युद्ध चलते हुए कई मास व्यतीत हो गये थे, उसकी सम्पूर्ण सेना युद्धस्थल पर एकत्रित हो चुकी थी, जिसे वेतन नही मिला था। सेना व्यय जहाँ जहाँसे प्राप्त होनेको था वह आया नही था। इन परिस्थितियोंने अमीरखांको अत्यन्त चिंतित कर दिया था। अत मुहम्मद ऊमरखां, राय दाताराम और मुहम्मद अय्याजखाने लाख रुपया कुंवर चतुरसिंहसे ला कर दिया, जिसे अमीरखाने अपनी सेनामें बांट दिया। इसके पश्चात किले पर फिर आक्रमणकी तयारी की जिसका संचालन स्वयंने लिया। उसने सब सेनानायकोंको सूचित कर दिया कि इस बार उसकी आज्ञाका पूर्णरूपसे पालन किया जावे और संकेत पात होते तत्काल किले पर आक्रमण कर दिया जावे। किन्तु इस बार भी हवाके विपरीत होनेके कारण अमीरने जो संकेत तोप चला कर किया था वह दूसरी ओर न पहुँच सका और उसकी सेनाके पडावमें पहुंचा। इसलिए इस ओर वाली सेनाने यह समझ कर कि उनके अन्य साथियान (दूसरी ओरवालोंने) किलेको तोड दिया है – आक्रमण कर दिया किन्तु दूसरी ओरवालोंको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था, इसलिए वे जहाँके तहाँ रहे। किलेवालोंके सजग होनेसे अमीरकी यह योजना भी सफल न हो सकी और उसे अत्यन्त हानि उठानी पडी। अतः उसने घेरेको ओर भी संकुचित करके किलेवालोंको भूख प्याससे विवश करना चाहा। समय अत्यधिक हो चला था। १२ मास होने पर आये थे। क्योंकि यह घेरा २१ नवम्बर सन् १८१६ ई० में आरंभ हुआ था और सन् १८१७ ईका नवम्बर मास आरंभ हो चुका था। अब घेराके संकुचित हो जानेके कारण किलेवाले भी विशेष चिन्तित हुए। किन्तु किलेवालोंके सौभाग्यसे उन्हीं दिनों अंग्रेजी सरकारने अपनी सेनायें चारों ओरसे एकत्रित कर उन स्थानोंकी ओर रवाना की जो अमीरखां द्वारा लूटे जा रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेज सरकारने अमीरखांके देहलीवाले प्रतिनिधि मुंशी निरंजनलालसे समझौतेकी बातचीत की जो इस समय चार्ल्स टी मेटकाफ रजीडेण्टके पास था। उससे (निरंजनलालसे) यह कहा गया कि यदि अमीर हमारी शर्तोको स्वीकार कर लेगा तो उसे दक्षिणकी कुछ जमीन और दे दी जावेगी। इस प्रकार संधिकी बातचीत करके एक डोल (ड्राफट) अमीरकी स्वीकृति हेतु भेजा गया। इस डोलमें अंग्रेजोंके लाभकी बातें अधिक थी और अमीरकी आशाओंके अनुसार बहुत कम थी। इसी समय आगरेसे जनरल डकिन और देहलीसे जनरल आक्टलोनी अपनी अपनी सेनाओंके साथ जयपुरकी ओर बढा। साथ ही अमीरखांको जो कुछ सहायता मरहट्टे सरदारोंसे मिल सकती थी, उस पर पहिलेसे ही रोक लगा दी। इससे अमीर किंकर्तव्यविमूढ हो गया और अंतमें विवश हो कर और संधि करनेमें ही अपना हित समझ कर उस डोल पर उसने हस्ताक्षर कर दिये। और

भारतसिहको रुपया आदि दे कर अपने समुरके परिवारको छुडा कर घेरा उठा लिया * । इस प्रकार भारतसिहका प्रण पूर्ण हुआ। माधोराज पुरे की लडाई के पश्चात् इस विजय की खुशीमे महाराज जगतसिह ने माह सुद ७ वि. म. १८६९ के दिन प्रीतम निवासमें दरबार किया और लदानाके मदनसिह, पीपलाके चतुर्भुजोत महतापसिह, कायमसिह नरूका, कुवर भारतसिह नरूका, रामबक्स गुमास्ता और बोहरा दीनारामको सिरोपाव दिये और इनकी प्रशसा की। सधिके पश्चात् अमीर अपनी सेनाका अधिकाश भाग तोड कर अपनी अधिकृत भूमिके प्रमुख शहर टोकको आ गया और उसने इसे ही अपनी राजधानी बना कर जनहितके कई कार्य किये। ६७ वर्षकी अवस्थामे जमादीउस्सानीकी ता २५ सन् १२५० हिजरीको तदनुसार सन् १८३४ ईमे उसका स्वर्गवास हो गया। वह मोतीबागके किनारे तालाब और मसजिदके निकट दफना दिया गया।

अमीरखाकी मृत्युके बाद उसका बडा पुत्र वजीरुद्दौला २८ वर्षकी अवस्थामे हिजरी सन् १२५० के जम्मदीउस्सानीकी २७वी तारीखको सिहासनासीन हुआ। इसको अग्रेजी सरकारकी ओरसे खिल्लत दी गई। हिजरी सन् १२६१ तदनुसार १८४५ ई० मे अलीगढ़ के गाड़ोली गावकी सीमाको ले कर उणियारे वालोसे युद्ध हुआ। अतमे करनल जान सदरलैण्ड रेजिडेण्ट, राजस्थानने उणियारे और अलीगढकी सीमाका फैसला किया। इसके अनन्तर सन् १२६७ हि० मे फिर उणियारे वालोने टोकके एक ग्राम पर अधिकार कर लिया। नवाबने ४ तोपो के साथ सरदार अब्दुररहमानको भेजा। युद्धके पश्चात् करनल जालबिन साहब रेजिडेटने सीमाका फैसला कर दिया। दूसरे वर्ष सन् १२६८ हिजरीमे (१८५२ ई०मे) नवाब वजीरुद्दौलाने लावा पर आक्रमण किया। इस आक्रमणमे नवाबके साथ प्रमुख व्यक्ति ये थे– अहमदअलीखा, मुहम्मदबक्स, बलन्दखां, मुनीरखा, अकरमखा (भाई), फैजमुहम्मदखा, मुहम्मदअलीखा, अब्दुल्लाखा (बेटे), अहमदयारखा, किफायतउल्लाखा, अहमदअलीखा कप्तान, शाहआजमखां नूरउलाहीखा, मुहम्मद फैजउल्लाखा, मसूदउद्दीन, हिम्मतखा, कलदरबक्स, सैयद-अब्दुलअजीज, शेख फरहतउल्ला, मुहम्मद हुसेन, सैयद अलीहुसेन, अब्दुलरहमान रिसालदार, मुहिबुल्ला रिसालदार, सैयद जफर अली रिसालदार और मिश्रीखा। लावा की ओरसे प्रमुख व्यक्ति हनुमतसिह, सरजनसिह, (कर्णसिहके भाई) रामसिह, श्यामसिह (हनुमतसिहके भाई), रैवतसिह, हरनाथसिह, ठाकुर लदाना, प्रतापसिहके छोटे भाई गोरधनसिह, स्योराके हनुमतसिह, बख्तावरसिह, रणजीतसिह और सुजानसिह, इस युद्धमे सम्मिलित हुए। नवाबकी ओरसे पहिले पहिल सितमखा मारा गया तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति जो वीरगतिको प्राप्त हुए उनके नाम ये है–मिश्रीखा रिसालदार, रुस्तमखा जमादार, गोहरखा, जहागीरखा जमादार और सैयद रोशनअली मेजर। और लावाकी ओरसे महरूके रेवतसिह नरूका और भवाना धाभाई, आवाके किलेदारका पुत्र गिरदिया, सोडेका हनुवतसिह, उणियाराके सग्रामसिह, ठाकुर गोविन्द-

* इस स्थान पर 'अमीर नामा'के लेखकने लिखा है कि जैसे-तैसे अमीरने भारतसिहसे बातचीत तय, कर अपने ससुरके परिवारको छुडा कर और घेरा उठा कर, नीमेडाकी ओर प्रयाण किया।

सिहका सेवक लछमनसिंह दरोगा, रतना धाभाई, सुखा दरोगा लालसिंह किलेदार आदि कितन ही प्रमुख वीर वीरगतिको प्राप्त हुए। × इस युद्धके पश्चात् वजीरुद्दौला ५९ वर्षकी अवस्थामे सन् १२८१ हिजरी तदनुसार १८६५ ई में स्वर्गस्थ हुआ।

यह पहिले लिखा जा चुका ह कि ये युद्ध अमीरखा और कछावाहोकी नरूका शाखाके राजपूतोंके मध्य हुए थे। अमीरखा और उसके कार्य-कलापोंका वर्णन ऊपर लिखा जा चुका ह। अब नरूकाओंकी उत्पत्ति, प्रसार तथा उनके ठिकाना आदिके विषयमे ज्ञातव्य बात दी जाती ह।

सवत १४२३ वि मे आमेरके सिंहासन पर उदयकर्णका उदय हुआ। इसके ज्येष्ठ पुत्र वरसिंह थे, जिनके विवाहके लिए खडेलाके निर्वाण (चौहान) वशी राजा राव वीसलदेवने (अपनी पुत्रीके विवाहार्थ) टीका भेजा। इस अवसर पर वृद्ध राजा उदयकर्णने हास्यमे कहा कि यदि हमारी अवस्था भी कुवर साहवकी-सी होती तो आज हमारे लिये भी व्याहका टीका आता। यह सुन तत्काल कुवर वरसिंह उठ गये और उस कन्याको हृदयमें माता अनुमान कर पितासे विवाह करनेका आग्रह करने लगे और खडेलाके अतिथियोंसे कहा कि माता हमारा हो चुका ह अतएव अन्य स्थान पर व्याह करोगे तो भयकर युद्धका सामना करना पडेगा। जब वीसलदवको यह ज्ञात हुआ तो उसने वरसिंहसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया "म राज्याधिकार प्राप्त नहीं करूगा, नई माताके पुत्रको ही स्वामी मानूगा।" अततोगत्वा राजा उदयकर्णको वृद्धावस्थामें तीसरा विवाह करना पडा। इस कन्यासे उसके दो पुत्र हुए। ज्येष्ठका नाम नरसिंह और कनिष्ठका वालोजी था।

स १४४५ वि म राजा उदयकर्णका स्वर्गवास हो जाने पर वरसिंहने अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने भाई नरसिंहको सिंहासनारूढ कराया। आमेरमे वालक राजा जान कर कलाधर झाला राजपूतने आमेर हडपनेके लिए एक वडी सेना ले कर ईसरदाके निकट सरसके नाकके पास पडाव डाला। जव यह सूचना वरसिंहको मिली तो वह भी शत्रुका वीच होम रोकनेके लिए वडी सजधजके साथ सिवाईमें आकर ठहरा। वरसिंहका ऐसा उत्साह देख, झाला कलाधरने कुटिल नीतिका अनुसरण करते हुए उसे (वरसिंहको) कहलाया कि, "व्यर्थहीम क्षत्रिय परस्पर लड कर मारे जावग अतएव आप निसकोच अकले पधारे, म भी इसी प्रकार उपस्थित होऊगा। सधि करली जावगी।" सीधे सादे वरसिंह झालाकी कुटिलताको न समझ कर, उसकी सूचनानुसार केवल एक सेवकको साथ ले कर, सरसके नाके पर पहुंच

× अमीरखाकी मृत्युके पश्चात् वृत्त विस्तारपूर्वक नहीं मिलता है। जो कुछ प्राप्त होता है वह "तवारिखे महमूदावाद में" है। नवाव वजीरुद्दौलाका वृत्त इसी पुस्तकके आधारपर लिखा गया है। उसमें न तो "लावाके" युद्धका कारण लिखा है न परिणाम ही। सबधित ठिकानोंसे जो वृत्त प्राप्त हुआ है, उससे कविके वृत्तकी पुष्टि होती है। वह यथास्थान आगे दिया जावेगा।

जहाँ झाला कलावर एकाकी, जाजम पर बैठा हुआ, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वाते करते करते विश्वास उत्पन्न कर और वरसिंहको असावधान देख, झपट कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा और दोनों हाथ पकड़ कर वरसिंहको विवश कर दिया। अव तो वरसिंह वहुत ही घवराया और झालाकी चालाकी भी उसकी समझमें आ गई। किन्तु विवशतासे कुछ कर नही सका, फिर भी साहस कर छुटकारेका प्रयत्न करने लगा। अंतमे नीचे चित्त पड़े हुए वरसिंहकी दृष्टि उस नग्न कटार पर पड़ी, जिसको झालाने अपनी पटलीमे छिपा रखा था। वरसिंहने नीचे पड़े पड़े ही, एक पैरके अँगूठेसे उसको ऐसी शीघ्रतासे खीचकर, दूसरे पांवसे पूरी शक्तिके साथ ठोकर मारी कि जिससे वह कटार कलावरका पेट फाड़ कर पीठके वाहर निकल आई और तत्काल ही कलावरका प्राणान्त हो गया। इसी अवसरका किसी कविका यह दोहा प्रसिद्ध है।

> पगसे लीवी पारघी, पगसे कीवी पार।
> झाला कलावर मारियो, कूरम वाहि कटार॥

झालाके मारे जाने पर उसकी सेना स्वतः ही भाग खड़ी हुई। झालाकी सेनाके भाग जाने पर वरसिंह आमेर आए। सव लोगोंकी सम्मतिसे आमेर राज्यके तीन भाग किये गये। उस समय आमेरकी आय केवल २७ लाख वार्षिक की ही थी। इस कारण नौ लाखमे भैराणाकी ८४ गांवोकी जागीर वरसिंहको और नौ लाखमें अमरसरकी जागीर वालोजीको दी गई। शेष आमेरके स्वामी नृसिंह रहे।

भैराणाके स्वामी वरसिंहके पुत्र मेहराज हुए। इन्हीके पुत्र नरूसिंह वहुत प्रसिद्ध हुए, जिनकी संतान नरूका कहलाई। नरूसिंहके दो पुत्र थे। राव दासा और राव लाला। राव दासाके सात पुत्र थे। चन्दनदास, जयमल, रतनसिंह, पूर्ण्णमल, रायसल, कपूरचंद और करमचद। राव दासाके इन सातो पुत्रोंका परिवार वहुत वढ़ा। ये लोग जहाँ जहाँ वसे वहाँ सव 'नरूखंड'के नामसे प्रसिद्ध हो गया। उस समय इनका मुख्य स्थान मोजमावाद था। जयपुर राज्यमे इनके ३६ ठिकाने प्रसिद्ध है, जिनमें ४ ताजीमी हैं। चंदनदासकी संतानोने 'लदाना' और 'लावा' प्राप्त किया और करमचदकी संतानोको उणियारा स्थापनका अवसर प्राप्त हुआ। राव लालाकी सतानोने अलवर राज्यकी नींव डाली। नरूसिंहका पौत्र और दासाका पुत्र करमचंद बड़ा वलिष्ठ, दीर्घकाय एवं प्रभावशाली था। इसके पास जमइय्यत भी वहुत थी। उसके पास अच्छे अच्छे चुने हुए अनेक सुभट थे, जिनको वह ६२ प्रकारसे प्रसन्न रखता था। उसके विरुद्ध आवाज उठानेका आमेर राज्यमें किसीमे भी साहस नही था। आमेरके राजा इन्द्रसेनने, जिसका समय सं. १५२४ से १५५९ तक था, मांडूके वादशाह नासिरुद्दिनको, जो आमेर पर चढ़ाई कर आया था, भाडारेजके समीप, करमचंदकी सहायतासे युद्धमें परास्त किया। करमचदने आमेरके राजा रतनसिंहके समयमें (सं. १५९ से १६०४) आमेर राज्यके ४० गाव

दवा लिये थे। यह रतनसिंह अत्यन्त शराबी और व्यभिचारी प्रसिद्ध था। इसके राज्यका प्रबंध नीच प्रवृत्तिके लोगोंके हाथमें था। इस कारण शेखावतों और नरूकोंको अपनी अपनी सीमा बढ़ानेका अवसर प्राप्त हो गया था। राज्यके कुप्रबंधके कारण अन्य भाई बेटे सब ही अप्रसन्न थे। राजा रतनसिंहने अपने चचेरे भाई तेजसिंह रायमलोतको अपना दीवान नियुक्त किया था। इससे अप्रसन्न हो कर उसका चाचा सांगा, आमेरके राजा पृथ्वीराजका पुत्र, अपनी ननिहाल बीकानेर चला गया था। उसके चले जानेके पश्चात् छोटे दर्जेके नौकरोंको जो राजाके बड़े कृपापात्र और मुंहलग थे, अपनी मनमानी करनेका अच्छा अवसर प्राप्त हो गया था, जिसका परिणाम आमेरकी राज्य-क्षीणताका द्योतक हुआ। सांगा पृथ्वीराजोतको अपनी ननिहालमें, आमेर राज्यके कुप्रबंध और क्षीणताके समाचार बराबर मिलते रहते थे। अतमें उसने इन समाचारोंसे क्षुब्ध हो कर बीकानेरके राजा राव जतसी लूणकरणोतसे, जो उसके मामा थे, सहायताकी प्रार्थना की। राव जेतसीने १५ हजार सेना सांगाको दी, जिसमें चेचावादका वजीर बाघावत, महाजनका लूणकरणोत रतनसिंह, राजासरका कांधलोत कृष्णसिंह, द्रोणपुरका ससारचंद्रोत खेतसिंह, सारूंडाका मण्डलावत महेशदास, भेलूका सद्दावत भोजराज, घड़सीसरका बीकावत देवीदास, पुगलका भाटी राव बैरीसिंह, चिरणोतका धनराज शेखावत, खाखाका बाघावत भाटी कृष्णसिंह, मिलकका जोइया होसा, सिंहागाका महता अमरा, बछावत मुहता सांगा, पुरोहित लक्ष्मीदास, और नापा सांखलाका भाई लाल सांखला प्रधान थे। इस सेनाको ले कर सांगा अमरसर पहुंचा। यहाँ रायमल शेखावतने उसकी अगवानी कर घोड़े भेंट किये, सांगाने ये घोड़े वापिस कर दिये। सांगाका इस प्रकारका व्यवहार देख कर रायमलने राजा रतनसिंहके दीवान तेजसी रायमलोतको सूचित किया कि ढंग देखनेसे ज्ञात होता है कि सांगा आमेरका राजा हो जावगा। अत इसके साथ अभीसे संधि कर लेनी उचित होगी। इस पर तेजसी आमेरकी सेना ले कर रास्तेमें ही सांगासे मिला। मिलते समय ही सांगाने उपालंभ देते हुए तेजसीसे कहा, "शाबास तेजसी, तुमने निकटके हो कर आमेर को खूब आबाद किया।" तेजसीने उत्तर दिया कि "राजा तो शराब और व्यभिचारका दास बना हुआ है, ऐसी स्थितिमें वह तो प्रबंधकी ओर तनिक भी ध्यान देता नहीं है। यदि आप राजा हो जावें तो सब काम सरल हो जावे। नरूका द्वारा दबायी हुई भूमि सहज ही वापिस हस्तगत की जा सकती है।" इस पर सांगाने उत्तर दिया कि नरूका करमचंदके रहते हुए हमारा अधिकार नहीं हो सकता है। अतमें तेजसीने सांगाको मुअज्जमाबादकी ओर प्रयाण करनेके लिए कहा। ये सब लोग वहाँ आये। तेजसीने करमचंद नरूकाके कनिष्ठ भाई जयमलको, जो उसके पास रहता था, बुला कर कहा कि, "तू जा कर करमचंदको बुला ला। वह भी यहाँ आ कर सांगासे अपनी सफाई कर ले। क्या कि आगे-पीछे राज्यका मालिक सांगा ही होता दिखाई देता है।" जयमलने इसका उत्तर यह दिया कि "आज दस वर्षसे करमचंद राज्यके इलाके दबा कर भोग रहा है, तब तो किसीने कुछ नहीं कहा है। अब यदि उसे कुछ कहा जायगा तो वह जवाब तो कुछ देगा नहीं और व्यर्थमें रक्तपात

हो जावेगा।" इस पर तेजसीने उसे समझाया कि "मुझे भी लोग इसी तरह कहा करते थे, किन्तु जब मै सागासे मिला तो मेरे सब अपराध क्षमा कर दिये।" करमचदको बुलाने जयमलके चले जानेके वाद तेजसीने सागासे कहा कि "आपकी इस सेनामें मुझे तो, भीम समान बलिष्ठ एव दीर्घकाय करमचंदके ऊपर कोई खड्ग प्रहार करने वाला दिखाई नही पडता है। सागाने इस कार्यके लिए लालू साखलेको चुना। तेजसीने इसे ठिंगना वता कर विरोध प्रकट किया। फिर भी सागाने उसे वीर समझ कर इस कार्यके लिये नियत कर दिया। तव तेजसीने साखलेको कहा कि "जब मै 'गाँवोका' नाम लू तव तू खडग प्रहार करना। यदि तेरा प्रहार चूक गया तो समझ लेना यहा जितने व्यक्ति बैठे हुए हैं उनमेंसे एक भी जीवित नही बच सकेगा।" इतने हीमे करमचदको साथ ले कर जयमल आ पहुँचा। करमचदने सागाके चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। करमचदके बैठ जाने पर तेजसीने उससे कहा कि "आपने राज्यको वहुत हानि पहुँचाई है। यह राज्यके स्वामी आपसे दवाये हुए गावो का हिसाव पूछते हैं।" लालू साखलाने, जो पासमे ही खडा हुआ था, "गावो" शब्दको सुनते ही करमचद पर इस वेग और शक्तिसे खड्ग प्रहार किया कि वह वही ढेर हो गया। यह देख करमचदके लघु भ्राता जयमलने, जो पास ही खड़ा था, कटार निकाल कर तेजसीका अत कर दिया और फिर सीधा सांगाकी ओर झपटा। यह देख राजा पृथ्वीराजका पुत्र भारमल जो, सागाका छोटा भाई था, बीचमे आगया। इस पर जयमलने यह कह कर कटार छतरीके एक खंभेमे दे मारी–जिसका चिन्ह आज तक भी विद्यमान है,–कि तुम छोकरेको क्या मारू? उसे धक्का दे, जयमलने लालू साखला पर और लालू साखलाने जयमल पर, एक साथ ही तलवारके प्रहार किये जिससे दोनो ही समाप्त हो गये। सागाने इतने थोडेसे रक्तपातसे ही दोनो शत्रुओका नाश देख, और अपना टीकाई रतनसिहको समझ, आमेर पर अधिकार न कर, मोजमाबादसे आमेर तकके सब प्रदेश पर अपना अधिकार कर अपने नामसे * सागानेर बसा कर वही शासन करने लगा। सांगाके इस कार्यका सभी भाई–बेटो और जागीरदारोने स्वागत किया। इस प्रकार सागाने अधिकार कर, रतनसिंह लूणकरणोतको अपने पास रख कर, अपने मामा राव जैतसीकी सम्पूर्ण सेना बीकानेर वापिस भेज दी। इधर करमचदकी जमइय्यत-मेसे किसीका भी साहस उसका वैर लेनेका नही हुआ, किन्तु एक चारण कान्हा आढ़ाने, जो करमचदका विशेष स्नेही एव स्वामिभक्त था, सागाको मारकर उसका प्रतिशोध लिया। किन्तु वह भी उसी दिन लोगोके हाथो पत्थरसे मारा गया। *

---

* सागानेर जयपुरसे दक्षिणकी ओर ८ मील और आमेरसे १२ मील दूरी पर एक ऐतिहासिक प्राचीन वस्ती है। यहाके छपे हुए साफे, दुपट्टे, छींट और हाथका बना कागज बहुत प्रसिद्ध है। यहांका एक जैन मंदिर प्राचीन कलाकी कलाका उत्तम उदाहरण हैं। 'सागाबावा'का एक प्रसिद्ध मदिर भी यहां है।

* स्वामीभक्त वीर कान्हा आढाके इस कृत्यसे नरूके उसके वंशजोंको वड़े भाईके समान मान देते हैं। आज भी कान्हा आढाका अमल [अफीम] लेते समय स्मरण कर यह कह कर रग दिया जाता है—

मार्यो सागो महिपति. वैर करमचद वोड। अमलारा रंग आपने, कान्हा आढा कोढ॥ १॥
वैर कमचंद वालियो, सागो भजड संहार, अमल पियता आपने, रग कान्हा रिझवार॥ ॥

करमचदके पश्चात् उसके पौत्र जतसीका पुत्र चद्रभाण वडा पराक्रमी एव प्रभावशाली हुआ। उसने मुगल-सम्राट शाहजहाँकी ओरसे स १६५२ में वलख, वदखशा और कधारमें अपनी वीरता और पराक्रमका अच्छा परिचय दिया। इससे प्रसन हो कर सम्राटने चार हजारीका मसव, खिताव और शाहीमुरातव* दे कर चद्रभाणको सम्मानित किया। चद्रभाणके पुत्र फतेहसिंहने शाहजहाँका पक्ष ले कर शुजाके साथ युद्धमें वहुत वीरता दिखाई। महाराज सवाई जयसिंहकी सहाताय इस वशके सग्रामसिंहने साभरके युद्धमें हुसेनअली और अब्दुला सयद वधुआके विरुद्ध युद्ध कर पराजयको विजयश्रीमें परिणित किया था। स १७८५ वि में महाराज सवाई जयसिंहके साथ माडूके युद्धमें अजीतसिंहने अपना अद्भुत युद्ध कौशल प्रदर्शित किया, जिसके उपलक्षमें महाराजने वशपरपराके लिए "राव"की उपाधि दे सम्मानित किया था। इसी वशमें महाराज सवाई प्रतापसिंहके समयमें विशनसिंह हुआ जिसने महाराजकी ओरसे सिंधियाके विरुद्ध तुगाके युद्धमें अपूव पराक्रम दिखाया, जिसके उपलक्षमें महाराजने स १८४३ इ वि में उणियाराका स्वतत्र शासन तत्र चलानेके अधिकारके साथ साथ "राजा"की वशगत उपाधि और ५ तोपाकी सलामीका सम्मान दिया। तवसे इस वशके प्रधान "रावराजा" कहालाने लगे और राजस्यानके एकीकरण तक दीवानी और फौजदारी अधिकारयुक्त शासक रहे। आजकल इस वशमें रावराजा सरदारसिंह है, जो अपनी उदारता एव लोकप्रियताके लिए प्रसिद्ध ह।

राव दासाके एक पुत्र चदनदास थे, जिमकी सतानको "लदाना" पाप्त हुआ। इस वशमें भी उत्तमोत्तम वीर हुए जिन्हाने यथासमय आमेर और जयपुर राज्यकी अच्छी सेवा की थी। विशेपकर मदनसिंहका पुत्र भरतसिंह वहुत विख्यात हुआ है, जिसने अमीरखा जसे दुदमनीय शत्रुको अपने साहस, पराक्रम एव कौशलसे युद्ध मोल ले कर नीचा दिखाया। इसी वशके ठाकुर नाहरसिंहने 'लावा' प्राप्त किया। उस समय 'लावा' एक छोटासा ग्राम मात्र था और जयपुर राज्यके अधीन टोक तहसीलके अतगत था। जव टोक अमीरखाको दे दिया गया तव लावा टोकके नीचे आ गया। तवसे ही लावा इन पठानकी आँखका शूल हो गया। इन्हाने लावाको छीन लेनेके प्रयत्न किये किन्तु नरूके राजपूतोके सगठन एव वीरतासे असफल रहे। ठाकुर नाहरसिंहकी तीसरी पीढ़ीमें ठा देवीसिंह और

---

* इरानके वादशाह नौशीरवाका पौत्र खुसरो राज्यच्युत हो कर निकल गया था। वह रूमकी शीरीको व्याहा था। फिर सैनिक शक्ति बढ़ जाने पर उसे फिर राज्यलाभ हो गया। जिस दिन राज्यलाभ हुआ उस दिन ज्योतिषके हिसाबसे चद्रमा मीन राशीमें था। मीनका स्वरूप मछली जैसा माना गया है। ऐसी स्थितिको अच्छा शकुन समझ कर खुसरोने मच्छी और चादसे मिले हुए चिन्हको "शाहीमुरातव" नामसे प्रसिद्ध किया। खुसरोने ऐसे चिन्हके चादी सोनेके झण्डे बनवा कर उन सरदारोंको दिये जिनका आदर सत्कार सर्वोच्च श्रेणीका था। खुसरोके पीछे देहलीके मुगल वादशाहोंने भी उसका अनुकरण किया।

यह वृत्त श्री शिवनारायणजी सक्सेना वी ए भूतपूर्व सब जज जयपुर राज्य द्वारा प्राप्त हुआ है। सक्सेनाजी कुछ दिन लावामें भी कार्य कर चुके हैं।

विजयसिंह हुए। ठिकानेका स्वामी देवीसिंह हुआ। एक समय शिवजीके मंदिरमे ठा विजयसिंह ध्यान कर रहा था। टोंकसे दो सरकारी मुसलमान कर्मचारी आ कर जूते पहने मंदिर के चबूतरे पर चढ गये, मना करने पर भी नहीं माने और खानेको वहीं बैठ गये। तब ठा. विजयसिंहने अपनी तलवारसे एक मियाँका काम समाप्त कर दिया और दूसरा भाग कर टोंक पहुँचा जिसने इस कांडकी सूचना नवाबको दी। नवाबने अपने चुने हुए सिपाहियोंकी एक टुकड़ी सेना लावा पर आक्रमण करनेको भेजी, किन्तु वह सेना लावाका मार्ग भूल कर लावासे ४ मील उत्तरकी ओर टोंक हीके एक बगड़ी नामक गावमे पहुँच गई, जहाँ छोटासा लावा जैसाही एक किला था, उसको तोपोंसे ढाह दिया। दूसरे दिन ज्ञात होने पर बहुत पश्चात्ताप किया गया। कुछ समय पश्चात् लडाई रुक गई। विक्रम स. १९२३ तक ३ लडाइयाँ टोंक वालोंके साथ हुई, परन्तु टोंक वालोंको हर समय मुँहकी खानी पडी। जब टोंकका नवाब लावाको विजय नहीं कर सका तो संधिके लिए नवाबने ठा देवीसिंहको एक पत्र लिख कर भेजा। लावासे कुछ व्यक्ति टोंक गये और 'लावा हाऊस' टोंकमें ठहरे। यह २३ व्यक्तियोंका एक समुदाय था जिसमे ठा देवीसिंह और विजयसिंहजी थे। नवाबसे मिलने ठा. विजयसिंह गया, जिसके साथ ११ व्यक्ति थे। ठा देवीसिंहको भी बातचीतके लिए बुलाया गया था, किन्तु वह गया नहीं। भेट करनेके लिए जो महल चुना गया था उसके चारो ओर बारूद बिछा दी गई थी। जो दो व्यक्ति भेटके लिए बुलाने गये थे उनमेंसे एक व्यक्ति नवाबको सूचना देनेके लिए इन लोगोंको उस महलमें छोड कर चला आया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी नवाब भेंटके लिए नहीं आया तब वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बहाना कर जाने लगा तो ठा विजयसिंहने उसे जाने नहीं दिया क्यो कि उसे इस षड्यन्त्रका कुछ कुछ आभास हो गया था। अत ठा विजयसिंहने उस व्यक्तिको तलवारसे वहीं समाप्त कर दिया। इतनेमें बारूदमे आग लगा दी गई। वह महल उड गया और १० व्यक्ति ठाकुरके समुदायके मारे गये, एक मीना बचा, जिसने दौड कर लावा हाउसमे समाचार दिये। वहाँसे ठाकुर देवीसिंह रातोरात पैदल भाग कर लावा आये। आते ही देवलीके पोलीटिकल ऐजेण्टको सब समाचार लिखे। पोलीटिकल ऐजेण्ट, देवलीने जाच की और लावा वालोंका उसे कोई दोष दिखाई नहीं पडा। उसने नवाबको इस अपराधमें सजा दी और अमीरखांके पौत्रको नवाब बनाया। साथ ही सं. १९२३ वि मे 'लावा'को टोंकसे अलग कर 'चीफशिप' नियत की। तबसे लावा भारतके स्वतंत्र होनेसे पूर्व तक सीधा ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे सबंधित रहा। देवीसिंहके पश्चात् लावाके स्वामी ठा. धीरतसिंह, इसके बाद रावबहादुर राजा मंगलसिंह, इसके पश्चात् राजा रघुवीरसिंह और आजकल वंशप्रदीपसिंह हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि नरूसिंहके दूसरे पुत्र राव लाला थे। राव लालाके ऊदा (उदयसिंह), ऊदाके लाड़सिंह लाड़सिंहके फतहसिंह, फतहसिंहके कल्याणसिंह और कल्याणसिंहके तीन पुत्र हुए; रामसिंह, आनंदसिंह और अजबसिंह। कल्याणसिंह मिर्जा राजा जयसिंह

(आमेर)के पुत्र कीर्तिसिंहके पास रहते थे। सम्राट औरंगजेबके समयमें कुंवर कीर्तिसिंहके साथ कई युद्धोंमें कल्याणसिंहने अपने पराक्रमका अच्छा परिचय दिया, जिनसे प्रसन्न हो कर सम्राट औरंगजेबने इनको 'राजा'का पद और कुछ गाँव जागीरमें दिये। कुंवर कीर्तिसिंहके परलोकगमनके पश्चात् निःसहाय और दुर्दशाग्रस्त हो कर आमेर आये। यहाँ इनको रावकी उपाधिके साथ माचेडी नामक ग्राम जागीरमें मिला, इसके साथ ही डेढ ग्राम और मिला। इस प्रकार कुल ढाई ग्रामकी जागीर मिली। कल्याणसिंहके पश्चात् इसका उत्तराधिकारी आनंदसिंह हुआ। आनंदसिंहका तेजसिंह, तेजसिंहका मुहब्बतसिंह, और मुहब्बतसिंहका उत्तराधिकारी प्रतापसिंह हुआ। यह प्रतापसिंह बडा पराक्रमी, कुशल, साहसी एवं महत्वाकांक्षी था। इसने ही अल्वर राज्य स्थापित किया। इसका वृत्त इस प्रकार है कि जयपुरके तत्कालीन महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथमसे इनकी किसी बातमें अनबन हो गई। यह अपनी ढाई ग्रामकी जागीर माचेडी छोड कर भरतपुरमें जवाहरसिंह जाटके पास चले गये। वहाँ कुछ समय रह पाये थे कि जयपुरकी सीमामें बिना पहिले सूचना दिये चले आनेके कारण जवाहरसिंह जाट और सवाई माधवसिंह प्रथममें मावंडेके मैदानमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें प्रतापसिंहने अपनी सेना सहित जयपुरका साथ दे कर बडा पराक्रम प्रदर्शित किया, जिससे महाराजने प्रसन्न हो कर माचेडीकी जागीर वापिस दे दी। महाराज सवाई प्रतापसिंहसे फिर इसका मनमुटाव हो गया। इस कारण महाराजने फिर माचेडीसे निकाल दिया। अब यह सीधा देहलीके बादशाह शाहआलम द्वितीयकी शरणमें गया। शाहआलमने इसका अच्छा आदर-सत्कार किया। उसने सं. १८२७ वि. में महाराव राजाकी पदवी, पंच हजारी मनसब और शाहीमरातबके साथ माचेडीकी सनद कर दी। जिससे जयपुरसे स्वतंत्र होनेका अवसर प्राप्त हो गया। फिर इसने समय पा कर जयपुर और भरतपुरके परगने दबा लिये, और सं. १८३२ वि. में भरतपुरसे युद्ध कर अलवरका प्रसिद्ध और परगना भी छीन लिया, इसके पश्चात् अपनी राजधानी माचेडीसे अलवरमें बनाली। यह सं. १८४७ वि. में निःसंतान मरे, अतः थाना ठाकुरके पुत्र बख्तावरसिंह गोद आकर उत्तराधिकारी हुए। राज्यासीन होनेके पश्चात् बख्तावरसिंह तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहके पास जयपुर आए और जयपुर राज्यके दबाए हुए ग्रामोंका महाराजको भेंट कर दिया जिससे महाराज बहुत प्रसन्न हुए। सं. १८६०में अंग्रेजोंको युद्धमें सहायता देनेके उपलक्ष्यमें अंग्रेजोंसे कई परगने राजा बख्तावरसिंहको प्राप्त हुए और इनके समयमें अंग्रेजोंसे सन् १८०३ ई. में संधि हुई थी जिसमें वापिस करार बचन नहीं रखा गया। इनके पश्चात् सं. १८६१ वि. में इनके पुत्र विनयसिंह सिंहासनासीन हुए, जिन्होंने द्वितीय लावा युद्धमें सहायता भेजी और उन् ५७ के गदरमें अंग्रेजोंकी अच्छी सहायता की। इनके स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र शिवदानसिंह सं. १९१८ वि. में सिंहासनारूढ हुए। इनके पश्चात् सं. १९३१ वि. में मंगलसिंह राजा हुए। मंगलसिंहके पश्चात् सं. १९५९ में प्रसिद्ध जयसिंह गद्दी पर बैठे। ये बडे विद्वान्, प्रभावशाली एवं राजनीतिज्ञ थे। सन् १९३१ ई. की गोलमेज परिषदमें इन्होंने निर्भीकता पूर्वक अपने विचार रखे, जिसके कारण अंग्रेज सरकार इनसे नाराज हो गई और यह अल्वर

शोधकी अपेक्षा रखता है। अस्तु, कुछ भी हो यह प्रसिद्धि तो इन नरूकोके साथ है ही।

नरूका वंशीय राजपूत, राजपूतोंमें प्रसिद्ध वीर, पराक्रमी एवं साहसी हैं। इनके सत्साहस व वीरतापूर्ण कार्योंके कारण कई कहावतें इनकी प्रशंसामें प्रचलित हो गई हैं। उनमेंसे ये दो अत्यन्त उच्च कोटिकी हैं—

(१) "नरूकको नरूका मार, और कै मारै करतार।"

(२) "नरूको कटारी न्याय बांधे, तखतका धणीसू तोड सांध।"

वास्तवमें इन नरूकोंके यशका वर्णन कई कवियोंने कई प्रकारसे कर मां भारतीकी सेवा की है। प्रस्तुत ग्रंथ "लावारासा" में वर्णित प्रसंगोंके समय पिंडारी व पठान दस्युओंके आतंकसे राजस्थान बडी ही डांवाडोल स्थितिमें हो गया था। स्थान स्थान पर राजस्थानीय जनताके जानमालकी बहुत ही हानि हुई थी। इन दस्युओंका दमन करनेकी शक्ति उस समय किसी भी राजस्थानीय रियासतमें नहीं थी। ऐसे विकट अवसर पर इन नरूकाओंने स्थान स्थान पर, केवल अपने बाहुबलसे, इन क्रूर दस्युओंसे मुकाबला कर जो वीरत्व प्रदर्शित किया है, वह प्रशंसनीय एवं गौरवयुक्त कैसे नहीं कहा जा सकता? उस वीरत्वने कवियोंकी वाणीको जनताकी ओरसे कृतज्ञता ज्ञापन करनेके लिए बाध्य कर दिया। परिणामस्वरूप नरूकोंकी प्रशंसामें स्फुट छंदों और प्रबंध ग्रंथोंका निर्माण हुआ। 'लदाना' (माधोराजपुराका घेरा) और द्वितीय लावा युद्ध विषयक वर्णन अन्य कवियोंके भी प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय दे देना अप्रासंगिक न होगा।

संवत १८७८ वि०में (लदाना युद्धकी समाप्तिका वर्ष) महाकवि श्रीकृष्ण भट्टके प्रपौत्र महाकवि मंडनने २१५ छंदोंमें (दोहा, सवैया, कवित्त, चौपैया, झूलना, अड़िल्ल, पादाकुलक और सारंग) "भारतचरित्र"का निर्माण किया था। इसमें सर्वप्रथम चौपैया छंदमें जगदम्बाकी स्तुति की गई है। फिर रवि कुलके वंशक्रममें प्रसिद्ध प्रसिद्ध रघुवंशियोंके नाम देते हुए, इस कुलमें नरूसिंहका जन्मवर्णन देकर भारतसिंहके पूर्वजोंके नाम प्रशंसा सहित दिये गये हैं। कविके अनुसार उनका क्रम इस प्रकार है— नरूसिंह, दासा, करमचंद, नम्मल, कान्हासिंह, केशवदास, उग्रसिंह, रघुनाथ, अजबसिंह, मुकुंदसिंह, केसरीसिंह, सावंतसिंह, मदनसिंह, और भारतसिंह। भारतसिंहकी प्रशंसाके पश्चात्, लावा युद्धमें जो भारतसिंहने पराक्रम दिखाया था उसका वर्णन दिया गया है। इसके पश्चात क्रमसे भारतसिंहका माधोराजपुराके किलेको, महाराज व जगतसिंहकी महारानीसे, जो महाराज मानसिंहकी पुत्री थी, छीन कर अपने अधिकारमें करना, महाराज मानसिंहका अमीरखांको किला वापिस दिलानेके लिए लिखना, अमीरखांका भारतसिंहको किला वापिस दे देनेके लिए लिखना, भारतसिंहका अवसर पा कर अमीरखांके दोनों बच्चोंको पकड कर माधोराजपुरके किलेमें ला कर

रखना, अमीरखाकी चढाई और किलेको घरना, नरूके राजपूतोंका स्थान स्थान से आ कर इस युद्धमें सम्मिलित होने आदिका वर्णन दे कर कविने युद्धवर्णन, अरि पलायन वर्णन, प्रतापवर्णन, सुयशवर्णन, हयवर्णन, गयवर्णन, तरवार वर्णन, दानवर्णन, दिनचर्या वर्णन, आशिर्वाद और ग्रथ निर्माण वर्णन दे कर, ग्रथ समाप्त किया हैं। पाठकोके रसास्वादके लिए इस ग्रथके कुछ उद्धरण देना अनुपयुक्त न होगा।

॥ श्रीगणेशायनम ॥

अथ भारत चरित लिख्यते। तहाँ प्रथम मगलाचरण।

छद चौपैया

जगदम्व भवानी, सव जग जानी, रगभरी सरसानी ;
नित सुखसो सानी, रहत अमानी, ब्रह्मवखानी, रानी।
सवकी है कारन, दीखत पार न, वैरिन फारन गानी ;
सुख सपति सरसै, सव गुन वरसै, देवनने मन आनी॥
मुडलकी माला, सोहत आला, सिंघ विसाला चढ्ढी ,
देवनके तारन, रक्कस मारन, तरल तेग जिंहि कढ्ढी।
हाथिनकी छाला, वसन रसाला, नैंन महा मद मढ्ढी ;
सेवकको सुदर, करन पुरदर, दैन अभय वर पढ्ढी॥
नैननमे ज्वाला, रहत उजाला, तीन भवन प्रतिपाला ,
आनदकी साला, प्रगट विलाला, जगमगात ससि भाला।
सुदर मुख सोहे, मनकू मोहे, हार मुकत भरि थाला ;
सांपन के गहने, अगन रहने, भगत इच्छको ढाला॥
जा विन कोई, पहिले होई, महाकालकी प्यारी ,
अगनकी सोभा, मनकी लोभा, कोटिन ससि उनिहारी।
माँसनके परवत, खात सु सरवत, पिवत रुधिर रस भारी ,
वेदनमे राजे, सव गुन छाजै, कोटिन रवि छवि धारी॥
ऐसी यह वानी, चरित अगानी, कवि 'मडन' मुख आई ;
पारथ सम भारत, को भरि आरथ, चरित सुभग वनवाई।
रसमय धरि वाते, जीति सुनाते, छदवद छवि छाई ;
भल आफताव, महताव प्रतापहि, सुजस जगत सरसाई॥१॥
सग रजा महमद अकव्वर औ महताव फजल्लहि गायो;
सेर महा जमसेर, आखूनहि आदि जमैयतसो सरसायो।
तोवनकी दिय मार, धमाधम केते दिनान लो वव वजायो;

भारथ तेग नचाइके 'लावा' सो वीरखांमीरखा मारि चलायो ॥५४॥

जासों सदा अगरेज डर्‌यो कर, मीरखासो निज सन सजाई,
घेरा दियो चढि नाइके लावाके गालनको वरछार देखाई।
'मडन' हल्ले किये कितने जहाँ भारथने तहाँ तेग नचाई,
काटि पठाननके गन सभूको मुडकी माल गरे पहराई ॥५५॥

कोइ न जिनके लख न नख ननसो, तिनको मिले न अब पन्हनका तनियां।
सोती सुख सेजनपै सदा अब भूखी भई, फिरत हू दखती दुकाननमें बनिया।
'मडन' महीन्द्र राव मदनके भारतने, कीनी हू किलेकनको हूर हूर कनियां।
दुखनसो छाय घर जाय जाय दुनियोंके, पनिया भरन लागी सब तुरकनिया ॥१५२॥

यह भारतको चरित म, कीनो मति अनुसार। भूलचूक जो होय सो, लीजौ सुकवि सुधार ॥२०७॥
राजकाज सगरो लिख्यो, सब जुद्धकी रीति। जग जीति मडन' कही, भरथसो कर प्रीति ॥२०८॥
कह्यो अरिनको नास यहाँ, कह्यो तेगको ताव। जस प्रतापके सग सब, कह्यो रनको भाव ॥२०९॥
कहीं फौज सब गढ कह, मगिया कहीं उदार। हाथी हय हाजर कह, कह्यो नाच रगधार ॥२१०॥
दसरथ नप सुत रामसिय, दाउनको रँगरूप। 'मडन' कविने सब कह्यो, लिखिक छद अनूप ॥२११॥
नौजै रस यामें धर, लखि हू रसिक सुजान। नखसिखसो ईहि ग्रथमें, लिखि भारथके गान ॥२१२॥
सब विधिसो सगरे चरित्त कह ग्रथ बधि जाय। तात यह सछपसो लीनह ग्रथ बनाय ॥२१३॥

आशिर्वादवर्णन कवित्त

जागे का हुमस बैम जगनके जीतिवेके, हाथिनमें सीसपे निसान चढिवो करो।
कचनमो मोती मनि मानिककी सपत्तिमौं, मुल्क औ मवास मढिवो करो।
"मडन" असीस दक मानी मानि मोज लक, गढि गढि छदनके बध पढिवो करो।
गगा सम मुजस गमेत राव भरथका, रन दिन प्रबल प्रताप बढिबो करो ॥२१४॥

सवत दस सत आठ मत, चोहोतर सावन मास। सुदि तृतियाके दिन कियो पूरन चरित प्रकास॥२१५॥

इति श्रीमद्विद्रत्कुल चडामणि कविकलानिध्यपरनाम श्रीकृष्णमहात्मज कवि सरस्वत्ययाभिधय द्वारिकानाथ सूनू कवि ब्रजपाल तनय देवपिवर मडन कवि विरचित भारत चरित्र सम्पूर्णम्।

दूसरे ग्रथमें लावाके द्वितीय युद्धका वणन लावानरश मालसिंहके समयमें अल्वर रियासतके गूजरोंके निवासी गालावक्ष कवि 'नम्बुल मुवा' नामसे १३४ पमाल छदमें किया ह। इस छोटमें ग्रथमें कवि, मगलसिहका यशवणन करनके हतु जगदम्बाकी प्राथना करता है। तत्पश्चात् लावाके बाहर तलाबके किनारे शिव मदिरका वणन, करणसिहका पूजा, एक मुसलमानका मदिरमें जूत पहिने आन, करणसिहका उस पर कटारीस आक्रमण करन, मुसलमानका करणसिहका तलवारसे मारजान, इस घटनाके समाचारका लावा पहुंचन, और वहान कुछ भुजटाके आन और मुसलमानोंका मार डालन, एक यादवका वच कर टोक जा कर वजीरद्दौलाका पुकारने, और उसके लावा पर चढाई करनका कविने वणन किया ह। इसके बाद कविन टोकक हाथी, घोडे और सेनाका, लावाके वीरोंका,

इस युद्धमें सहायताके लिए जो आये उनके नाम, उणियारे और अलवरकी सहायताका और उनका युद्धवर्णन दे कर अतमें मगलसिहकी प्रशसामें ग्रंथ समाप्त किया है।

अव अतमें यह सूचित कर देना उत्तम होगा कि इस ग्रंथके पृ० ६ के छन्द सख्या ३४ में, पृ० १३ के छद सख्या ४३ में, और पृ० २३ के छद संख्या ३५ मे जो स्थान रिक्त दिखाये जा कर पदोकी अप्राप्ति दिखाई गई है वह ठीक नही है। वास्तवमें मेरे पास जो हस्तलिखित प्रति थी उसमें दोहा, सोरठा, और छप्पय छदके अक्तिरिक्त पद्धरि, मोतीदाम, भुजगप्रयात आदि छदोंके दो दो पदों पर ही छद सख्या दी गई हैं। यह मुझे ठीक मालूम न होनेके कारण छदशास्त्रानुसार छदके चार चार चरण ले कर मैंने पदो पद छदकी सख्या दी। इस प्रकार करनेसे इन छदोमें कही वाद एक चरण कम हो गया, मैंने यह समझा कि प्रतिलिपिकारकी भूलसे यह चरण लिखनेसे रह गये हैं, अतः भविष्यमें दूसरी प्रति मिलने पर ठीक कर सकने के लिए रिक्त स्थान दिखला कर पद कमीकी सूचना दी। किन्तु पुस्तक प्रेस में चले जाने और मुद्रित हो जाने पर श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी महाराजको, लावारासाकी एक अन्य प्रति श्रीयुत ठा० सौभाग्यसिह जी, भगतपुराके सौजन्यसे प्राप्त हुई, उसे देखने पर सव समझमें आ गया। कविने मोतीदाम, पद्धरि, भुजगी, निसाणी आदि छंदोके १०–१२–१४ जितने भी पद वनाये उनकी एक ही छद सख्या दी है। अत' अन्य प्रतिके अभावमें यह जो भूल हो गई उसके लिए पाठक क्षमा करेंगे।

इस ग्रथ 'लावारासा'में शव्दार्थ व टिप्पणियोंके देनेमें मुझे स्वर्गीय श्रद्धेय हिंगलाजदानजी सेवापुरा वालो तथा श्रद्धेय वारैठ मुरारीदानजीसे पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। दूसरे शव्दोमें यह कहा जाय कि यह कार्य इन्हीं दोनो महानुभावोका है तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। मैं तो आप दोनो महानुभावोकी कृपाके लिए सदा ही कृतज्ञ रहूँगा। इसके अतिरिक्त ग्रथ की भूमिका लिखनेमें श्री हेनरी टी. प्रिंसेप साहवके अमीरनामेके अंग्रेजी अनुवाद, ठा नरेन्द्रसिहजीके Thirty decisive Battles, मुन्शी देवीप्रसादजीके "आमेरके राजा" श्रीहनुमान शर्मा चौमूके "नायावतोका इतिहास" श्री नामनाथ रत्नूके "इतिहास राजस्थान," और श्री असगरअली आवरूके "तवारिखे महमूदावाद"से सहायता ली गई है। अतः इन महानुभावोका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। भूमिकाके सशोधनमे श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी महाराजका पूर्ण हाथ रहा है तथा पुस्तकके प्रुफ सशोवन और सपादन कार्यमे उचित परामर्शके लिये श्री पुरुपोत्तम लालजी मेनारीया, साहित्यरत्न और श्री गोपालनारायणजी पारीक एम ए. का पूर्ण आभारी हूं।

वास्तव में, प्रस्तुत ग्रन्थको, इस रूपमें प्रकाशित करने-कराने का सव श्रेय श्रद्धेय मुनिजी महाराज श्री जिनविजयजी को है जिनने **राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थावलि** द्वारा इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर, और समय समय पर कई प्रकारकी प्रेरणाएं दे-कर, मुझे प्रोत्साहित किया। मैं इसके लिये, अन्तमें पुनः मुनिजी महाराजके प्रति अपना अनन्य कृतज्ञभाव प्रकट करता हूं।

–महताव चंद्र खारैड़

कविया गोपालदान विरचित

कूर्म वंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावा रासा

—०—

दोहा

अलिक इंदु कुंजर तुचा, मुंडमाल वपु छारि ।
अहि भूषन विजया भखी, जय जय जय त्रिपुरारि ॥१॥
किये नरूकन किलम भिरि, किते जुद्ध उन्मत्त ।
प्रथम 'मान' 'जगतेस'की, कहूँ केलि कलहत्त ॥२॥
जग प्रसिद्ध 'जयसाह' नृप, तिनके 'मधव' नरेश ।
'माधव'के 'परताप' नृप, पातिनके जगतेश ॥३॥
उठी 'मान' पति जोधपुर, जैपुर-पति 'जगतेश' ।
पर्यो बैर नृप दुहुन उर, हिय कंपिय दुहु देस ॥४॥

---

१. अलिक = अलीक, निष्कलंक । कुंजर = हाथी । तुचा = त्वचा, चमड़ा । छारि = राख । विजया = भंग । भखी = खाने वाले ।

२. नरूकन = नरूके राजपूत । किलम = कलमा पढ़ने वाले मुसलमान । भिरि = भिड़ कर । मान = जोधपुर नरेश मानसिंह राठौड़ जिन्होंने सं० १८६० से १९०० तक राज्य किया । जगतेश = जयपुर नरेश जगतसिंह कछवाहा जिन्होंने सं० १८५८ से १८७५ तक राज्य किया । कलहत = युद्ध ।

३. जयसाह = सवाई जयसिंह जिन्होंने जयपुर बसाया और अनेक स्थानों पर ज्योतिष के यंत्रालय बनाए । मधव = महाराजा माधवसिंह प्रथम जिन्होंने सन् १८०७ से १८२४ तक राज्य किया । परताप = महाराजा प्रतापसिंह ब्रजनिधि कवि ।

४. उठी = उस तरफ । बैर = शत्रुता ।

चाँपावत पोकरण-पति, प्रवल 'सवाई' खिज्ज ।
वदल चढ़्यो नृप मानसों, वह्यो कलहको विज्ज ॥५॥
कलह विज्ज ता दिन वह्यो, लांरां 'धूकल' लाय ।
आनि मिल्यो 'जगतेश'सूँ, यम जुत्र करिय उपाय ॥६॥
साम दाम छल-छिद्र करि, नृप हिय रुचि उपजाय ।
मनहु मेघ वसि वात मंडि, चढ़्यो कच्छ-कुलराय ॥७॥
चढ़्यो सुनत 'जगतेश'कों कही 'मान' यह वत्त ।
हय फेरहि कछवाह धर, जीति करहि अपदत्त ॥८॥

छंद नाराच

चढ़्यो नरिन्द मानयं, उदै दिशा प्रयानयं ।
मनो समुद्र ऊझले, रठौर आनि के मिले ॥९॥
वजे निशान नद्दवं, मनो कि घोर भद्दवं ।
उछाह जुद्धको वढ्यो, कनोज-ईश लों चढ्यो ॥१०॥
सुभट्ट सख्ख सक्खरं, ऌसंग लक्ख पक्खरं ।
धरा अडोल डुल्लयं, गजूं निशान खुल्लयं ॥११॥

---

५. पोकरणपति = पोकरण (मारवाड़) के स्वामी सवाईसिंह । खिज्ज = क्रोधित होकर । वदल = खिलाफ होकर । वह्यो = योया गया । विज्ज = वीज ।

६. लांरां = पीछे । धूंकल = धोंकलसिंह जिनको जोधपुरकी गद्दीका हकदार वनाकर युद्ध हुआ । यम = इस प्रकार ।

७. वात = हवा ।

८. वत्त = वात । हय = घोड़ा । अपदत्त = अपदस्थ, अपमानित ।

९. उदै दिशा = पूर्व दिशा । ऊझले = उझलना, उफणना, मर्यादा छोड़ना ।

१०. नदवं = नाद, शब्द । भदवं = भाद्रपदके मेघ । लों = इस प्रकार । कनौज ईश = राठौर पति मानसिंह ।

११. सख्ख, सक्खर = श्रेष्ठ शाखाके । लक्ख = देख कर । पक्खरं = पाखर । गजूं = हाथियोंके ।

रजीनि भान रुक्कयो, मनुऽधकार मुक्कयो।
विछोह चक्क चक्कय, अनेक वीर वक्कय ॥१२॥
विमान व्योमतें फुरे, अनेक रंभ उत्तरे।
महेस मुंडमालको, चल्यो करीनि खालको ॥१३॥
असोम जन्न लैं मुनी, अलापि वीरकी धुनी।
मनूक बालको गुडी, अनेक ग्रद्धनी उडी ॥१४॥
सरव्वत चमू जुरे, परव्वत सर परे।
उडीक मान कैं पती, चढ्यो न क्यो जगत्पती ॥१५॥

दोहा

यम आगम सुनि 'मान'को, 'परवतसर' जुध थप्प।
त्रेपन तुड कछवाह-कुल, मिले आनि अप अप्प ॥१६॥
'अभयसिंह' नृप खेतडी, चढे जु दलको सज्जि।
'लिछमण' चढियो 'महणसर', पूर नगारे वज्जि ॥१७॥

छप्पय

'रायचंद' दीवान, 'रावचंदह' गोगावत।
'लछो' फतेपुर नाथ, रावराजा शेखावत ॥
राजापति 'खडपुर,' 'नवल' 'दाता,' पति निडुर।

---

१२ रजीनि = रजसे। भान = भानु, सूर्य। मुनऽधकार = मानो अधकार। मुक्कयो = छूट गया हो, फैल गया हो। विछोह = वियोग। चक्क = चकवा। चक्कय = चकवी। वक्कयं = बोलने लगे।

१३ रंभ = अप्सराएँ। करीनि = हथनियोंकी। खालको = चमड़ेके लिए।

१४ असोम = अशात, नारदकी वीणाका नाम। बाल = बालक। गुडी = पतंग।

१५ सरव्वत = सब। चमू = फौज। परव्वत = पर्वतसर गाव। उडीक = उडीकना, इन्तजार करना। पती = इतनी।

१६ यम = इस प्रकार। थप्प = स्थापित करके। त्रेपन तुड = तरेपन शाखाओंके। अप अप्प = अपने आप।

१७ खेतडी = राजपूतानेमे शेखावाटी प्रातका एक प्रसिद्ध नगर जिसके शासक राजा कहलाते हैं। महणसर = शेखावाटीमे ठिकानेका एक गाव।

पद्धरको पति साह 'भीम' 'उनियारे' अड्डुर ॥
'धूलो' 'झिलाय' राजावता, 'नाथावत' खांगा मिले ।
जोधपुर कवन दिल्ली तखत, एक पहर विच उत्थलै ॥१८॥
त्रेपन तुड कछवाह, साख साखारां सुभट्टां ।
हैदल पैदल मिले, यवन हिन्दु गज थट्टां ॥
'वीकां' पति 'सुरतेश' आनि मिलियो मधि जैपुर ।
रहे आनि हकदार, किते गजवंध नरेसुर ॥
हैदरावाद सिधी हुलखि, सवल जांनि सरनो गह्यो ।
हुय दीन तदिन जगतेशके, मीरखान चाकर रह्यो ॥१९॥

दोहा

मीरखान चाकर रह्यो, जदन भूपके सत्थ ।
तदन वध्यो वट वीज लों, कहूंस आगम कत्थ ॥२०॥

छन्द त्रोटक

जगतेश फवज्ज प्रवंधु करे, भुव कंपित भार दिगीश डरे ।
मन आन महीपनके प्रजरे, किनपै वसधा-पति कोप करे ॥२१॥

---

१८. लछो = लछमणसिंह सीकरके राव राजा। खंडपुर = खण्डेलेके स्वामी। नवल = नवलगढ़के स्वामी। दांतां पति = दांतां नामक ठिकाणेके स्वामी, यह जयपुरसे पश्चिम में है। निड्डुर = निडर। पद्धरपतिसाह = नरुके राजपूतोंको पाथरके बादशाह कहते हैं। उनियारे = जयपुरसे दक्षिणपूर्वमें है। धूलो = यह जयपुरसे पूर्वमें है। झिलाय = यह जयपुरसे दक्षिणमें है। ये सब जयपुरके ठिकाणोंके नाम हैं। उत्थलै = उथलना, विजय करना।

१९. हैदल = घुड़सवार फौज। थट्टां = समूह। वीकांपति सुरतेश = वीकानेरके स्वामी सुरतसिंहजी जिन्होंने सं० १८४६ से १८८५ तक राज्य किया। मीरखान = अमीरखां पठान, जिसको अंग्रेजोंने इस युद्धके पश्चात् टोंक आदि इलाका दिलवाकर नवाव वनाया। चाकर = नौकर। हैदरावादी सिंधी = हैदरावादी रिसाला नामक सेना दल जो रुपयेके प्रलोभनसे लड़ा करता था और लूटमार करता था।

२० जदन = जिस दिन। सत्थ = साथ। तदन = उस दिनसे। वध्यो = बढा। वट वीजलों = वड वृक्षके वीजकी तरह।

२१. फवज्ज = फौज, सेना। आन = अन्य। प्रजरे = प्रज्वलित हुए।

मव शत्रुनके उर शोक बढयो, करि कोप कठी कछवाह चढयो ।
अप अप्प उकीलन खत्त लिखे, जयनग्र मडोवर ईश धखे ॥२२॥
धखि लोयन कोयन खून भरे, दहुघा उन्मत मतग अरे ।
करि कोप चढ्यो नृप मान उठी, उमड्यो घनलो कछवाह अठी ॥२३॥
सुनि ठोर परी सदनद्दनके, परि ढिल्लिय सोर रवद्दनके ।
सब सूर सनाहनि टोप सजे, लखि आतुर कातर प्रान तजै ॥२४॥
सत पच करीगन कोर बने, मनु कज्जल कूट बरागमने ।
लख तीन हय सपतासनती, रथ पक्तिनकी न भई गिनती ॥२५॥
अयुत शर ऊटन सोर भरे, शत पोडश तोप तयार करे ।
जकरे शत जोम जवान भुजा, करि मजन धूपि नवीन धुजा ॥२६॥
द्विज आनि लिखे जय जन्त्र जिते, पढि के शत चडिय जाप किते ।
मुख मडि सिंदूरनि रत्त किये, अज एड महिष्पन भक्ख दिये ॥२७॥
जरदोजनि हेम ध्वजा सरफै, तडिता घन बीच मनो तरफै ।
ललकार मुखाँ सत जुट्टि लगी, इभ भष्पनि बाघनि सी उमगी ॥२८॥

---

२२ कठी = कहा, किस पर । उकीलन = वकीलोंको । खत्त = खत, पत्र । धखे = क्रोधित हुए ।

२३ धखि = क्रोध करके । मतग = हाथी । उठी = उस तरफ । अठी = इस तरफ । दुहुघा = दोनों तरफ ।

२४ सदनद्दनके = युद्धके नगारे । ढिल्लय = दिल्ली । रवद्दनके = मुसलमानोके । सूर = शूरवीर । सनाह = बख्तर । कातर = कायर । ठोर = चोट ।

२५ सतपच = पाच सौ । करीगन = हथियोंकी । कोर = किनार, पक्ति । लखतीन = तीन लाख । सपतासनती = सप्ताश्वोंके सन्धी ।

२६ अयुत शर = पन्द्रह हजार । जकरे = पकडे हुए । जोम = जोश । धूपि = धूप देकर सोर = बारूद ।

२७ अज = बकरे । एड = मेंडा । महिष्पन = भैंसे । भक्ख दिये = बलि दी ।

२८ सरफै = सर सरावै उडै, हिलैं । तडिता = बिजली । इभ = हाथी ।

भरि पेटिय सोर महोरह की, मछ शूकर वाघ मुखी मलकी ।
मग दीरघ तोप किती मचलैं, उन्मत्त करीगन लागि टलैं ॥२९॥
भिरि पाहन नालन आगि भरै, हय-पौरन भूमि दरार परैं ।
सर वापिय कुप्पन सुक्क परै, थलवित्थुल नीर थलो निकरे ॥३०॥
मुनि सिंधुनि तोय ततो उछरे, डुलि दीरघ अद्रिन अंग भिरे ।
सिर सेस हजार मनी सरकी, भर पीठ कमठ्ठहुकी थरकी ॥३१॥
गजराजनि पिट्ठि निसान खुलें, वर्षा ऋतु मानहुं सांभ फुले ।
अनु पाय पताक किते उरझे, उडि वात समूह मतै सुरझे ॥३२॥
भुव जन्तु मृगादि थके पकरैं, नभ जन्तु परू थकि भूमि परैं ।
उडि रज्ज धरा असमान गई, मनु भूमि पुकारन भार मई ॥३३॥
... ...
पचरंग रठौरनि दिठ्ठिरियं किय आनि मुकामहि मिठ्ठरियं ॥३४॥

दोहा

किया मुकामहि मिठ्ठरिय, लूटन लग्गे देश ।
'मानसिंह' 'जगतेश' दुहूँ, जुध कज चढे नरेश ॥३५॥

छँद त्रोटक

कछवाह रठोरनि कोप बढे, दुहूं ओर तुरंगन पिठ्ठि चढे ।
दुहुं ओर गाजों सिर ढाल खरी, चहुं ओर नगारन ठोर परी ॥३६॥

---

२९. सोर = बारूद । महोरह की = आगे की । मछ शूकर वाघ मुखी = मच्छी, सुअर और वाघके मुंहवाली तोपें । मग......टलैं = मार्गमें बड़ी २ कितनी ही तोप चल रही हैं जो मस्त हाथियोंके धक्कोंसे आगे बढ़ाई जाती है ।

३० पाहन = पत्थर । नालन = घोड़ोंकी टापमें लगा लोहा । पौरन = घोड़ेका खुर । वापिय = बावडियें । कुप्पन = कुअे । सुक्क परे = सूख गये । थल वित्थुल नीर थलो निकले = थलके स्थानपर पानी, और पानीके स्थान पर स्थल निकल आया ।

३१. मुनि = सात । उछरे = उछलने लगा । अद्रिन = पहाड़ । ततो = तति, समूह ।

३२. निसान = पताका, ध्वजा । अनुपाय = विना उपायके । मतै = अपने आप ।

३३ परू = परोंसे, पंखोंसे । मिठ्ठरियं = मीठडी नामक गांव ।

३६. नगारन ठोर परी = नक्कारों पर चोट पड़ने लगी ।

दुहु ओर वनी चतुरंग अनी, दुहु ओर करीनकि कोर वनी।
दुहु ओर पताकनि पंक्ति खुली, दुहु ओर हलाहल कोर हली ॥३७॥
दुहु, ओर उदग्गनि खग्ग किये, दुहु ओर तुरंगन वग्ग लिये।
ठनन किय कुंजर घंट सुनि, घनन किय पक्खर अट्ट घनि ॥ ३८ ॥
हनन किय आतुर होय हय, भनन किय भेरि भयान भय।
खनन किय खापन खग्ग तजी, सनन किय गिद्दनि पख सजी ॥३९॥
झनन किय झांझर रंभ झुरे, रनन किय तत्थ रठोर मुरे।
तिह ठोर रठोर अनी वदले, जगतेश नरेशहु आनि मिले ॥४०॥

दोहा

मानहु कुलटा आनरत, निज पति निवल निहारि।
सकल मिले जगतेशसू, एक कुचामनि टारि ॥४१॥

छंद पद्धरी

जुट्टे न मान राजान जंग, नच्चे न भूत वैताल संग।
वज्जी न तेग तुट्टे न वाढ, गज्जे न तोप मानहु अषाढ ॥४२॥
धक्के न वीर आरान आय, छक्के न श्रोन जोगनि अघाय।
खापन उखारि वाही न खग्ग, झोकी न तेग ताजी न वग्ग ॥४३॥
वज्जे न जंत्र मुनि मेक तार, अच्छर अनेक गई निराधार।
घायल असाद्धि डोले न घुम्मि, सानीन श्रोनते रंग भूम्मि, ॥४४॥

---

३७ अनी = फौज। कोर = पंक्ति।
३८, उदग्गनि = ऊँचे। खग्ग = खड्ग। वग्ग = वाग, लगाम। अट = आटिये, कड़ियें।
३९ खापन = तलवारका म्यान।
४० तत्थ = वहाँ। मुरे = मुड़ गये, वदल गये।
४१ कुचामनि = कुचामन वाले, कुचामन जोधपुरमें एक ठिकाना है।
४२ वाढ़ = तलवारकी धार।
४३ आरान = युद्धमें। छक्के = तृप्त होना। वाही = चलाई। ताजीन = घोड़े।
४४ मेक = एक। असाद्धि = असाध्य। सानी = सानना, भीगोना, गीला करना।

दोहा

तत्ती तोप न 'मान' किय, लिय न खग्ग जमदड्ढ ।
पूगो मुसकल जोधपुर, गढ़ चढ़ पकर्‌यो गढ्ढ ॥४५॥
लगो लैर कूरम कटक, मानुह सिंधु हिलोर ।
किय 'धूंकल' नागोरपति, दियो जोधपुर जोर ॥४६॥

छप्पय

मास त्रिगुन मोरचे, जगै मंडोरहि मंडिय ।
करि मुरधरा विरान,'मान' भुव हुकम उचंडिय ।
दे 'धूंकलं' नागोर, थान थाना अप थप्पिय ।
मानव पगां मिलाय, पहुमि राठोरन अप्पिय ।
नृप मान रह्यो तप वल तदन, धर्म रठोरन हारियो ।
जोधपुर हूंत जगतो नृपति, फिरि जयनग्र पधारियो ॥४७॥
तोरन कलश पताक, तानि वित्तान घरोघर ।
राजा द्वार उद्दार, इंद्र आगार सरोभर ॥
हाटकमय आवास, जटित मानिक मोताहल ।
दर परदे जरदोज, सयन अतलस्सां मुखमल ॥
खुलि यंत्र यंत्र धारा चलित, मिलि कपूर केशर मलय ।
शीतल सुगंध आनंदमय, मंद मंद मारुत चलय ॥४८॥
भूपति चित भामनी देह दामनि धरि दंभनि ।
मानहु कामनि काम, रंभ लाखि होत अचंभनि ॥
मिलि समूह गायनी, गमन उनमत्त करीसम ।
खरी भूप वसिकरन, आनि सव इंद्र परी सम ।

---

४५. तत्ती = गर्म । जमदड्ढ = कटारी ।

४७. उचंडिय = हटाकर । अप = अपने ।

४८. यंत्र यंत्र = फंवारे, फंवारे ।

वीणादि मधुर इत्यादि वर, सुखद लाय ध्वनि सुच्छंना ।
पचम निषाद सगीत मिलि, ग्राम ताल सुर मुच्छंना ॥४६॥
लक लचकि कुच उचकि, नृत्य गति वक्र सरल चलि ।
डुलि कुडल चख चलित, उरझि कुंतल हारावलि ॥
अग उलटि पट पलटि, कबु ग्रीवा करि वकित ।
थृग थृग ततथेय, बजत मजीरनि सकित ॥
सुर पच अष्ट वय भेद तिय, पच भावदश हाव युत ।
दपति प्रवीन रति कोक विधि, दिन छिनदा सभोग रत ॥५०॥
नहि मडै दरबार, रहत भूपति अतहपुर ।
कूरम दल विल्थुरिय, गमन अप अप्प घरोघर ॥
मद आसव उनमत्त, कमठ-कुलपति कामासय ।
'रसकपूर' वस भयो, एक रस उर अभ्यासय ॥
यम सुनिय वत्त पति जोधपुर, जैपुर पति नन सज्जियो ।
नृप मान तदन अवनिय अदन, मीरखान मत्री कियो ॥५१॥
कपट द्रोह करि किलम, प्रथम मारुस्थल लुट्टिय ।
बहुरि आन नागोर दगै 'स्वाई' सिर कट्टिय ।
तज 'धूकल' नागोर, मान-भय मानत भग्गो ।
भयो तदन दमजोर म्लेच्छ असमानह लग्गो ॥
नृप 'मान' वधु हुई मानकथ, किलम कुप्पि कीनो कहर ।
करि यद्ध प्रबल चतुरगनै, फिर लूट्टिय ढूढार धर ॥५२॥

इतिश्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल दान विरचिता मान जगतेश विरुद्ध प्रथम प्रसग समाप्त ।

---

४० सुर पच अष्ट वय = तीन पांच आठकी उमर वाली, पंद्रहवर्षीय बाला ।
४१ रसकपूर = जगतसिंहकी वेश्याका नाम । अवनिय = पृथ्वी, राजधानी । अदन = अदिन, बुरे दिन ।
४२. कथ = बात । कहर = गजब ।

लावा युद्ध

दोहा

एम मान जगतेशको, वरन्यो सुगम विरुद्ध ।
लर्‌यो प्रथम लावै किलम, जिहि बिधि वरनूं जुद्ध ॥१॥

छन्द पद्धरी

जगतेश भूप रनवास रत्त, दल जोरि किलम आयोऽनुमत्त ।
प्रज्जानि दयो दुख एक साथ, सब लूटि लिये रिपु करि अनाथ ॥२॥

उतपात असुर किन्ने अपार, सम करी भूमि प्रज्जारि छार ।
लघुपुर निवास रह्वें न पाय, सब दीन वसे गिरि दरिन जाय ॥३॥

द्विज संत वनिक वृत कियो छीन, सुरभी समहू रिपु घेरि लीन ।
हिरनाक्ष जेम कीनी हैरान, वह्वे न दई भू भइ बिरान ॥ ४ ॥

प्राकार ईश तज कै गुमान, भर दंड मिले सब आनि आन ।
कामांध भूप किय वधिर कान, सब देश भयो चल दल समान ॥ ५ ॥

निज थान थान थाना जमाय, अपनाय भूमि दृढ़ करत पाय ।
यम करत उपद्रव खलकुलीक, आयो निशंक 'लावा' नजीक ॥६॥

दोहा

संग प्रबल चतुरंगनी, तुपक तोप तम्माम ।
येम असुर 'लावा' निकट, किनूं आनि मुकाम ॥७॥

---

४. वह्वे=कृषि करना, खेत जोतना ।

५. चल दल=पीपलके पत्ते ।

६. खल कुलीक=दुष्ट वंशवाला । नजीक=नजदीक, पास ।

दवावैत

जिस वखत मीरखान, अहलकार दिल मालीक बुलवाये, वडे वडे मीरजादे, अपने डेरूसे चलि आये। कमर्दीखान, जाफरीखान, मीरजहान मीर, असमानखान, यकतारखान, तत्तार कर्नल जममेर, वाई दस्त वाई फिर दाहनी दस्त समसेर। उसके वीच मीर मन्नु अरज गुजराई, इस किल्लेमे वहुत सी मालियत वतलाई। अपनी फौजका भय मान, इन रजपूतोको जवरदस्त जान इन गाऊके वकाल, जिसके ये हाल हवाल। तमाम इस किल्लेमें आया, जिससे अपना है दाया। हुक्म हो इससे मामला ठहिरावै, हुकम होय फजर किल्ले गरदावें। जिसवक्त वोले मीर मुल्ला नवावके चच्चा, वहुत सच्चा, मामले ठहिरायवेकी वात सच्ची, किल्ले गदरायवेकी वात कच्ची, ये हिन्दु कछवाहे कौम नरुके, देग तेगके मुद्देमें सावत कहू न चूके, कल्लके रोज नारनोलके चाले द्वादस हजार सैयद* साभरके खेत आये जिसपै आमेर वा जोधपुरके महाराज दोऊ सल्लाह करि जग करिवेको चलाये। हिन्दु मुसलमानके तीन पहर तलवार चल्ली, आफतावका तेज मद हुआ वारूदकी धूमसे रात

दवावैत=यह एक गद्यका प्रकार है, इसमें अन्त्यानुप्रास मध्यानुप्रासका प्रयोग किया जाता है। यह दो प्रकारकी होती हैं। प्रथममें तो मात्राका कुछ नियम नहीं होता है और दूसरीमें २४ मात्राओंका एक पद बनाया जाता है। विशेप जाननेके लिए "रघुनाथरूपक" पुस्तक देखनी चाहिए। यह पुस्तक "काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी" द्वारा प्रकाशित हुई है।

वकाल=वनिये। दाया=वैर। गरदावैं=घेरा देना। देग तेग=दान देनेमें और तलवार चलानेमें। सावत=सम्पूर्ण।

*मुगल सम्राट औरंगजेबकी मृत्युके पश्चात् शाहजादा आजम और शाहजादा आलममें शाही तख्तके लिये युद्ध हुआ। इस युद्धमें शाहजादा आजम उसका पुत्र वेदारबख्त मारे गये। अब शाहजादा आलम "बहादुर शाह"के नामसे शाही तख्तका अधिकारी होकर बादशाह हुआ। इस युद्धमें महाराजा आमेर, जोधपुर, कोटा और नरवर, शाहजादा आजमकी ओर थे। इस कारण बादशाहने नाराज होकर आमेर और जोधपुरको खालसे कर लिया था। और यहाँके प्रबन्धार्थ महाराबखां फौजदार और सैयद हुसेनखा फौजदार को नियुक्त किया। दोनों नरेशों (जोधपुर और

मिल्ली। सैयदकी फौज सिरजोर जानी, राठौर कछवाहोंकी फौजने हार मानी। हिन्दूकी फौज सिकिस्त खाई, यह वात नरुकोने सुन पाई। उनियाराके संग्रामसिंह चोरुके हरनाथ, लदानाके केसरीसिंह तीनों एक साथ। द्वादस हजार सैयदकी फौजपै सात हज्जार तौखार पटका, सद रहमत उस सैयदको एक पहर फेर भी अटका। फिर सैयद तो भागे, सैयदूंके पीछे ये नरुके लागे। वादशाहोंके माही मुरातव, फील सुद्दे निशान सिलैखानां सव। उस सैयदका असवाव छीना, आमेरके महाराज जयसाहको लाय दीना। सव हिन्दुस्तानमे सराह पाया, जयसाहने कायदा वधाया। करावीन, खजर कटार फरी पिस्तोल तलवार, तमाम आयुधों सुद्दे सलाम की परवानगी पाई। जलेव चौक सिरे ड्योडी तलग इसके नगारों पर परै घाई। ऐसे 'उनियारा'के राजा जिसके तोर, तैसे ही 'लदाना',के पाटवी सवके सिरमौर। 'लदाना'के 'मदनसिह' जिसका जाया, कंवर 'भारथसिह' वहुत तेज वतलाया। 'लदाना','लावा','चोरू','पचाला','महरचो','झाक, सेरोंका आला। लावासे जंग जुरोगे, ये वेड़ा वरवाद करोगे।

आमेर)ने महाराणा उदयपुरसे सहायता प्राप्त कर पहिले जोधपुरको अपने हस्तगत किया। इसके पश्चात् आमेरको हस्तगत करनेके लिये चढ़ाई की। इस युद्धमें हुसेनखां का पुत्र मारा गया और वह स्वयं भाग गया। इसके पश्चात् दोनों नरेश अजमेरकी ओर बढ़े और सांभरके निकट मुगल फौजदारोंसे इनकी मुठभेड़ हुई। इस स्थान पर मेवातका फौजदार बड़ा हुसेनखां अपने दोनो पुत्रो सहित मेड़ताके फौजदार अहमद सैयदखां और नारनोलके फौजदार गारतखां सहित मुकाबलेके लिए आ डटे। इस युद्धमें राठौर और कछवाहोंकी सेना परास्त हो गई। और सैयदोंकी सेना खुशियाँ मनाने लगी। इधर उणियाराके राव संग्रामसिंह अपने नरूका बंधुओं सहित एक टीलेके पीछे दूसरे दिन युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये डेरा डाले हुए थे। रावजी शिकारके बहुत शौकीन थे। अतः इनके साथ ५०० शिकारी योद्धा और ५०० सधे हुए शिकारी कुत्ते हर समय साथ रहा करते थे। इस समय भी वे साथ थे। इसके अतिरिक्त १५०० छटे हुए वीर योद्धा और थे। दूसरे दिन प्रातः काल युद्धमें सम्मिलित होनेके लिए टीले पर चढकर नीचे उतरने लगे, वैसे ही सैयदोंकी सेना दिखाई पड़ी। रावजीने ५०० शिकारी कुत्तों और अपने वीर वन्धुओं सहित सैयदो पर आक्रमण कर दिया और एक भी शत्रुको जीवित नहीं छोड़ा। इस प्रकार राठोड़ और कछवाहोकी प्रथम दिनकी पराजयको विजयमें परिणित कर दिया। आमेर नरेश सवाई जयसिंहने जब इस विजयके समाचार सुने तव एकाएक उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। जव रावजीकी बातें उन्हें ज्ञात हुई तव वे अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। और रावजीके निर्णयानुसार आधी सांभर पर जोधपुरका अधिकार स्वीकार कर लिया। यह युद्ध सन् १७०८ ई० ता० ३ अक्टूबरको हुआ था।

दोहा

वरज्यो मीर मुलाह तव, असुर न मानी एक।
जग जुरिबा 'लावै' जदन, ऊठे असुर अनेक ॥८॥

छंद पद्धरी

यम सुनत वत्त अजरयो नवाव, परि तप्त तेल जनु बूंद आव।
किय रक्त नैन भ्रकुटी करूर, कहि जुरहु जग 'लावा' जरूर ॥९॥
यम सुनत मात्र बोल्ले जवान, सब करहि कोटि भूमी समान।
कहि 'गोशखान' लरि करहि वाट, उन्मत्त फील तोरहि कपाट ॥१०॥
'करनैलखान' यम कहिय आय, दे सुरग कोट देहें उडाय।
'जमशेर' कही चहुँ कोर रुद्दि, फिर लाय नसैनी परहि कुद्दि ॥११॥
'ममरेजखान' बोल्यो रिसाय, गढ करहु सफा तोपन लगाय।
'असमानखान' कहे सुनहु इक्क, सब चलहु फोज किल्ले नजिक्क ॥१२॥
'मुलतानखान' यम कही बात, हो जाय सेन सब तूल पात।
'आखून' कही रजपूत ठाढ, वीराधि वीर गढ वहुत गाढ ॥१३॥
वहु तोप कगूरन करत केल, सब रध्ध रध्ध जम्बूर मेल।
वारूद वहुत सीसा समेत, करिहे निसक रनवीर खेत ॥१४॥
फिरि कर्‌यो गाढ संगर लगाय, जो मर्‌यो चहत सो निकट जाय।
उन्नत सफील परिखा अथाह, मरि, भूमि देत रजपूत-राह ॥१५॥

---

(६) तोखार=घोड़े। सुद्दे=सहित, साथ। सराह पाया=प्रशंसित हुए। रथचीन=फड़चीन, एक प्रकारकी बंदूक। फरी=टाड पटा। ड्योडी तलग=ड्योडी तक। घाइ=चोट। महरणो, मारुक=गायोंके नाम। सेरोंका आला=शेर(सिंहों)के स्थान। वरज्यो=मना किया।

(१३) तूल=रुई। पात=पत्ते।

(१४) जम्बूर=एक प्रकारकी छोटी तोप।

(१५) संगर=संगठन करके। सफील=कोट। परिखा=खाई।

'आखून' कही मानी न एक, कोप्यो नवाव नही तजी टेक।
ललकारि तोप जूटी लगाय, गढ़ घेरि लयो चहूँ फेर आय ॥१६॥

छप्पय

यम 'खुमान' उच्चर्यो, येम 'सलसाह' उचारे।
यम अक्खी 'वलवंत', येम 'सादूल' वकारे॥
यम वुल्ल्यो 'हनुमंत', ईस महुकम यम वुल्ले।
मार-मार उच्चार सार, सिप्फर कर झल्ले॥
सरमीरखांन आगन्तु हम, अरिगन वारन खुट्टि है।
तुट्टे न कोट मृगराज थहि, सार-धार सिर तुट्टि है॥१७॥
कवन भूमि उत्थलहि, कवन सर नीर मथावैं।
कवन कालनि गहौं, कवन गिरि मेरु उचावैं॥
कवन उरग मनि लेत, कवन असमान उचंडैं।
कवन वात कर गहै, कवन "लावै" जुद्ध मंडैं॥
परलोक जाय आवै कवन, कवन मीच-आलै गवन।
कंठीर कंठ हिम कंठ लौं, कर पसारि घल्लै कवन॥१८॥

दोहा

सुनि 'सलसाह' 'खुमानसी', करो विलंव न काय।
कहि ठाकुर धर अप्पनी, ऊभां पगां न जाय॥१६॥
सिर साटै धर लेत हैं, ठाकुर रहो न चीत।
फिर धर साटै सिर दिये, रजपूतों यह रीत॥२०॥

---

(१६) टेक=जिद।
(१७) सार=तलवार। सिप्फर=सिफर, वड़ी तलवार। सलसाह=नाम विशेष।
(१८) उचावै=मस्तक पर रखना। आलै=आलय,स्थान। कंठीर=सिंह। हिमकंठ=सोनेका कठला।
(१६) उभां पगां=यह एक मुहावरा है, पैरों पर खड़े हुए।
(२०) साटै=एवजमें। नचीत=निश्चित।

छंद त्रोटक

इतने लुकमान डकार लय, उडि धूम धरा असमान गय।
चहुँ ओर नरुकनके दलय, उलटे मनु सिन्धु हिलोर लय ॥२१॥
चतुरगनि ठेलि रवद्दनकी, जुद सगरची अपसद्दनकी।
जुव भार भुजानि 'खुमान' लय, विजयी मनु भारतके समय ॥२२॥
बलवत भयो वलि भद्र वली, हथनापुर लो सब सेन हली।
'हनुमत' वली हनुमत भयें, कर तोल उदग्गिनि खग्ग लये ॥२३॥
अरिको दल देखि 'सदूल' उठ्यो, मनु केहरि सीस करीनि रुठ्यो।
न सहे अरि तोप अवाज 'सलो', जनु वधि लयो अपु कध किलो ॥२४॥
वहु वधु वरातिय सग लये, सिर सेहर केहर साज किये।
निकसे गढ बाहरको लरिवा, अरि-सेन-कँवारियको बरिवा ॥२५॥
रसवीर हुलस्य हिये उलहो, दुलही चतुरगनिको दुलहो।
कसि हल्लय फौज किलमनकी, बनि सिल्लिय टोय झिल्लमनकी ॥२६॥
किलमी चतुरगनि येम चली, कि हलाहलकी सरिता उझली।
अहिके नद पानिप तुवुरय, चहिके चहुँ ओरनि जबुरय ॥२७॥

---

(२१) लुकमान=ऐसा कहते हैं कि 'तोप'की ईजाद हकीम लुकमानने सर्व प्रथम की थी इसलिए यहा इसका अर्थ तोप है।

(२२) अपसद्दनकी=नीचोंकी, अधमोंकी।

(२४) सलो=सलहसिंह। सदूल=शार्दूलसिंह। (२५) लरिवा=लडनेको। अरि-सेन कँवारिय=शत्रुसेना रूपी कुँवारी कन्याको। बारिवा=विवाह करनेके लिए।

(२६) उलह्यो=उमग।

(२७) अहिके=बजे। पानिप=प्रसगानुसार इस शब्दका अर्थ ढोल, अथवा नगाडा होना चाहिए। मेरी सम्मतिमें यहा 'पानिघ' शब्द होना उपयुक्त है जिसका अर्थ "हाथसे मारे जाने वाला" होता है। "अहिके" शब्द नगाडे व ढोलके वजनेके अर्थमे प्रयुक्त होता है अत यहा "पानिघ" का अर्थ भी हाथसे मारे जाने वाला, बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र-ढोल व नगाडा होना उपयुक्त है। यदि 'पानिप'का अर्थ "हाथसे पिटने वाला" लें तो भी यही अर्थ निकलता है। इसी ग्रथके पाचवें प्रसगके छन्द स १६७ में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। "पानिप तासे भेरि नद वीरा रस वग्गो।" वहा भी इसका यही अर्थ होगा।

वहिके सब कातर फट्टि हियं, ढहके उर मेच्छनि घट्टि जियं ।
सहिके भुव भार फनी फनयं, गहके नभ गिद्धनके गनयं ॥२८॥
अवली गुन चट्टिय तीरनकी, कर कट्टिय खग्ग उमीरनकी ।
खग धारनते सिर तुट्टि परैं, विनु मत्थनि हत्थनि वत्थ भरैं ॥२९॥
न हलै न चलै कहु भूमि खरे, वलके सम ज्यों दोऊ मल्ल अरे ।
मिलि हिन्दुव म्लेछिहि येम चले, चहुवान वनाफर ज्यों न चले ॥३०॥
कर खंजर पंजर पार करैं, उरझै पग अंतनि भूमि गिरैं ।
कितने लरि घायली भूमि गिरैं, मदिरा उन्मत्त मनो विहरैं ॥३१॥
लखि वावन वीर वकै विकसैं, मुनि जंत्र असोम वजाय हँसै ।
भख आमिख गिद्धनि उद्र भरैं, मिलि हूर अपच्छर सूर वरैं ॥३२॥
सब जोगनि श्रोणित खप्र भरै, ततथेयव भैरव नृत्य करै ।
छननं किय पक्खर अंट झरै, खननं किय खग्गन बाढ खिरैं ॥३३॥
झननं किय पायल रंभनकी, उपमा यक ओर अचभंनकी ।
वरसै गलबाह कियां विहरै, अरधांग मनू हरि नृत्य करै ॥३४॥
यम झूझि 'सलो' रन भूमि पर्यो, वरमाल अपच्छर डारि वर्यो ।
सिर झेलि महेश सुमेर कियो, रथ बैठि अपच्छर लोक गयो ॥३५॥

दोहा

येम किलो धारे सदृढ़, मारे किते उमीर ।
झूझि 'सलो' रन भुव पर्यो, हल्लो कर्यो तगीर ॥३६॥

---

(२८) ढहके=धंसक गये, ढह गये । घट्टि जियं=घड़ेकी तरह । सहिके=सहम गये । गहके=प्रसन्न हुए ।
(२९) अवली⋯तीरनकी=तीरोंके लगातार चलनेसे प्रत्यंचा चटक (वज्र) उठी ।
(३०) चहुवान=चौहान राजपूत । वनाफर=क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष ।
(३१) पंजर=शरीर । अंतनि=आतें । (३२) मुनि=नारद । जंत्र असोम=असोम नामक नारदकी वीणा । उद्र=उदर, पेट ।
(३६) तगीर=बिदा करना, रवाना करना ।

'महुकम'की दिन प्रतिसधी, बधी किलम उर धेख ।
येम लरे खट मास लग, बाढव ग्रथ विशेख ।।३७।।

छंद मोतियदाम

'सलो' रन भूमि परचो जुध जुट्टि, लयो जस वास प्रत्थमिय लुट्टि ।
परे सत पद्धरके पतसाह, करे जिनु अच्छरि लोक उछाह ।।३८।।
परे घर एक हजार किल्लम, परे विथुरे जिमि टोप झिल्लम ।
परे कमनेत वसू बल अध, परे सर मीर नगारन बध ।।३९।।
परे दल घायल एक हजार, कराहत अगनि घाव सुमार ।
परे गज मेक रवद्दनि घूमि, परे सत दोय तुरगह भूमि ।।४०।।
करे मुनि नारद येम सराह, कहे जुद्ध जीति गये कछवाह ।
गये कयलास मृडानि महीस, कहे जुध जीतिय पद्धरईस ।।४१।।
भई सब जोगनि श्रोन अपत्ति, गई यम अक्खि नरुकन जित्ति ।
गयें बकि बावन वीर विसुद्ध, भई जय हिन्दुनकी यहि जुद्ध ।।४२।।

उडी पल धप्पय गिद्धनि सग, कहे जुध जीतिय मोकमसिंग ।।४३।।

दोहा

यम जुट्टे खट मास जुध, हुए किलम हैरान ।
मनहु काम-चतुरगनी, करी ईश वेरान ।।४४।।

छप्पय

किते भूमि धर परे, किते घायल धर घुम्मिय ।
रुवर घोर चहुँ कोर, करी कितनी खनि भूम्मिय ।।

---

३७ धेख=द्वेष ।
३९ वसू=पृथ्वी । नगारन बध=जिनके आगे नगारे बजते हैं ।
४१ मृडानि महीस=पार्वती शिव ।
४४ वेरान=वीरान ।

केतें संग तावूत, किते घायलों मिलायति ।
कितें करि कफनी, गयें अप्पनी विलायति ॥
यम कियो जुद्धम हुकम प्रवल ।
धीठ किलम उर धक्खियो ॥
सिर शेष रह्यो "लावो" सुद्रढ़, तव नवाव यम अक्खियो ॥४५॥
करहु तुच्छ मामले, कच्छु हम टेक रहावें ।
यश लावै गढ़ लरन, जियत हम फेर न आवें ॥
करि वेड़े वरवाद, वाद वारूद उड़ाये ।
हम तुम जुट्टे तदन, अदन अहिमति उर छाये ॥
यम कहि वुलाय वतराय कछु, कपट द्रोह उर धारियो ।
करि दगो पकरि 'हनुमंत'को, आसुर कटक उपारियो ॥४६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंश कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित प्रथम लावा युद्ध द्वितीय प्रसंग समाप्त ।

———०———

४५. घोर=गोर, कवर । तावूत=मुर्दा रखनेका वक्स, अर्थी ।
४६. अदन=खोटे दिन । अहिमति=घमंड, जोश । वाद=व्यर्थ । अदन=अदना, तुच्छ ।

लदाना युद्ध

छंद वेताल

करि दंभ गहि हनुमतको भय मानि लावाते भग्यो।
करि दुष्टता चहु ओरते फिर देशको लुट्टन लग्यो ॥१॥
वर वीर धीर खुमानके, वहु रोस अंग उमगयो।
हनुमतको छुटवाय हू, यह थप्प 'लद्दाने' गयो ॥२॥
तिह पाट थान खुमानसो, मिलि कवर भारथ वुल्लयो।
हनुमतको छुटवायके, मदिरा पीवे पन झल्लियो ॥३॥
हम जियत ही हनुमतसी पर, हत्थ म्लेच्छनको पर्‌यो।
यह वत्त हुव अनरत्थ सो, सादूल सिंकुलते जर्‌यो ॥४॥
करि सीस उन्नत अप्पनो, वर जोर लावाते लर्‌यो।
हिन्दुवान ओ तुरकानके, तिह ठोर पावक वित्थर्‌यो ॥५॥
सल्लाह थट्टिय शहिरको, यह लरन लायक गढ्ढय।
लय संग हैदल पैदल, तिन काल भारथ चढ्ढय ॥६॥
निशि अर्द्ध माधव नग्रते, राजाधि अमल उत्थपियो।
अनमेल कढ्ढिय कोटतें, निजराज पद्धर थप्पियो ॥७॥
प्राकार उन्नत आभलो, सामान पूरन सज्जय।
धमजग्ग तोप उछाहकी, तम्बूर अम्बक बज्जय ॥८॥
यम शद्द नद्दिनके सुनें, जरिगे रवद्दनके हिये।
चहु ओर चल्लिय वत्त यो लरि कोट भारथसी लिये ॥९॥
निशि वीति भानू प्रकासियो, जिह भोर धीरज नट्ठयो।
लिखि मीरखान नवावको, यह तोर कग्गल पट्ठयो ॥१०॥

---

४ सिंकुल = साकल, जंजीर।
७ अनमेल = शत्रु।
८ धमजग्ग = झगड़ा, युद्ध। तम्बूर = एक वाद्ययन्त्र। अम्बक = नगारे, तासे।
९ शद्द = शब्द। नद्दिन = शब्द करने वाले।
१० नट्ठयो = नाश हुआ।

दोहा

यम खत भारथ लिक्खियो, मीरखान यह मान ।
कै छोड़ो हनुमंतको, कै झल्लो केवान ॥११॥

छंद पद्धरी

लावैं निकाम तुम कियऊ जुद्ध, तिह ठौर वथ्यौं हम तुम विरुद्ध ।
जुट्टे निसंक वे खून रार, तुट्टे न कोट तुम गये हार ॥१२॥
फिर एक वत्त विनु उचित कीन, हनुमंत दगो करि पकरि लीन ।
तुम करिय वत्त यह ठोर ठोर, करि दगो हन्यो स्वाई रठौर ॥१३॥
आमेरनाथको लून खाय, लीनो हरामखोरो उठाय ।
जो करहि चेत जगतेश राय, तव काढि खाल भूसी भराय ॥१४॥
तें लूटि लये रिपु च्यार देश, मैं करू तोहि दरवेश भेश ।
अव मान मूढ़ हनुमंत छंडि, हनुमंत न छंडहि रारि मँडि ॥१५॥

दोहा

लिखि कग्गल कछवाह दिय, लय धावन निज हत्थ ।
आतुर धावन आनि के, दिय नवावके हत्थ ॥१६॥
ले कग्गल वोले किलम, किसके भारथ नाम ।
हैं उसके असमानते, केतो उन्नत धाम ॥१७॥
पति 'लदाना'के कंवर, भारथ नाम कहाय ।
नवां शहरको गढ़ लियो, अर्द्ध घरीमें आय ॥१८॥
भारथ हमसें जुध करैं, येंता क्या मकदूर ।
पाव घरीमें हम करैं, उसके गढ़ चकचूर ॥१९॥

---

११. केवान = कृपाण ।
१४. लून = नमक ।
१६. कग्गल = कागज, पत्र । धावन = दूत ।
१९. येता क्या मकदूर = इतनी क्या मजाल है ।

हमसे जुध करि जीति है, क्या उसमे है जोर ।
यम अक्खहु कासीद मुख, है भारत किह तोर ॥२०॥
धर पद्धरको पातस्या, ढूँढाहरकी ढाल ।
आन महीपतके मुकट, शत्रुनको नटसाल ॥२१॥
अय बल, तप बल, बाहुबल, बलधनको बलराज ।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसत आज ॥२२॥
को हिन्दु तुरकानको, को फिरँगान समाज ।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसै आज ॥२३॥

छंद पद्धरि

कासीद आनि इम कहिय वत्त, सुनि मीरखान परगह समस्त ।
को करहि कालसे चाल कोपि, को जात सिंधु पर तीर लोपि ॥२४॥
को लेत पानि उर्वी उचाय, को चलत पथ कर पद कटाय ।
को लेत नागकी मनि हकारि, को जुरत सिंह सूतो बकारि ॥२५॥
को बैठि सोर पर आगि देत, जमदूत हूतको करहि जैत ।
को करत सर्व, अध्येय ग्रंथ, को लेत पार उतराद पंथ ॥२६॥
गहि लेत कोन कर चलत पोन, पच्चास कोटि भुव भ्रमत कोन ।
जिय चहत, हलाहल कवन खाय, को लेत मेरु परवत उठाय ॥२७॥
को 'लरत' मीचसे वीर वंक, असमान कोन झेलै असंक ।
को लेत सीस पर काल दंड, को इंद्र वज्र झेलत अखंड ॥२८॥
वह्नी बिछाय सुख कवन सोय, फल कवन खाय विप बीज बोय ।
को मस्त नागसे करहि केलि, को लेत भूमि पब्वय धकेलि ॥२९॥

---

२१ नटसाल=तीरका शरीरमें फँसकर खटकना ।
२२ अय बल=शस्त्र बल । दीसत=दिखाई देता है ।
२४ परगह=परिकर, अनुयायी दल ।
२५ उर्वी=पृथ्वी । बकारि=पुकार कर, दकाल कर ।
२६ सोर=बारूद । जैत=विजय । वह्नी=वह्नि, अग्नि ।

को वीरभद्रको करहि खूंन, भारथसे भारथ लरहि कून ॥३०॥

दोहा

सुनिय वत्त कासीद, मुख वांच्यो खत्त जवाब ।
मनहु अग्निमें घ्रत परे, प्रजरचो येम नवाब ॥३१॥

छंद निसानी

सुनि खत भारथसिहको पीछा लिखवाया,
हम 'लावै' दो लक्ख रुपये बरबाद गुमाया ।
उस रुपयोमें ओल यक ये हमको पाया,
इस 'लावा'दी ओलसे जीऊदा दाया ॥३२॥
उस लावाके ठाकरं तुमको बहकाया,
के तुम किसके बादिस्याह फुरमान चलाया ।
के तुम किसके मामले चाहत सुरझाया,
के तुम किसके पील हो अरजी गुजराया ॥ ३३ ॥
के तुम ऊँचे होयके हमसे बतराया,
के तुम दायेदार हो कर तेग समाया ।
के तुम उसके मामलें विच फैल मचाया,
तुजे पराई क्या परी अपनी निमराया ॥ ३४ ॥
इस हम चारों देशको लूटे करि दाया,
सद रहमत तुजको सलाम मुझको बुलवाया ।

---

(२९) बहनी = वह्नी, अग्नि ।
(३०) कूंन = कौन । भारथ = भारथसिंह, 'लदाने'के स्वामी मदनसिंहके पुत्र, युद्ध ।
(३२) ओल = गिरवीकी वस्तु । लावादी = लावैका ।
(३३) पीलहो = जिसकी हिमायत (पक्ष) की जावै, हिमायतदार ।
(३४) फैल मचाया = उधम किया, दंगा किया, तोफान किया । निमराया = नमेड़ना, निबटाना, तै करना । दायेंदार = बराबर ।

मैं भी सच्चा खान तो तुज ऊपर आया,

॥३५॥

दोहा

बडे बिरादर खानके, सुने निरादर खत्त।
किलम एक असमानखा, उन अक्खी यह वत्त ॥३६॥

छंद निसानी

ये खत भारथसिंह वाचिके रोस भरेगा,
मुझको आया ख्वाब कल वो ही निमरेगा।
मेरो सच्चो ख्वाब है टारैं न टरैंगा,
जिसका आह्वय भारथा वो खून करेगा ॥३७॥
इस्दी औरत वालदा खाला पकरेगा,
ताई चच्ची आदि ले सब बंद करेगा।
गढके अंदर कैद करि पग लोह भरेगा,
ये गल्लो सुन मीरखान अंदर अजरेगा ॥३८॥
किसका कह्या न मानि हैंदल जोरि लरेगा,
अणसे भारत होयगा गज वधु गुरेगा।
उस 'लावा'से चौगना रनखेत परेगा,
औ पद्धरका पातसाह जुध खूब करेगा ॥३९॥
वो जाया मदनेसका मारया न मरेगा,
ये बेडा नव्वावदा बरबाद करेगा।
मल्ला जानै फौजमे बिरला उबरेगा,
यूं मारै असमानगा असमान गिरेगा ॥४०॥

---

३७ आह्वय=नाम। जिसका आह्वय भारथा=जो भारथके नामसे पुकारा (बुलाया) जाता है।

३९ अणसे=जिससे, उनसे। गज वधु गुरेगा=हाथियोंके दल के दल गिर जायेंगे।

छंद पद्धरी

असमानखान अक्खी अनेक, तउ मीरखान मानी न एक ।
बोल्यो रिसाय निज वल वखानि, कर तोलि तेग कर मूँछ तानि ॥४१॥
गढ़ वैठि गर्व कीनूं गंवार, सम करो ढाहि प्रज्जारि छार ।
पाहन उखारि सर्वङ्ग मूल, देऊं भ्रमाय ज्यों पत्र तूल ॥४२॥
मम कोम सत्य पितु मात सैद, हनुमंत संग गहि करों कैद ।
मम रोस ज्वाल पावक प्रचंड, छंडहु नवाय भरवाय दंड ॥४३॥
यम कहहु वत्त कासीद जाय, तुम भरहु दंड मम परहु पाय ।
यम सुनत वत्त कासीद आनि, दय सीघ्र खत्त भारत्थ पानि ॥४४॥

दोहा

कहे दूत समझाय के, समाचार यह विद्धि ।
तदन कवीले असुरके, रहत 'टोरडी' मद्धि ॥४५॥
चढे सहिरतें रोस धरि, लीनी पकरि खुमान ।
मानहुं रावनकी त्रिया, गही आनि हनुमांन ॥४६॥
तदन गही रावन तिया, परयो झूझि करि जंग ।
बीवी जियत नवावकी, पकरी भारतसिंह ॥४७॥
हाव भाव रस गुन भरी, सोहत परी समान ।
किधूं कामकी कामिनी, को कवि करत बखान ॥४८॥

छंद त्रोटक

यवनी तिय हूर किधो उतरी, पनगी नग काम किधू पुतरी ।
कच स्याम सचिक्कन सीस लसै, ससि पूरणको मन राह ग्रसै ॥४९॥
मृगयामदको सरि बिन्दु दियो, शशिके मनु मध्य शनी उदयो ।
उपमा यक ओर चुभी चितमे, ससि रोहनि अंक धरी हितमें ॥५०॥

४५. टोरडी = एक ग्रामका नाम है जो मालपुराके पास जयपुरसे दक्षिणकी ओर है, यहां पर एक बड़ा जलबंध है ।

भुव बक मनो युग अग अरे, कुसुमायुध ज्यो धनु तानि धरे ।
श्रुति कुडल हाटिक हीर जरे, मुख मीन मनो मुकतानि भरे ॥५१॥
मुकता गनि वेसर नाक बनी, मनुकीर चुगत अनार कली ।
श्रम स्वेद कपोलनमे झलकै, अलकै दुहु नागिन सी तलकै ॥५२॥

अधरायुग विम्ब पके फलसे,
मनु लाल प्रवालन पक्ति लसे ।
अधरानि विचै दुति दत बनी,
विचि मानिक मानहु हीर कनी ॥५३॥
मृदुहास हुलास हिये न रुक्यो,
भरिके मनु कज सुधा ढरक्यो ।
दुति कठ कपोलनकी झलकी,
उन कठनते धुनि कोकिलकी ॥५४॥
मधुरी सुनिके धुनि काम वढै,
मुखते मनु मत्र मनोज पढै ।
कर चपक डार सुगध भरे,
मनु कजसे नाल दुहूँ पसरे ॥५५॥
चुरिया मुकरावलि पानि हरी,
गुरु गेह मनु वुध सज परी ।
गजरे मुकतानिके पानि लसे,
मनु दामिनिमे ऋषि पक्ति बसै ॥५६॥
अँगुरी तिन हेम सलाकिनि सी,
मुंदरी जरि मानिक मद्धि वसी ।
तिनकी उपमा कवि हेरि दय,
गुरु भोन अगार मनो उदय ॥५७॥

५२ तलकै = तलकना, हिलना, रपटके चलना ।
५६ गजरे = एक जेवर विशेष, जो हाथमें पहिना जाता है । संजपरी = सज्जित हो गया ।

मॅहदी कर कोमल वूंद वरी,
मनु कंजमें इन्द्रवधू विथुरी।
उर वीचि उरोज स्वयंभु लसे,
तटनी तट मानहु कोक वसै ॥५८॥
उमगी सुरखी कुच कोर कढी,
मनु वूडनि कज कलीनि चढ़ी।
अवली तन रोम तरंगनि सी,
मधु सिंधुमें नाभिय कंज लसी ॥५६॥
भर श्रोणित पीठि विभाग नयो,
कटिको वित लूटि नितंव लयो।
रुचि रूप जराव जरी रसना,
मुकता हिम नीलम हीर पनां ॥६०॥
बुध शुक्र वृहस्पति भोम शनी,
मनु तोरन कामके भोम तनी।
उपमा यक ओर अखंभनकी,
युघ जंग वनी हिम रंभनकी ॥६१॥
अरुनाई महाउरकी दरसे,
तरवे मनु पावक से परसे।
चटककी पट मेचक मोजनकी,
पनही मुकता जरदोजनकी ॥६२॥
सुरखी वनि सूथनि भारनकी,
लरकी लर श्याम यजारनकी।

---

५८. स्वयंभु=शिव, महादेव। तटनी=नदी।
५६. वूडांन=वीर वधूटी, वीर वहूटी।
६०. श्रोणित=लाल। रसना=किंकिनी, करधनी, कणकती।
६२. तरवे=पैरके तलवे। पट मेचक=काला रेशम। यजारन=इजारबंद, नाड़ा।

कुरती कचिया मखतूलनकी,
उर माल चमेलिय फूलनकी ॥६३॥
सिर सारिय स्याम विदेशनिकी,
तिनपै हिम कोर सुवेशनकी।
जिनकी उपमा यक और थटी,
बिजरी ससि कोर मनू लपटी ॥६४॥
झर लागि सुगध मनो झपटी,
अलियावलि अगनकी लपटी।
तनकी सुकमार बय तरनी,
लखि धीरजको न धरै धरनी ॥६५॥
मुनि देवनको मनहू विचल्यो,
चित भारथको तिनपै न चल्यो ॥६६॥

दोहा

नागरि गुन आगरि नई, सुदरि तन सुकुमारि।
गहि भारथ निज बस करी, लखी न द्रष्टि पसारि ॥६७॥
दान वीर तन प्रबलता, जुद्ध वृद्ध तप देश।
क्यो विगरै तिह नृपतिको, लखै न पर तिय लेश ॥६८॥
कूक फजर कटको परी, धरी न किलमूं धीर।
सब दिन रोजे सम गयो, बढी विपम कल पीर ॥६९॥
समाचार अनुक्रम सहित, सुने गही तिय तेम।
पनग पिटारेके परे, अरि सिर धूनत येम ॥७०॥

छद भुजगी

परचो भीमको पूत ज्यो सक्ति मारचो,
मनु मच्छिको तोयते हीन डारचो।

६७ कूक = हल्ला।

मनु कांच सीसी सुरा हीन नंखी,
परची पंख हीनू धरा जानि पंखी ॥७१॥
परचो नाग भूमी मनू भीम कुट्यो,
परचो भूमि तारो मनूँ गैन तुट्यो।
मनू आव हीन गुर्यो कुभ रीतो,
भई झंफ खाली पर्यो जानि चीतो ॥७२॥
पर्यो व्याल ज्यों कीलनी वज्र किल्लो,
मनू भक्खि तारक्ष पीछे उगल्ल्यो।
बटू बायके वेग मानू उखार्यो,
पर्यो छाग भूमी मनू तेग मार्यो ॥७३॥
पर्यो म्लेच्छ भूमी वसु याम लोट्यो,
जर्यो अंग जाको मनूं आगि ओट्यो।
अला, पीर पैकंबरोंको पुकारैं,
जरी देहको रोपते फेर जारैं ॥७४॥
वके दीनताके किते वैन टेरे,
कवीले परे काफरों हत्थ मेरे।
परे वित्थुरे भूमि जाके खिलूना,
कहा कैद जाने हमारे ललूना ॥७५॥
करी कोटमे कैद बीबी हमारी,
रमी आजलों रंगकी चत्रसारी।
पर्यो त्रासते जीव संताप ताके,
जर्यो लोह जंजीरकी ठौर जाके ॥७६॥
बिछूना बिना सोवना क्यों सहेगी,
हवा बंदके फदमे क्यों रहेगी।

(७२) झंफ=छलांग। चीतो=चीता, सिंहकी जातिका एक शिकारी पशु विशेष।
(७३) तारक्ष=गरुड। छाग=बकरा।
(७५) ललूना=ललनाएँ, स्त्रियां।

सुरा मास हीनी रही ना कदे ही,
विना खान पान भई क्षीन देही ।।७७।।
सुनै हिन्दुके वैन सीना धरक्कै,
चिरी पिंजरैकी परी त्यों फरक्कै ।
बडे हिन्दुके वंसे वो डरेगी,
निराधार किल्लो सफीलो गिरेगी ।।७८।।
उसीको लखै वीरता ना धरेंगे,
कही जाय ना हिन्दु कैसी करेंगे ।।७९।।

दोहा

करि साहस ऊठे किलम, झिलम टोय तनु झल्लि ।
पूरनागरन ठोर परि, चले प्रबल दल मिल्लि ।।८०।।

छप्पय

चढि चल्लिय मेछान, भान गरदावलि भिल्लिय ।
हल चल्लिय हिन्दवान, खखड जुग्गनि खिल खिल्लिय ।।
धर डुल्लिय परिभार, पहुमि बसवान उचल्लिय ।
हल मिल्लिय परि जोर, शेष अहि फन पर सल्लिय ।।
लखि जोर सोर दिल्लिय सदन, तदन तोर दरसावियो ।
कर अली अली माधव नगर, येम सजी कर आवियो ।।८१।।
रचे प्रबल मोरचे, करि मेछन वन कट्टिय ।
दीनी भूमि दरार, ओट सगर थिर थट्टिय ।।
करावीन जम्बूर, तुपक पिसतोल तयारिय ।
ठोर ठोर नद घोर, यते लुकमान डकारिय ।।
झर तुट्टि-तुट्टि धरनी परत, लाय अवनी मनु लग्गई ।
घन घोर तोप आषाढ लो, दुहू ओर यम दग्गई ।।८२।।
धरा धूम वित्थुरे, तोय ऊछरे सरोवर ।
गिरे श्रृंग नग तुट्टि, ताम प्रज्जरे तरोवर ।।

---

८१ बसवान=बसने वाले ।

नदी कूप नद सूकि, कूक कातर उर फट्टिय।
आवट्टिय जल जोर, सोर दुहुं ओर उपट्टिय॥
सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठनि पिठ्ठि भर।
धर धुज्जि तलातल तल वितल, शेष सलस्सल छड्डि धर॥८३॥

मेक मास वारूद हिन्दु तुरकान हुचक्किय।
हल्लो करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचक्किय॥
मीरखान भाराथ करत, भारथ दहुं निभ्रत।
दैत्य देव मिलि दुहूं करत मनु काल प्रलय कृत॥
भरि वत्थ वत्थ गलवांह करि, येम असुर हिन्दुव भिलत।
मानहु अनेक दिन विच्छुरे, उर मिलाय बंधव मिलत॥८४॥

धर अम्बर घन धूम, सोर-झर विज्जुर धक्खिय।
तोप-सव्द घन-घोर तुपक-भख असनि वरक्खिय॥
नाचत सूर मयूर सस्त्र-खद्योत भलक्किय।
जरि कातर जैवास, भूमि रुहिराल खलक्किय॥
किल्ले नजीक भिल्लै किलम, जिते सोर झर पर जरत।
आपाढ़ मनहु वरपा समय, संमुख आनि सलभा गिरत॥८५॥

छंद दीरघ नाराच

घटा घुमंडी घोरिके आषाढ़ अभ्र लों घिर्‌यो,
प्रकाश भानु को रुक्यो अकाश धूंम धूंधर्‌यो।

---

८३. तरोवर=तरुवर, पेड़। आवट्टिय=ओटना, उबलना। उपट्टिय=उत्पन्न हुआ। धर=स्थान।

८४. हुचक्किय=हो चुकी, समाप्त हो गई। भचक्किय=अचंभित हो गये। भाराथ=युद्ध।

८५. सोर झर=वारूदकी झल। असनि=ओले। सलभा=टिड्डी।

कवान जाल तोपके नवाल कोटपै भवै,
जम्बूर रध्र रध्रके गिरेन्द्रसे रसै लवै ॥८६॥

अनेक मेक तोरकी दुरूह तोप धाहुरै,
उडै दुरगकी सफील फील फोजके गुरै।
हकारि आत सामुहै मुसल्ल हल्ल वुल्लिकै,
यतै बकारि हिन्दु सीस आसमान तुल्लिकै ॥८७॥

कितेक लत्थ बत्थ ह्वै अचेत भूमिपै गिरै,
किते कुठार खग्ग धार सेल खजरू लरै।
कितेक हाथ पावके विहीन भूमिपै लुटै,
कितेक सीसके कटे कवध ऊठिके जुटै ॥८८॥

कितेक गिद्धनीनको धपाय गूद अप्पने,
कितेक सुद्धिके विहीन मार मार जप्पने।
कितेक ईस पोय लीन सीस मुजकी गुनि,
कितेक खप्र खोपरी वनाय जुग्गनी चुनी ॥८९॥

कितेक वीर जुद्धमे अधीर होय वक्कही,
कितेक भूत खेचरी अधाय श्रोन छक्कही।
कितेक हूर अच्छरी विमान वैठि ऊतरी,
कितेक जात व्योमको मनो अरठ्ठकी धरी ॥९०॥

---

८६ तोपके नवाल=तोपके निशाने, गोले। रसै=रसने लगे, चूने लगे, टपकने लगे। लवै=लौ, लपट।

८७ अनेक मेक तोरकी=अनेक प्रकारकी। धाहुरै=धधाड रही है। दुरग=किला। सफील=दीवार। फील=हाथी। गुरै=चलै। सामुहै=सन्मुख।

८८ लुटै=लोट रहे हैं। जुटै=युद्ध कर रहे है, जुड रहे हैं।

८९ धपाय=तृप्त करके। गूद=मासल स्थान।

९० अरठ्ठ=रहँट, कुएमे पानी निकालनेका मालाकार यत्र।

छप्पय

येम नरूके असुर मास मुर अगुन घुमंडिय।
मीरखान अप्पनी जीयन आशा उर छंडिय॥
लोह वोह वारूद जुद्ध हल्ले करि हारे।
पैदल हैदल परे मीर कितने रन मारे॥
कबीले छुट्टिनिके अरथ कपट कत्थ केते करे।
ननु परे हत्थ किल्ले तदपि अरथ मत्थ अवनि परै॥६१॥
येम असुर धर उद्ध पर्‌यो अनुचित अप्पन घन।
मनहु चाप गुन तुट्टि किधू किरवान मुट्ठि विन॥
स्वास ताप उर कंप मुख वेंवरन फैन जुत।
रौष प्रलापहु दुःख मगन संताप नारि सुत॥
करनैलखान असमानखां दुहूं आनि धीरज दयो।
कबीले फजर छुटवाय है, तव नवाव अंजल लयो॥६२॥
चर चलाय बुल्लयो मीर असमान वुद्धिवर।
कुटिल नरूके कोम बहुत हुशियार जुद्ध पर॥
अति उन्नत प्राकार भरत सामान आन अत।
सीसे सोर अपार पंच हज्जार जुद्ध कत॥
जुट्टे अनेक दिन आज लौ, अब अनेक दिन जुट्टि हैं।
हनुमंत छड्डि पायन परो, तदन कबीले छुट्टि है॥६३॥
आनी चित मीरखां मीर असमान कही बत।
सर्वोपम अब सिद्धि सरव श्रीजुत लिक्खे खत॥
मिट्यो वैर अप्पनो रारि हमसे मत मंडहु।
हम छंडुै हनुमंत नारि हमरी तुम छडहु॥

६१. मास मुर अगुन=नौ महीने तक। वोह=प्रहार।
६२. धर उद्ध=पृथ्वी पर। अंजल=अन्नजल।
६३. चर=दूत।

तुम कहो कवर सोही करैं, ज्यान माल कछु चित चही ।
यह वत्त निरतर जानियो हम तुम अतर है नही ॥६४॥

वच्चि खत्त भारत्थ, कत्थ पिच्छी यम लिक्खिय ।
तुम वेगम हम पकरि कैदखाना विचि नक्खिय ॥
तुम छड्डो हनुमत कैदखाने मत रक्खहु ।
एक लक्ख भरि दड नारि छुट्टनकी अक्खहु ॥

नन होय वत्त मजूर यह जुध हम तुम फिर जुट्टि है ।
भरि दड आनि पायन परो, तदन कवीले छुट्टि है ॥६५॥

कै दारुन अहि किल्लि कालवेलिन वसि किन्हो ।
मनहु मुसाफिर वित्त ठगन मादिक ठग दिन्हो ॥
किधू प्रेत वक्करयो ताप मत्रादिक तच्यो ।
परयो प्रपचय हत्थ मनहु साखामृग नच्यो ॥

उच्चर्‌यो खान सोही कर्‌यो, यो मति कीमत मानखा ।
मीरखा दारु-योपित भयो, तार गह्यो असमानखा ॥६६॥

करी एक उन्मत्त अस्व ईरान विलायत ।
पाटम्बर जर तार भार मेवा सोखयत ॥
पेटी भरि मोकले एक लक्ख रुप्ये हाली ।
परसी खड्ग कटार जूट्टि पिसतोल दुनाली ॥

चुकुमार धनुष तुन्नीर शर, सार टोप पक्खर झिलम ।
करि मित्र भाव हनुमतको वैर छड्डि भेजे किलम ॥६७॥

सोरठा डिंगल

यम अक्खी असमांण, पारख झूठी नहि पडी ।
तैं राखी तुडताण, रजपूती हिंदवाणरी ॥६८॥

---

९५. पिच्छी=पाछी, वापिस ।
६६ कालवेलिन=सापको पालने वाली जाति विशेष । दारु योपित=कठपुतली ।
९७ सोखायत=सौगात, उपहार, तोहफा । मोकले=भेजे, बहुत । हाली=उसी सन् सम्वतके ।

हिंदुवाणो तुरकाण, राह दुहूं जस उच्चरैं ।
पारथ ज्यूं भुज पाण, भारथ मंड्यो भारथा ॥९९॥

हटियो वल हिंदवाण, ऊपटियो वल आसुरां ।
मिटियो देख प्रमाण, थटियो भारथ भारथै ॥१००॥

सवला पण सावूत, रहियो भारथ भारथो ।
तुरकारां तावूत, लागां मग्ग विलायतां ॥१०१॥

कंपै घाव कराहि, निशि दिन चख झंपै नहीं ।
मेछारां घट माँहि, भाय लगाई भारथै ॥१०२॥

ठहरै जीव न ठाहि, आहि पुकारै ओदकै ।
मेछारां घट माँहि, भाय लग्गई भारथै ॥१०३॥

करडी निजर कृसाण, थारी कूरम भारथा ।
मेछारै अप्रमाण, लग्गी लाय विलायता ॥१०४॥

खाय तडच्छा खान, थारा भयसों भारथा ।
असुराणी आधान, अवधि विहूणां ऊगलै ॥१०५॥

किलमा वालै काय, के चालै लागो कंवर ।
आलै-नाहर आय, भालै फेर न भारथा ॥१०६॥

---

९९. पारख=परीक्षा । तुडताण=यहां पर 'तुरतांण' पाठ होना चाहिए, जिसका अर्थ होगा तुरत (शीघ्र, वर्त्तमान समय) के अन्त तक अर्थात् अब तक ।

१००. ऊपटियो=उन्नत हुआ । थटियो=किया ।

१०१. सावूत=सम्पूर्ण ।

१०३. ओदकै=चमक कर, चौंक कर । आहि=हाय हाय । भाय=भय ।

१०४. करडी=कठोर । कृसाण=अग्नि । लग्गी लाय=अग्नि लग गई ।

१०५. आधान=गर्भ । ऊगलै=उगलना, निकालना, अर्थात् विना समय ही गर्भ गिर जाते हैं ।

१०६. के चाले=क्या धंधे लगा । आलै नाहर=सिंहका स्थान, माँद । भालै=देखै ।

सारो खोय सवाव, पडि फीटो पावा पड्यो।
निहुरा खाय नवाव, नारि छुडाई निठ्ठसँ ॥१०७॥
तुरकारै मुख तोय, रती न राख्यो भारथा।
हुवो न कोई होय, आलम आखै आपनै ॥१०८॥
जुटै दुहू दल जग, आहुटै हिन्दु असुर।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥१०९॥
सूर अपच्छर सग, हूर रवद्दाहू मिलै।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥११०॥
ईश उमा अरधग, भर प्यालो ले भगरो।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥१११॥
अमलारा उछरग, गलिया थलिया चोगणा।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥११२॥
गोष्ठि विरादर सग, प्याला मद पावै पिवै।
रग हो भारथ रग, उण वेला दै आपनै ॥११३॥

छप्पय

चिमन सेख धर परयो, परयो धर सेख यनायत।
परयो विलायत खान, ल्हास पूगी विल्लायत॥
परयो खान मुलतान, खान असमान सरोभर।
जूटि जग जमसेर, बाहि समसेर परयो धर॥
इकावन मीर ठाये परे, पच हजार लरायते।
कमनेत नेत वधी अयुत, असि समेत आपायते ॥११४॥

---

१०७ पडि फीटो=लज्जित होकर। निहुरा खाय=खुशामद करके, अनुरोध करके। निठ्ठसैं=मुशकिल से।
१०९ आहुटै=जोशमें भरना। रग हो भारथ रग=हे भारतसिंह तुमको धन्य है। उण वेला=उस समय।
११० रवद्दाहू=म्लेच्छ।
११४ ल्हास=लाश। ठाये=मुख्य। लरायते=लडने वाले, सिपाही। आपायते=आपा रखने वाले, अपनापन रखनेवाले, निकट सबधी।

येम नारि छुटवाय, मेछ अपने मग लग्गिय।
मनु डाहल सिसपाल, खोय धनको खल भग्गिय ॥
सकल होय बलहीन, सबल भारथ लगि टक्कर।
जात मनहू अजमेर, पीर जारतिकों फक्कर ॥
मद मुक्कि सुक्कि बैबरन तन, जीव सरक सीना धरक।
परि काल फंद मानहु कढ़े, हुय तग्गा तग्गा तुरत ॥११५॥

दोहा

नर हैमर दमने सकल, येम असुर मग जाय।
मनहु बनिक घर अप्पनै, गमने मूल गमाय ॥११६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित लदाना युद्धतृतीय प्रसंग समाप्त।



११५. डाहल=डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, डाहल जाति विशेष। जारति=जियारत, धार्मिक-यात्रा। बैबरन=वैवर्ण्य; रंग फीका पड़ना। हुय तग्गा तग्गा=तागे तागे हो गया, छिन्न-भिन्न हो गया।

उणियारा युद्ध

दोहा

येम 'लदानै' सुकवि जुध, वरन्यो विविध प्रकार।
अब 'उनियारय'को कहू, जिहि विधि वग्गो सार ॥१॥
होय निवल बलहीन खल, द्रुम पल्लव अनुहारि।
कुच्च कुच्च दर कुच्च फिरि, सभर लई सभार ॥२॥

छप्पय

करि मुकाम पुर घेरि, सोर चहु ओर प्रजारिय।
गहि दुरूह सिकदार, हाटि पट्टन सभारिय ॥
हेरिय सभरि माल, लुट्टि सभर पुर लिन्हिय ॥
निमक दरिवनि रुद्धि, दाव दब्बन उर दिन्हिय।
गोलक निशान फुरमान अप, विकल सोच च्यारो वरन।
तुरकान तोर वग्गो वहुरि, खल अनीति लग्गो करन ॥३॥

दोहा

तुरक तोर वग्गो तदिन, फिर सभरपुर आय।
अव आगम अगरेजको, वरनै सुकवि वनाय ॥४॥

छंद पद्धरी

यम सुनिय वत्त अगरेज कान, मानो कि तीर मुक्यो कमान।
मातग हेरि मानहु मृगीश, मानहु पनग्ग लखि खगाधीश ॥५॥
असमान भ्रमत मानहु अचान, लखि भुव वटेर तुट्यो सिचान।
मृग हेरि मनहु चीता मलग, झप्योक वाज चप्यो कुलग ॥६॥

---

१ वग्गो सार=लोहा बजा, तलवार चली।
२ सभर=साभर झील।
३ दुरूह=दोनों तरफके। सिकदार=चौकीदारोंको। दरीव=क्षेत्र, मोहल्ले।
४ मातग=हाथी। खगाधीश=गरुड़।
५ अचान=अचानक। सिचान=शिकरा, एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया। मलग=पुष्ट, मोटा, झप्योक=झपट कर। चप्यो=पकड़ लिया। कुलग=पक्षी विशेष, एक

अंगरेज येम जरणैल साव, आयौ अचंक रुद्ध्यो नवाव।
लखि भयो ताहि संगराम लोप, खल करी नैक ताती न तोप ॥७॥
दिय लोह कील अंगरेज आय, सब दियऊ तोप ठाठनि गिराय।
गिरवाय शस्त्र सब किये दीन, सुरभी समान रिपु घेरि लीन ॥८॥
करि आब हीन बोले निसंक, उद्दित नवाबके भाल अंक।
नव लाख रेख दिय 'टूंक' थान, मालव समेत दुगनी बखान ॥९॥
द्रढ़ भयो म्लेच्छ फिर टूंक आय। धरि शीश छत्र चामर चलाय।
यम रच्यो थान तुरकान आन, घरियार द्वार नोबत निसान ॥१०॥
उन्नत अवास प्राकार धारि, वाजार हाट पट्टन संवारि।
चहुँ ओर कूप आराम कीन, महजीत गुमज कव्वर नवीन ॥११॥
करि येम राज फिर मरयो मीर, तिहि ठोर वैठि दवलाउजीर।
उन्नत गरूर पोरष अपार, सब लयो देश हय गय संभार ॥१२॥

दोहा

मीरखान जा दिन मरे, धरे न किलमूं धीर।
ता दिन कछु समता परी, वैठे दरलउजीर ॥१३॥
यम कहि रोवत कित गये, सब हिन्दुनके साल।
असुर धरनि सब नारि नर, परे धरनि बेहाल ॥१४॥
यम बोले आसुर तनय, रक्खहु मनमें धीर।
मुझको जानू मीरखां, अक्खे दवल उजीर ॥१५॥

प्रकारकी बतख जो काले रंगकी व सफेद रंग व जोगया रंगकी होतीहै जिसको कुरजां भी कहते हैं। यह पत्ती आकाशमें एक कतारमें होकर झुण्डके झुण्ड उड़ते हैं। डिंगल कोषमें कुलंगका अर्थ 'चटक' लिखा है। मेरे विचारसे यहां कविका आशय चटक ही होना चाहिए। बाज=एक शिकारी पत्ती।

७. अचंक=अचानक। ताती=तप्त।
८. दिय लोह कील=कील ठोक दी, वशमें कर लिया।
९. उदित नवावके भाल अंक=नवावका भाग्योदय समझ कर।
११. महजीत=मसजिद। कव्वर=कब्र।

दिन छिनदा उत्पात चित, रोष तरुनता रत्त।
अगुन तोर भ्रूकुटी असर, भयो असुर उन्मत्त ॥१६॥
उनियारय भीमो नृपति, वीर पराक्रम बंक।
ता भयते आसुर तनय, रहत मानि उर संक ॥१७॥

छप्पय

देश कोश प्राकार कूप, आराम नदी नद।
धवल धाम हिमकलश, छार बारन मत्ते मद॥
हय मज्जहि धरखूर, सेन चतुरँगनि सज्जहि।
बज्जहि नद्द निहाव, मनहु भद्दव घन गज्जहि॥
तज्जहि अवास गिरि दरिन गहि, अरिगन भज्जहि मानि भय।
यह तोर भीम रज्जहि अवनि, लखि सुरेश लज्जहि विभय ॥१८॥
मेघाडबर मंडि, सूर सज्जे सन्नाहनि।
फीलो फरकि निसान, गरक ताजी गज गाहनि॥
धुनि तोपन सभरिय, अरी उर होय थरत्थर।
नयन रोस वित्थुरे, असुर प्रज्जरे धराधर॥
नर सूर वीर घन दल प्रबल, प्रबल पराक्रम खल दमन।
करि येम राज भीमो नृपति, स्वर्ग मग्ग कीनो गमन ॥१९॥

दोहा

भीमो सुरपुर भिल्लयो, 'उनियारै' नरनाह।
फतयसिंह बैंठे तखत, धर पद्धर पतस्याह ॥२०॥

---

१६ अगुन=तिगनी। तोर=तेवर, त्योंरी, टेढी नजर। असर=असल वीन सलवट।

१८ बारन=हाथी। निहाव=प्रतिध्वनि, नोबत, निहाई। रज्जहि=राज करता है। विभय=वैभव।

छंद पादाकुल पराकृत भाषा

सो रीति क्वं भीम गेहा, तत्थे पुत दिग्घ सनेहा।
अप्पे गढ़ढां गढ़ढां घोरा, थप्पे पुत्रं वूम भंभोरा ॥२१॥

दोहा

हल्ले तोपन लग्गहि, सोर सुरंगन जाय।
किल्ले धूमं भंभोरके, लगै न आन उपाय ॥२१॥

ते किल्लो भीमो नृपति, कियक पूतके हत्थ।
तिहि सुरेतके पूत फिरि, मिलि कीनू पर हत्थ ॥२३॥

फतयसिंहको मानि भय, मिले असुरसों जाय।
किल्ले मध्य मलेच्छको दीन्हो अमल कराय ॥२४॥

इत उनियांरो टूंक उत, मेर मिलत दहुं राज।
तदपि असुरको चित वध्यो, फिर वर दव्वन काज ॥२५॥

आये चढ़ि नृपके नगर, आसुर करन अकाज।
फतयसिंह पठये सुभट, तिहि पुर रक्खन काज ॥२६॥

सुभट नृपतिके दोय शत, आसुरके शत चार।
कढी कुवत मुखतें किलम; कर कढ्ढी तरवार ॥२७॥

कुवत तेग कढ्ढी किलम, जिनों प्रथम लिय मार।
वहुरि नरूकनि आसुरनि, पुरतें दिये निकार ॥२८॥

तदपि नरूकन आसुरन, चार घरी जुध मंडि।
वीस असुर धरनी परे, अवर गये रन छंडि ॥२९॥

---

२१. गेहा=घर। तत्थे=वहां। पुत=पुत्र। दिग्घ=दीर्घ। अप्पे=दिये। थप्पे=स्थापित किये।

२३. सुरेत=सुरतसिंह।

२४. दीन्हो अमल कराय=हुकूमत करा दी।

२५. मेर=सरहद, सीमा।

फतयसिंहकी करि फत्तह, वहुरे सुभट समाज ।
मनु गयदनि युत्थ हनि, आये थहि मृगराज ॥३०॥
मीरखान सुत सभरे, जरे करेजनि लुक्क ।
आमुरके अतहपुरनि, परी अचानक कुक्क ॥३१॥
कूक फजर सुनि मीरखा, आसुर दवल उजीर ।
करी वध चतुरगनी, धरी न उरमें धीर ॥३२॥

छंद पद्धरी

खिजि चढ्यो खान दवला उजीर, गज वाजि तोप रथ पक्ति भीर ।
यतमाम फील नोवत निशान, जगी सवाव सव सावधान ॥३३॥
कमनेत नेत वधी सिपाह, सव सिलह पूर विट्टे सनाह ।
चवगान जान रनवीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत ॥३४॥
करि गमन अस्त रवि सधि काल, कुल काक स्वान कूके कराल ।
समसान समुग्र कीनो पयान, वेताल भूत भूखे भयान ॥३५॥
दक्षन दिशमें वोल्यो उलूक, विपरीत समुख फयोकर कूक ।
विकराल सद्द श्रगाल श्वान, कूके कराल दक्खिन भुजान ॥३६॥
वामाग डक्कनिय पत्ति अस्व दक्खिन भुजान हूक्यो अनम्ब ।
जगल विडाल किय रुदन पृष्टि, पशुकाल जन्तु मग परयो द्रष्टि ॥३७॥
कुलहीन अग चर्मा वितुड, ववोल उर्द्ध सिर महिष मुड ।
रडाल वाल विथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर रित्त कुभ ॥३८॥

---

३० वहुरे=वापिस लौटे । थहि=मांद ।
३३ यतमाम=यह सव । सवाव=असवाब, सामान ।
३४ विट्टे=वेष्ठित, पहिने हुए ।
३५ भयान=भयोत्पादक ।
३६ फयोकार=शृगालिनी ।
३६ डक्कनिय पत्ति अस्व=डकनीके स्वामीका घोड़ा, अर्थात् कुत्ता । अनम्ब=गधा । पशुकाल जन्तु=सर्प ।
३८ अग चर्मा वितुड=हाथीके समान चमड़ा है अग पर जिसके । पर्यान=सर्प । रडाल=विधवा ।

सर्वंगि सीस मुंडित विहाल, मग लोपि जात वामांग व्याल ।
ध्रत पात्र रोम चर्मा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार ॥३९॥
मग जटिल सीस लिय संग स्वान, कर श्याम पात्र वर्जित उपान ।
अपशकुन भयेउ आद्यांत एक, अपजोग पराजयके अनेक ॥४०॥
उद्दय प्रभात गत भई राति, जारत नरेशकी पुर जराति ।
वहु किये अनीति खल करन जंग, यह सुनिय वत्त नृप फतयसिंह ॥४१॥

दोहा

सुनत कोपि किरवान लिय, फतयसिंह महाराज ।
मनहु इंद्र कर कुलिस लिय, गिरि-पर कट्टन काज ॥४२॥

छंद त्रोटक

सुनके नृप के उर कोप वढ्यो, मघवा मनु दानव सीस चढ्यो ।
ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय संमिल सोरनकी ॥४३॥
गमने मनु सिंधुर स्याम गिरं, हय पक्खर विटि सनाह नरं ।
गजराजनि घंटनि घंट वजै, सुनि आतुर कातर प्रान तजै ॥४४॥
सव सूर सनाहनि अंट जरी, हय हींस नगारनि ठोर परी ।
भरि विज्जुर सी कर तेग लसैं, तिनको लखि ईश मुनीश हँसै ॥४५॥
लखि सेन लिये कर खप्र खिली, मिलि जुग्गनि एक ही संग चली ।
भुव जतुनखी मख लेन चले, पत्रधार पल्लचर संग हले ॥४६॥

---

३९. सर्वंगि=सव, एक जाति विशेष । रोमचर्मा=सीधडा, ऊँटके चमड़ेका वरतन । हेमकार=स्वर्णकार, सुनार ।

४०. मग...उपान=रास्तेमें जटाधारी मनुष्य कुत्तेके साथ, काली हांडी लिए हुए जूते रहित मिला ।

४१. जराति=खेती ।

४३. ठठुरीनि=तोपका ठाठा । जुटी=वैलोंकी जोड़ी । जुरि=जुत कर, लग कर । संमिल=साथ । सोरनि=वारूद ।

४६. पत्रधार=पक्षी । पलच्चर=माँसाहारी ।

सब सूरनके तनु रोप तचे, तिनको लखि वावन वीर नचे ।
उडि खेह खुरो रवि मद भये, नभ हूर विमाननि छाय लये ॥४७॥
रज डंबर अम्बर मग्ग चढे, भ्रम कोक विभावरि शोक बढे ।
नभ देव विमाननकी अवली, उडि गिद्धनिके गन सग चली ॥४८॥
दल येम नरुकन के उमडे, धुरवा मनु भद्दवके घुमडे ॥४९॥

दोहा

अचल नरूकनि आसुरनि, जुटे सुभट दुहुँ ओर ।
मार मार मुख उच्चरे, परी नगारनि ठोर ॥५०॥

छंद मोतीदाम

मिले दुहुँ ओरनि हिंदु मलिच्छ, मनो शिव सेन प्रजापति दच्छ ।
पनकिय मेछ भजो नन मूर, ठनकिय तेज हुतासन सूर ॥५१॥
हनकिय वाजि मिले दुहुँ ओर, धुनकिय तोप धुनी उडि सोर ।
गनकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, मनकिय आमिख-हारन लक्ख ॥५२॥
भनकिय तीर कवाननि ओक, सनकिय पखनि गिद्धनि सोक ।
ठनकिय मत्त मतगनि घट, घनकिय घूघर पक्खर अट ॥५३॥
मनकिय जत्र असोम अलाप, वनकिय कातर सद्ध कलाप ।
थनकिय नाटिक भैरव थाप, दनकिय गिद्धनि आमिख खाय ॥५४॥

---

४७ विभावरी=रात्रि ।

४८ धुरवा=मेघ । भद्दव=भाद्रपद ।

५१ पनकिय=प्रण किया । नन=नहीं । मूर=मूल निश्चय । ठनकिय=झलका, उभरा उपर आया, पक्का हुआ, दृढ हुआ, टनटन आवाज हुई ।

५२ हनकिय हिनहिना कर । धुनकिय=ध्वनिकी, आवाजकी चली । गनकिय=गरणाई, तेजीसे आवाज फैली । तुपक्कनि भक्ख=तोपोंकी खुराक, वारूद । मनकिय=मन किया, इच्छा की, आमिषहारन=मासाहारी ।

५३ भनकिय=भन भन शब्द किया । ओक=स्थान । सनकिय=सन सन शब्द किया । सोक=वेगकी उड़ान । घनकिय=बजो ।

५४ मनकिय=किया । थनकिय=थिरकना, नाचना । दनकिय=धोकी, गर्जना की ।

खनंकिय सायक धार करूर, झनंकिय झांझर रंभनि झूर।
छनंकिय तीर वरच्छनि छोह, ननकिय वोह विलंवनि लोह, ॥५५॥
फनंकिय शेप पर्‌यो सिर भार, चुनंकिय शंकर मुंड निहार।
किनंकिय जात सराह सनेम, रनकिय वीर नरूकनि येम ॥५६॥

दोहा

खिज्यो खान आयुध अली, कर कढ्ढी तरवार।
पद्धर पतिकी सेन पर, आयो किलम हकारि ॥५७॥
पक्खर टोप सनाह युत, पानि उदग्गन खग्ग।
संग वीर ले पंच सत, लई तुरंगनि वग्ग ॥५८॥

छन्द पद्धरी

हय खूर धूर लग्गी अकास, उडि गये पलच्चर मानि त्रास।
दुहुँ ओर तोप दग्गी कराल, जंगी असाध्य मनु जेठ ज्वाल ॥५९॥
मिलि सोर-धूम तम अंधकार, मारुत प्रचंड पंखनि प्रचार।
पर अप्प नैकनन परत जान, जुध करत वोल वंधव पिछान ॥६०॥
यह तोर हिन्दु तुरकान जुट्टि, किरवान पान इभ कुंभ तुट्टि।
उपमान आन कवि मति अमंत, घन मद्धि मनहु विज्जुरि खिमंत ॥६१॥
कछवाह मेच्छ गलवांह कीन, करि दाव घाव पोरस प्रवीन।
हय पीठि हुते धर परत आय, जुध करत देव दानव सुभाय ॥६२॥
खंजर कटार चुकुमार मार, नटसाल घाव पंजर दुसार।
गिरि परत भूमि पग उरझि अंत, मादिक असाध्य मानहु परंत ॥६३॥
कर धार सार वाहत अखंड, मुख मार मार परि करत मुंड।
चंचल तुरीनि कढ़ि प्रान जात, मनु मीन फंद परि तरफरात ॥६४॥

---

५५. झूर=सव। छनंकिय=छेद दिये। वरच्छनि छोह=वरछियोंकी नोक। वोह=प्रहार। ननंकिय=निश्चय ही किया। विलंवनि लोह=लिपटा हुआ लोहा, कवच।
६१. इभ=हाथी। किरवान पान=तरवारकी धारसे। खिमंत=चमकती है।
६३. चुकुमार=गदा। पंजर=शरीर, देह। नटसाल=तीरकी गॉस। दुसार=आर पार छेद। मादिक असाध्य=खब (अत्यंत) नशे वाला।

आयुध अलीह्-हय परचो खेत, घन घाव मीर घूमत अचेत ।
साहस्स धारि हय चढचो ओर, फिरि सार धार वजि ठौर ठौर ।।६५।।
केते कुठार बाहत करूर, परिघन कितेक सिर चकनचूर ।
बके छछोह करि बोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट खेल ।।६६।।
गुपती कटार भमकार घाव, नन परत भूमि पर ठाह पाव ।
गिर जात भूमि तन झाफ धारि, फिर उठत मार मारहु बकारि ।।६७।।
घायल अनेक रन खेत घूमि, सनि गई श्रोनते रग भूमि ।
कुल भान खान जुध येम कीन, धरपरयो झूझि आयुध अलीन ।।६८।।

दोहा

परयो धरनि आयुध अली, प्रजर्यो दवल उजीर ।
कर तसवी रक्खी तमकि, लिए सरासन तीर ।।६९।।
मनहु देव दानव दुहुनि, पानि उद्दग्गन खग्ग ।
मुसलमान हिंदवान फिरि, लिए तुरग्न बग्ग ।।७०।।

छंद दुर्मिला

हय हिन्दुनि हक्किय वीर किलक्किय सोर भभक्किय ओर दहू ।
सिर शेप लचक्किय भूमि भचक्किय कोल मचक्किय दंत कहू ।।
किलमायुध हट्ठिय सायक पट्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये ।
कसि बागन कट्ठिय हिन्दु इकट्ठिय वाजिन तट्ठिय ओर दये ।।७१।।
तुरकान तलक्किय हिन्दु ललक्किय, हूर हलक्किय हेरिवर ।
कर सेल भलक्किय ढाल ढलक्किय खाल खलक्किय श्रोन भर ।।

---

६५ ठौर ठौर=स्थान स्थान पर ।
६६ वाहत=चलाते हैं। परिघन=आगल (आयुध विशेप) । छछोह=सोत्साह । तेहरीय=तिगुनी ।
६७ भमकार=गहरा । ठाह=सीधा, सही, ठिकाने पर । झाप धारि=लडखडा कर ।
६८ तमकि=तमक कर, क्रोध करके ।
७१ भमकिय=भकसे जलना, एक दम जल उठना । कट्ठिय=काठी, जीन । भचक्किय =भौंचक्की हो गई । चमट्ठिय=चमाठे, धनुपके ऊपर लगे हुए चमड़ेके वध । तट्ठिय=उस दिशाकी ।

खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हयं।
इभ घंट ठनक्किय नद्द रनक्किय भेरि भनक्किय सद्द भयं ॥७२॥
हयते हय सत्थिय रत्थनि रत्थिय हत्थनि हत्थिय जुद्ध करं।
लरि वत्थनि वत्थिय लूथप लत्थिय मत्थनि मत्थिय भूमि गिरं ॥
वहनी मनु दट्टिय सोर उपट्टिय कातर फट्टिय वैन दुखं।
दहु दीन अहुट्टिय आरन थट्टिय सारन घट्टिय मार मुखं ॥७३॥
तन तेगनि तच्छिय मानु कि मच्छिय तोयनि तुच्छिय त्यों तलफै।
कटि पायन कच्छिय घाव वरच्छिय धाव तरच्छिय ते मलफै ॥
खग धारनि खंडिय खंड विहंडिय भारथ मंडिय भीम नच्यो।
पिय श्रोनित चंडिय धार अखंडिय, रंभ घुमंडिय राश रच्यो ॥७४॥

दोहा

दंपति हूर अपच्छर सूर वरि, वैठि विमाननि जात।
मानहु तीज दिन, डुलहर वैठि डुलात ॥७५॥

छप्पय

वजि धप्पी किरवान, वीन वज्जा धप्यो मुनि।
धप्पी गिद्धनि गूद, श्रोण धप्पी सव जुग्गनि ॥
हर धप्यो सिर चुनत, हेरि धप्पे नभ-वावनि।
वर धप्पी वरहूर, वीर धप्पे वकि वावनि ॥
दल मुसलमान वलवान खल, लुत्थ वत्थ धप्पे लरत।
धप्पे न युद्ध पद्धरपति, सूर वीर वके भिरत ॥७६॥

---

७२. तलक्किय=शीघ्र गमन किया, रपटके दौड़े। हलक्किय=प्रसन्नता हुई। प्रोथ=घोड़ेकी नाक। होफ=हाफना, जोर जोरसे सांस लेना।

७३. वहनी=वह्नि, अग्नि। दट्टिय=दधक उठी। उपट्टिय=उत्पन्न हो गयी। दहुँ दीन=दोनों धर्म, हिन्दु मुसलमान। आरन=युद्ध।

७४. तच्छिय=काटना। मच्छिय=मछली। तुच्छिय=तुच्छ, कम। कच्छिय=घोड़े। धाव=दौड़ना। तरच्छिय=तिरछा, टेढ़ा होकर। मलफै=कूदे।

७५. डुलहर=झूला जो गोलाकार में ऊपर नीचे झूलता है।

७६. धप्पी=धाप गया, तृप्त हो गया। नभधावनि=नभचर।

कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के मच्छर ।
वरि थक्के वरिहूर सूर वरि थक्के अच्छर ।।
पर थक्के पल चरनि धरनि थक्की नर भारनि ।
मार मार मुख वकत जीभ थक्की जोधारनि ।।
थक्के विमान असमान सुर, नर हँमर थक्के फिरत ।
थक्के न जुद्ध पद्धरपती सूरवीर वके भिरत ।।७७।।

श्रोन धार धर चलत चलत लख पवित पलच्चर ।
कातर विमुहे चलत, चलत समुहे नर हँमर ।
चलत लोह उत्ताल, सूल सरगदा परिघ्घन ।
चलत सोर सावत, मनहु डडूर वूद घन ।।
उरचलत हँस किरवान कर, चलत मुगल चलविचल चित ।
नन हिन्दु-पाय पुट्ठिन चलत, चपि अँगूठनि भूमि जित ।।७८।।

लोहकार उत्ताल, मनहु अँरन घन गज्जिय ।
गजर मनहु घरियार जाम पूरन प्रति वज्जिय ।।
मनहु वूद वस वात, असनि असमान विछुट्टिय ।
येक मेक अन्नेक तडित मानहुनभ तुट्टिय ।।
यम वजिय सार आतुर अनिय जुद्ध जीति फतमल प्रवल ।
वल मीरखान हुय चल विचल, वे भग्गे तुरकान दल ।।७९।।

दोहा

हुय तग्गा तग्गा तुरक, वे भग्गा तजि वैर ।
पानि उनग्गा खग्ग ले, लग्गा हिन्दू लैर ।।८०।।

---

७७ मच्छर=मत्सर, घमड। अच्छर=अप्सरायें।
७८ विमुहे=उलटे, विमुख। सावात=हवासे। डडूर=वर्षाकी वे बूंदें जो हवाके वेगसे छितर कर पड़ती हैं। पुट्ठिन=पीछे। चपि=चाप कर, दवा कर। जित=जितना।
७८ उत्ताल=ऊंचा। असनि=विजली, वज्र। अनिय=फौज सेना।
८०. उनग्गा=नग। लैर=पीछे।

छंद भुजंगप्रयात

सवै छांडि सव्वाव नव्वाव भग्गे, सुभट्टं फतैसिंहके लैर लग्गे ।
फतैसिंह राजा धरे वीर खेतं, लुटे खानके सार सीसा समेतं ॥८१॥
लुटे मेछके तोप तम्वू कनातं, लुटे अम्बरं कीमखावं वनातं ।
फरी तेग वंदूक सिल्लैहखानं, लुटै तीर तूनीर सुद्धि कवानं ॥८२॥
दुहाई फिरी पद्धरी हिन्दवानं, लयें छीनिके फील सुद्धे निसानं ।
रुपे रोक पेटिनके भार फट्टें, हयं पक्खरं टोप सन्नाह लुट्टे ॥८३॥
लई दीनताई रहे खानजादे, कहै खो गये मेच्छ वेरे विवादे ।
फतैसिहके वोलवाला चहेगे, सदा हिन्दुगी वादस्याही रहेंगे ॥८४॥
वचै ज्यान जो हिन्दु आगे हमारी, करें जारता पीरख्वाजे तुम्हारी ।
फतैसिहकी मेच्छ वोलै दुहाई, फतैराव राजा फतै जुद्ध पाई ॥८५॥

दोहा

यमजुट्टे दुह ओर जुध, मीरखान फतमाल ।
अपनी मति अनुसार कहि, वरनै ग्रंथ गुपाल ॥८६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णनं सुकवि गोपालदान विरचित चतुर्थ प्रसंग उनियारा युद्ध समाप्त ।

——०——

---

८१. सव्वाव=असवाव, सामान ।
८२. सुद्धि=सहित ।
८५. जारता=यात्रा, ज़ियारत ।
८८. उनग्गा=नंगी । लैर=पीछे ।

द्वितीय लावा युद्ध

सोरठा डिंगल

उणियारे आथाण, फतह नृपति कीधी फतह ।
अब 'लावै' आराण, 'करणै' कीधी सो कहूं ।।१।।
कुण सिर महुकम पाग, धर लावै सबलो धणी ।
बाघ मणी थह बाघ, पाट लदाणै पातलो ।।२।।

छंद नेक्खरी

लावै भूमि मेर लख विघ्घनि, हाटिक पाट अमारत दिघ्घनि ।
नहिं लबार ठग चोर जुवारी, पुर बसवान सकल सुखकारी ।।३।।
गढ सफील उन्नत छवि छाजत, रजत द्वार कलशादिक राजत ।
पूर तोय परिखा चहू पासी, मगर मीन जलचर सुखरासी ।।४।।
कमल खिलत सरिता सर सोहत, वन उपवन खग मृग मन मोहत ।
मधु छाके मधुकर गुँजारत, कोकिल कीर कपोत पुकारत ।।५।।
नित कृसान कृपि रचत नवीनी, मालव कासमेर अर चीनी ।
आफू ईख जत्रानि उपज्जत, सप्त धान उपधानहु निपजत ।।६।।
दुगन साख पट् ऋतु मघि लूनत, सुनि सुनि टूंक असुर सिर धूनत ।
करनसिंह दुज गो प्रतिपालत, वेद मृजाद नीति क्रम चालत ।।७।।
बनु, सुजान, रनो बखतावर, गोविंद, हनुमत, तेग-किरावर ।
वीर समुद्र सिंह बरदाई, क्षिति वितान सम कीरत छाई ।।८।।

---

१ आथाण = स्थान । आराण = युद्ध । करणै = कर्णसिंह ।

२ कुण = किसके, यहां 'उण' शब्द होना चाहिए । सबलो = बलवान । 'मणी' के स्थान पर 'तणी' शब्द होना चाहिए । थह = सिंहके रहनेका स्थान । पातलो = प्रतापसिंह ।

३ मेर = सीमा । विघ्घनि = बीघा । लबार = वाचाल, बकवादी ।

८ तेग किरावर = तलवारका धनी, तलवार चलानेमे चतुर । चावो = प्रसिद्ध ।

सुनत पुरान त्रिसध्या साधत, दिन प्रतिदिन द्विज देव अराधत।
सम प्रभुता उरमे पूरन हित, एक थार भोजन नित जीमत ॥९॥
टूँक नजीक वैर जग चावो, गल सिवनि वंधे गढ़ लावो।
लरन मनोरथ करि उर आनत, प्रबल नरुकनिको पहिचानत ॥१०॥
आसुर प्रतिदिन चित ललचानो, मन ही मन गुनि भयो अयानो।
तूल पत्र चित चक्र चढ्यो सो, ज्ञान मूढ़ मति मूढ़ पढ्यो सो ॥११॥
दिन छिनदा अहिमति उर आनत, प्रथम जुद्धकी रीति पिछानत ॥१२॥

दोहा

भय कर करत निरास चित, लालच करत प्रवेश।
आसुर जीव ससांक ज्यों, वढ़ घटि होत हमेश ॥१३॥
भावनगरको तुरक यक, सब तुरकन सिरताज।
कुसती पटो विनोट कृत, सब येलम उसताज ॥१४॥
टूक मध्य आयो तदन, सदन सदन परिसोर।
एलमगीर अधीर उर, सब तुरकन पर तोर ॥१५॥
रखहु सरव पर तव हुकम, ज्यान मान सब राज।
रहुगे दवलउजीर कहि, तुम हमरे उसताज ॥१६॥
करी सीख घरको किलम, दई नवाव विचारि।
हय पाटंवर तार हिम, फरि तुप्पक तरवारि ॥१७॥
रुकि नवावपै आय रहि, सवै सवावनि मुक्कि।
पंच सवारनते चढ़े, मेछ गये मग चुक्कि ॥१८॥

---

१४. येलम = विद्या। उसताज = उस्ताद, मास्टर, गुरु।
१५. एलमगीर = विद्या वाला। तोर = श्रेष्ठ, तुर्रा।
१७. करी सीख = विदा किया। फरि = बड़ी तरवार। तुप्पक = बंदूक।
१८. सवावनि = असवाव, सामान।

रंगकार तेलार विनु, विनु कलार दरवेश।
सारवध 'लावै' असुर, पुर नहि करत प्रवेश ॥१९॥
याते यहि मति धार उर, तहि खल उतरे आन।
कुसमनि कर उपवन सघन, सर नजीक शिवथान ॥२०॥

छप्पय

करनसिंह उमराव, ईश पूजन यक आयो।
करि परिक्रमण अनेक, बील पत्रनि हर छायो॥
धूप दीप नैवेध, सुरख श्रीखंड चहोरे।
अरक सुमन आधार, वारि मंदाकिनि बोरे॥
तुम चरन शरन त्रिलोक पति, यम सरनागत उच्चरी।
वदन विनोद आनंदमय, करि प्रणाम अस्तुति करी ॥२१॥

अथ शिव स्तुति छंद गीतिका

निगुणात्म ईश त्रिलोचन त्रपुरांत मार-प्रजारन।
अलिकेन्दु विन्दु, अदेव मर्दन, वारिधी-विष जारन॥
गिरिजास्मित, प्रतिमा सिता शिव सगुणात्मक रूपण।
निगमागम गावत विश्व व्यापक निर्विकार निरूपण ॥२२॥
उरमाल मुंडनि छाल मृगकी खाल केशरि जूसण।
वपुभस्म लेप स्मशान राजित व्याल पाणि विभूषण॥

१९ रंगकार = रंगरेज, नीलगर। तेलार = तेली। रंगकार ... प्रवेश = रंगरेज, तेली, कलार और फकीरके सिवा और कोई हथियार धारी मुसलमान "लावै" में प्रवेश नहीं कर सकता है।

२१ सुरख श्रीखंड = लाल चन्दन। चहोरे = चढ़ाए।

२२ त्रपुरांत = त्रिपुर नामक राक्षसको मारने वाले। मार-प्रजारन = कामदेवको जलाने वाले। अलिकेन्दु = निष्कलंक चन्द्रमा। अदेव = दैत्य, राक्षस।

गनभूतप्रेत पिशाच कौतुक अंत तंतु जटा जुटी।
जय व्योम केश महेश त्रंवक भीम भूतप धूर्जटी ॥२३॥

दोहा

येम सुभट अस्तुति करी, पानि जोरि परि पाँय।
करि वंदन आनंदमय, विविध कपोल वजाय ॥२४॥
बाजत सुनत कपोल हँसि, अरि करि कंधुर वंक।
ईशालय गमन्यो असुर, पनही सहित निसंक ॥२५॥

छप्पय

तुरक एक तिन मध्य, रोप पोरुप गुन रत्तो।
मनहु छाग मुख मूत, येम आसुर उन्मत्तो ॥
पान सूल कव्वान, सुभर तूनीर शिलीमुख।
कटि बाँधी किरवान, चरम पावन आवन रुख ॥
खल आत सुभट वरजे प्रथम, मति आवहु यह मूढ़मति।
यह ठोर मेच्छ आवत नही, ये त्रिपुरारि त्रिलोक पति ॥२६॥
सुनत वत्त प्रज्जर्यो, आनि ईशालय अंदर।
ईश शीश दिये पाव, कुबुद्धिकारी मनु बंदर ॥
रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूहनि मग चढ़्ढिय।
कर कढ़्ढिय किरवान, कुवत मुखते खल कढ़्ढिय ॥
दहुं मार मार मुख उच्चरो, होय शव्द हंकार हर।
किरवान पान वाही किलम, हनी कटारी हिन्दु कर ॥२७॥

---

२३. जूसणं = लगा हुआ, चिपका हुआ।
२४. कंधुर = कंधर, गरदन।
२५. पनही = मगरखी, जूता।
२६. मनहु छाग मुख मूत = विपयोन्मत्त बकरा (बकरीके या अपने) पेशावको मुँहमें ले कर मानो मत्त हो गया हो। पान = पानि, हाथ। सुभर = खूब भरा हुआ।

आसुरके उर मध्य दंत अंतक सम बैसिय।
मानहु रंध्र मुसाल, खंभ ज्वाला गनि जैसिय॥
बसन बेधि कटाक्ष, कोर कुलटा द्रग कढ्ढिय।
हृढ्ढ बेधि जमदृढ्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय॥
ऊघरी जानि सपा जलद, चुवत श्रोन रंग चढ्ढियो।
मानहु कुमारि जावक सहित, कर वतायन कढ्ढियो॥२८॥
ते रिपु धरनी पर्यो, बहुरि मुरि मेच्छ हकारे।
मुनि कोतुक पुर लोग, आनि तिनको फिर मारे॥
यम देवालय मध्य, दीन जुट्टे दहुँ सम्मर।
आलबाल भरि श्रोन भई प्रतिमा रातमर॥
छड्यो सुमेक लघु बैस लखि, ते मग लग्गो टूंकपुर।
दवलाउजीर दरगा तदन, अदन हेतु कूके असुर॥२९॥

दोहा

उर कंपित सूकत अधर, भरत ढरत युग नैन।
चित चक्रित वैवरन तन, कहत वाल कटु बैन॥३०॥

छंद त्रिभंगी

नव्वाव कहाँरे राज तिहारे, हिन्दुनि थारे सो करि हैं।
हनि पिदर हमारे मातुल मारे वैर विचारेको करिहैं॥

---

२८ दंत अंतक = यमके दांत। बैसिय = बैठ गई, गड गई। मुसाल = मशाल, चिराग। बसन = वस्त्र। जमदढ्ढ = कटारी। पारऊ = दूसरी ओर, आरपार। ऊघरी = प्रकट हुई। सपा = बिजली। श्रोन = श्रोणित, खून। वातायन = वातायन, खिडकी, झरोखा

२९ हकारे = बुलाये। दीन = धर्म (यहां धर्म वाले) सम्मर = समर, युद्ध। आलवाल = थाँवला। रातमर = लाल। बैस = वयस, उमर। दरगा = दरगाह, दरबार। कूके = पुकारे।

३० वैवरन = वैवर्ण, मलिन।

अब या तुरकानीको हम जानी भई पुरानी वीगरि है।
असमान गिरेगा ना उवरेगा काफर रैगा तू मरि हैं ॥३१॥
दोजिगमें जैहे तू फल पैहें दावन गैहैं हम तुमरे।
ऐसी अनहूनी लखी न सूनी, कबरैं धूनी कुल हमरे॥
अब कोन हमारे देश तुम्हारे आनि पुकारे जोर यहां।
तुम सुनत न ऐसी हम परदेसी वालक भेषी जाय कहाँ ॥३२॥

दोहा

ते लरका मुख विष सुने, वायक सायक सार।
श्रुति सभर मेच्छंदके पंजर करत प्रहार ॥३३॥
तब नवाब कथ उच्चरी, रक्खहु मनमे धीर।
सकल तरुकनिको हनों, तब मै दवलउजीर ॥३४॥
गढ तोपनतें करि सफा, पुरतें करो तगीर।
"लावै" हिन्दु न रक्खहूं, तो मै दवलउजीर ॥३५॥
बोले सुनत तमाम खल, कर तोले किरवान।
जो "लावै" जुध नहि जुरे, से नहि मुस्सलमान ॥३६॥
वड़े मीरखां जुध जुरे, तहां परे रन खेत।
तुजे विरादर सबनके, चच्चे पिदर समेत ॥३७॥
कर मुच्छनि घल्ले किलम, यम बुल्ले उजबक्क।
स्याम काज पितुके वयर, हदपै मरना हक्क ॥३८॥

---

३१. पिदर = पिता। रैगा = रहेगा।
३२. दोजिग = दोजख, नर्क। दावन = दामन, पल्ला। गैहैं = पकड़े हैं। सूनी = सुनी। कबरैं धूनी = क़बरमें धुआँ।
३५. तगीर = तग़य्युर, परिवर्तन, निकालना।
३६. तोले किरवान = तलवार पकड़ कर।
३८. उजबक्क = मूर्ख, उजड्ड, असभ्य, उद्दंड। स्याम = स्वामी। बयर = बैर।

कर असील किरवान गहि, बुल्ले मीर मसूर।
'लावै' लरना हक्क है, मरना वरना हूर ॥३९॥
नमक सरीतिन रक्खही, भक्ख अभक्ख समान।
काफर दोजगमे परे, अक्खै मीर जहान ॥४०॥
अपने खावदके हुकम, करहि ज्यान कुरबान।
हक वे मरना हक्क है, कहै कुतब्बी खान ॥४१॥
अक्खै सेख ततारखा, उर सहना जमदढ्ढ।
मरनासे डरना कहा, लरना 'लावै' गढ्ढ ॥४२॥
यम बुल्ले इकतारखा, करना गढ चकचूर।
काफर है सो वरजना, जुरना जुद्ध जरूर ॥४३॥

छन्द नीसाणी

उस विरयो मुलतानखा मूछाँ कर घल्ले।
अँचि कवादे टक तोलि जब्बू कहि बुल्ले॥
हम गिरते असमानको शिर केई वर झल्ले।
दक्खनके दरम्यान कल दोऊ दल मिल्ले ॥४४॥
भूरि जमी असमानदे भालो मग भिल्ले।
चल्ले हुलकर सिंधिया मुज पाव न चल्ले॥
क्या किल्ले चोगानदे क्या उस पर हल्ले।
हम किल्ले असमानदे कई वेर उथल्ले ॥४५॥

---

३९ असील = अशील, शील रहित, तेज।

४० सरीतिन = मरोकता, हिस्सा, साथ। अक्खै = कहे।

४१ खावद = पति, स्वामी। ज्यान = जीवन। कुरबान = बलिदान।

४४ उस विर = उस समय। घल्ले = डाले। अँचि = खेंच कर। कवादे = सींगके टुकडोंमे बना धनुष। टक = ४½ सेरकी शक्ति (जैसे हार्सपावरकी गणना मशीनमे होती है उसी प्रकार धनुषकी शक्ति टकसे की जाती है जो ४½ सेर का होता है।) जब्बू = जनून, खराब, बुरा। वर = बार, दफा, समय।

सीकर ईश नवावको दोसत कर थट्टे ।
हम किल्ले सकरायदे सोरै पख जुट्टे ।।
तोप दगी दहुँ ओरतें भर सोर उपट्टे ।
लुट्टे माल जखीरदे नर हैमर कट्टे ।।४६।।
उसदी अपनी सेन सब हल्ले कर कट्टे ।
आगे भी हनुमंत थे किल्ले नहि छूट्टे ।।
क्या अच्छे कमनेत थे तीरो सिर तुट्टे ।
फिर उसदे तूनीरतै सब तीरनि खुट्टे ।।४७।।
यों तर उन्मत फील करि भर पोरुप हट्टे ।
महा उपल मुं जफटते सीनो विचि फट्टे ।।
हम किल्ले इस तोरसै बहु वेर उलट्टे ।
यारो 'लावा' कोटपै सबके दिल बट्टे ।।४८।।

छन्द भुजंगी

बड़े मीरखांके चचा एक जुल्ला, कहावै सबोमें बड़े मीर मुल्ला ।
बड़े मोलवी नेक पढ्ढ़े कुरानं, यलल्ला यलल्लाह यलल्लाह जानं ।।४६।।
इनो खूँन कीनो उनो वात अक्खै, उनोंके इनों देवपै पाव रक्खै ।
लखे आपने दीनकी क्षीनताई, जिनोपै मरै मारना हक्क भाई ।।५०।।
बदी जो करै तो खुदाकी सजा है, सदा नेक रहना इनोंमें मजा है ।
मियां एक मस्सूरखां नाम जाकै, बड़े तेजवानं सबोंमें कजाके ।।५१।।

---

४६. जखीर = खजाना । सौरै पख = सोडे गाँव वालोंकी पक्ष लेकर, वा सोलह पक्ष ।
४७. खुट्टे = समाप्त हो गये ।
४८. हट्टे = हट्टे कट्टे, मोटे ताजे । महा......फट्टे = जिस प्रकार हाथी सूंडमें बड़े २ पत्थर लेकर अपने सीनेसे टकरा कर तोड़ देते हैं ।
४९. यलल्ला = या अल्लाह, ईश्वर ।
५१. बदी = बुराई । कजाके = क़ज्ज़ाक, बलवान, लुटेरा ।

वही मीरखाके वजीर कहावै, बडे मीरजादे अदाब बजावै।
बडे फारसी पोस जुब्बान चल्ली, अरब्बी पढे वुल्लके कल्ल वल्ली ।।५२।।

बडे मीर मुल्ला कहा बात कीनी, खुदा मीरखाको नई भूमि दीनी।
यते मीर मुल्ला कहा एक मानूं, चमूं जोरिके मूल "लावें" न जानूं ।।५३।।

उनोके बनेसिह राजा सहाई, जिनोकी फिरै देश देशो दुहाई।
ववाजान याके जुरे जग 'लावै', उनोके रहेगा तुमारे न आवै ।।५४।।

सबै कूंममे यह नरूके बुरे है, जुरे जगमे यह कहू ना मुरे है।
जिते ये नरूके जुदे नाहि जानो, सबै देशके 'उन्नियारो', 'लदानो' ।।५५।।

बडे मीरखाके रहे पीर पक्खै, उनोके कवीले इनो कैद रक्खै।
कहा जो हमारा उनो भी न माना, सबै यार जानो रहा नाहि छाना ।।५६।।

सबै सोर सीसा सबाब लुटाये, रुपा लाख देके कबीला छुटाये।
तुम्ही कल्ल यापै गये 'उन्नयारे', कला खोयके रोय पीछे पधारे ।।५७।।

हमै आज लो बात ऐसी निहारी, अबै जो न मानू रजा है तिहारी।
अबै मीर मस्सूरखा बत्त बोले, किये नैन 'रत्ते' करो तेग तोले ।।५८।।

उमीरी फकीरी बडे एक आटे, खुदाने दई है किसीके न बाटे।
किनू कायरी सूरताई दई है, जिनो अप्पनी अप्पनी ही लई है ।।५९।।

दरग्गाह जावो फकीरो पढावो, तसब्बी फिरावो खुदाको लडावो।
तुम्हें बात ऐसीनसे काम क्या है, बडे जो कहाये खुदाकी रजा है ।।६०।।

---

५२ फारसी पोस = फारसीदा, फारसी भाषा जानने वाले। वुल्लके कल्ल वल्ली = कल बल करके बोले।
५६ छाना = छुपा हुआ। पक्खे = पक्ष पर, मदद पर।
५९ उमीरी = अमीरी, ठकुराई। आटे = फर्क है, अतर है। बाटे = हिस्सेमे।
६० खुदाको लडाओ = ईश्वरका लाड (प्यार) करो, ईश्वरका भजन करो।

रहै पीर दोला मदत्ति तिहारी, यलल्लाहके हाथ है जीति हारी ।
करि आज हिन्दूनि ऐसी अनेसी, तिहारे रही राजके पाज कैसी ॥६१॥

दोहा

करिय मीर भृकुटी कुटील, बोले येह जुवाव ।
किय रजपूतहि रज्ज विन, किय नवाव विन आव ॥६२॥
करहुं वंध चतुरगनी, सीसा सोर सवाव ।
कल वनास उतरहि कटक, यम दिय हुकम नवाव ॥६३॥

छंद मोतियदाम

भरो सत मत्त गयंदनि सोर, करो फिर पीठ मदत्तिय ओर ।
हकी सव तोपन जुट्टि लगाय, धुनी लववान पताकनि छाय ॥६४॥
वडे गजराजनि रंग चढ़ाय, करे उन्मत्त घनू मद पाय ।
चढै छलते हुजदार कजाक, मनो हनमंत चढ्यौ मयनाक ॥६५॥
सिरी असिता सिर झुल्ल समेत, मनो तम राह पड़ा रहि केत ।
किते गजराजनि पीठ निसान, किते गज पीठनि नोवत खान ॥६६॥
किते चवदंडिय होदनि छाय, दये डगवेरनिते खुलवाय ।
चले मिलि दंतिय पंक्ति समग्र, मनो वग पंक्ति उठीं घन अग्र ॥६७॥

---

६१. अनैसी = खोटी वात, वुरी वात, असह्य । पाज = सीमा, मर्यादा ।
६२. किय = कियों, अथवा, संदेह सूचक शब्द है ।
६४. जुट्टि = जोड़ी, वैलोंकी जोड़ी । धुनो = धूँणो, धूँम, धूआं । लववान = लोवान, एक प्रकारका सुगंधित द्रव्य, जिसको 'धूप' के स्थान पर मुसलमान लोग जलाते हैं।
६५. घनूं = घणां, अधिक । हुजदार = महावत, हाथीको चलाने वाला ।
६६. सिरी = श्री, हाथीके मस्तक पर किये जाने वाले रंग आदिको कहते हैं। असीता = काली । राह = राहु । केत = केतु ।
६७. चवदंडिय = चार डंडे वाले, अम्वावाड़ी छतरीदार हौदा । वेरनि = जंजीरोंसे ।

लसै उपमा यक और अचभ, किधो शनि भोन शशी प्रतिवव ।
ठनकत घँट चलै तनु मोर, मनू कुलटा चलि चित्तहि चोर ॥६८॥
झनकित झल्लिय कठनि मोर, मनो वरखागम वुल्लिय मोर ।
चलावत अकुशते हुजदार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार ॥६९॥
चले इभ अँदुक अचत पाय, जरे पग लोह मनो जम जाय ।
चवै मद पूर छभट्ठिय राह, मनो वरषे घन भद्द्व स्याह ॥७०॥
किते विरच्चे गज मत्त करूर, करैं गज गीरनके चकचूर ।
उखारत मूल पिचू वटु तार, वजारनि हाक परी हटनार ॥७१॥
अनी चख भालनि भेरिय अग्र, धुवा चरखीनि मची धम जग्र ।
तरायल हत्थनि दे वहुतारि, लयें पुर वाहिर निट्ठि निकार ॥७२॥

दोहा

उर अहिमति सिर भिरि उरस, हय पैंदलनि समुच्च ।
यम उजीरदवला चल्यो, कुच्च कुच्च दर कुच्च ॥७३॥

छंद भुजंगी

चढ्यो मीरखा सग जगी सवाव, चढ्यो मालवी जावरेको नवाव ।
चढे वाजी ह्वंके सवै सेद सगी, हय पक्खर टोप सन्नाह जगी ॥७४॥

---

६९ झल्लिय = झालर, हाथीके गलेमें पहिनाई जाने वाली घूघरोंकी माला ।
७० अँदुक = हाथीके बाधनेकी जंजीर । छभट्ठिय = गंडस्थल छै स्थानोंसे ।
जम = यमराज ।
७१ विरच्चे = क्रोधित । गज गीरन = मजबूत दीवार । पिचू = कैरका वृक्ष, नीमका वृक्ष ।
हाक = हल्ला । हटनार = हड़ताल ।
७२ भेरिय = सटा कर, भिड़ा कर । तरायल = चपल । वहुतारि = वहुत सी ।
७३ उरस = आकाश ।

चढे सिंधके भावनग्री मुसल्ले, करों ले कमठ्ठे वयं केक झुल्ले ।
चढे कुच्च दढ्ढे सिखा हीन मत्थे, इरानी अरब्बी तुरक्की चिगत्थे ॥७५॥
दिलीवाल संगी चढ़े जुद्ध काजं, जिनों सीसपै वंक वत्ती विराजं ।
चढ़े बंगसी रूम सीदीं गिलज्जं, भतं भत्तनि कंत कांता विलज्जं ॥७६॥
चढ़्यो मीर मस्सूरखां तेज ताजी, जिनों देख मारुत्तकी गत्ति लाजी ।
चढ़्यो खान दोरा वरच्छी घुमावै, फुलै अंग ये तो जरद्दं न मावै ॥७७॥
चढ़्यो जावदीखां सुरा अंध कंधं, लगाए दुसालो जिनो जेर वंधं ।
चढ़्यो जाफरीखां नचै वाजि अैसे, जिनूके अगे मृग्गके धाव कैसे ॥७८॥
हरेई चढ़्यो वाजि साहावदीनं, भये कंध केकीनके मान हीनं ।
चढ़्यो दावदीखां हयं वाग खच्चै, मनो पातुरी चातुरी भूमि नच्चै ॥७९॥
चढ़्यो मीर कालू हयं वे विरच्चे, मनो मेक मूगा थतं थाल नच्चै ।
चढ़्यो पीरखानं यतै वाज लक्खी, जिनोके रहे पीर चोवीस पक्खी ॥८०॥
चढ़्यो गोसखानं उड्यो हय हरेई, मनो आसमानं विमानं परेई ।
चढ़्यो मोजदारं दिवाना रवद्दं, हयं पाव मंडै करीके हवद्दं ॥८१॥

---

७५. कुच्च दढ्ढे = कूँचीके समान दाढ़ीवाले, (कुच्च = एक प्रकारका औजार जिससे बुनकर लोग सूतको सुलझाते हैं) चिगत्थे = चगताई । कमट्ठे = कवान । केक = कई । झुल्ले = वूढ़े ।

७६. दिलीवाल = देहली वाले । वंकवत्ती = टोपीके ऊपरकी कलंगी । भतं भत्तनि = भाँति भांतिके । कंत कान्ता विलज्जं = दूल्हेंको भी लज्जित करने वाले ऐसे वने ठने ।

७७. जरद्दं = कवचमें ।

७८. अंधकंधं = मस्त हुआ ।

७९. हरेई = नीला, वाजिका विशेषण ।

८१. परेई = परी, अप्सरा ।

चढ्यो सेख तत्तारखा वाजि तत्ते, उडै आसमान मनो पौन पत्ते ।
चढे खान जादे किते वाजि फेरै, उलट्टे सुलट्टे पटे दाव घेरै ॥८२॥
चढे मीरजादे सबे एक सत्थ, लखै आफताव जिनो थामि रत्थ ॥८३॥

दोहा

पंच अयुत लय संग दल, होय किलम हमगीर ।
कियो मुकाम उलंघि जल, खल वासिष्टी तीर ॥८४॥
करनसिंघ प्राकार प्रति, सजि पूरन सामान ।
कग्गल वंधुनको दये, आसुर आवत जान ॥८५॥

छप्पय

उनियारे पति प्रवल मदत फतै नृप भेजी ।
चौरू, महर्‌यो मिले तोर उत्थल अंगरेजी ॥
स्योरापति हनुमंत मिले बंधव पंचालय ।
पाट, थान, लह्रान, सदा असुरां उर सालय ॥
भारत्थ करन भारथ तनय, संग सुभट लाये सवल ।
'लावै' उवेल आये दहू, पातिल गोवरधन प्रवल ॥८६॥
नग मारन मघवान दक्ष मारन शंभूगन ।
मृग मारन मृगराज, पनग मारन पनगासन ॥
कन्हर मारन कंस, हरी हिरनाक्ष विदारण ।
हर मारन मनमत्थ, पार्थ खांडीव प्रजारन ॥

---

८४ हमगीर = साथ । वासिष्टी = बनास नदी ।
८५ कग्गल = कागज, पत्र, चिट्ठी ।
८६ चौरू, महर्‌यो = गांवोंके नाम हैं, यहां उनके स्वामियोंसे मतलब है । तोर = तेवर, त्यौरी । तोर उत्थल अंगरेजी = अंगरेजोंकी परवाह न करके । उर सालय = हृदयमें खटकने वाले । उवेल = मदद । पंचालय = पंचाला, एक ठिकानेका नाम । पाट = पाटन । थान = थाना, एक ठिकानेका नाम । लह्रान = लदाना, एक ठिकानेका नाम ।

तुरकान सेन मारन तदन, इसो रूप दरसावियो ।
"लावै" उवेल वंधू प्रवल, यम गोवरधन आवियो ।।८७।।
मार छोरु कर गह्यो धनुप कामातुर मारन ।
ईश छोरु ऊघरयो नयन तीजो प्रज्जारन ।।
अनिल छोरु व्रत परयो वहुरि मारुत झकझोर्यो ।
सार छोरु दुद्धार वहुरि वाको विप वोर्यो ।।
रन पत्थ छोरु सारथ हरी, सिंघ छोरु पक्खर घल्यो ।
करनेश छोरु कल्लह करन, वहुरि आनि पातिल मिल्यो ।।८८।।

दोहा

वखतावर, गोविन्दवर, वीर पराक्रम सूर ।
आये 'लावै' वंचि खत जैपुर हूंत जरूर ।।८९।।
निसि वासर उन्मत्त रहि, आसुर जुत्थ उथाल ।
ओ वखतो नव्वाव उर, सालत ज्यों नटसाल ।।९०।।
लावा-पति वंधु प्रवल, अलवर रहत असंक ।
तिनको धावन पठ्ये, लिखे वुलावन अंक ।।९१।।

---

८७. नग = पर्वत । मघवान = इंद्र । पनगासन = गरुड़ । कन्हर = कृष्ण ।

८८. छोरु = था तो सही, और । ऊघर्यो = प्रकट किया, खोला । दुद्धार = दोधारा, दोनों तरफ पाण (धार) वाला । वोर्यो = डुवाया । पत्थ = पार्थ, अर्जुन । घल्यो = डाला गया । कल्लह = कलह, युद्ध । पातिल = प्रतापसिंह ।

८९. वंचि = वांच कर, पढ़ कर । हूंत = से ।

९०. जुत्थ = यूथ, झुंड । उथाल = उलट कर । वखतो = बखतावरसिंह । सालत = खटकता है । नटसाल = फांस, गांस, कांटेका वह भाग जो टूट कर शरीरमें रह जाता है ।

९१. धावन = दूत । अंक = आंक, अक्षर, पत्र ।

किल्ले रक्खनहार नहिं, आज 'सलो' अनभग।
'रैनालय'मे थट्टियो, तुज्जि भरोसे जग ॥६२॥

जुध 'महुकम' थट्टो जदन, छो 'सादूल' सहाय।
आज 'पना'! तू सीस पर, श्रो असमान उचाय ॥६३॥

पहिले जुद्ध खुमानसी, असुरा दिया उत्थल्लि।
आज सुजान भुजानपै, सरम समूची झल्लि ॥६४॥

छप्पय

येम पत्र करनेश, लिखे अलवर पुग्गाये।
पति पति प्रति पति, सकल वधुनि सुनि पाये॥
अक येम उघ्घरे, लोभ लग्गो पुर लुट्टन।
आयो सरित उलघि, जुद्ध अपने गढ जुट्टन॥
छुट्टै न दान किरवान विनु, कहु दल जोर उमगियो।
लग्गियो केत वासर किरन, ज्यो आसुर 'लावै' लग्गियो ॥६५॥

मत्तो मत्ति उर मद्धि, पत्र भूपति कर दिन्हिय।
वचि सत्त वनराय, नयन रोपारुन किन्हिय॥
वयन येम उच्चरे, गमन पल जेज न कीजे।
सिलह तोप बारूद, जुद्ध सजत सब लीजे॥

९२ सलो = सल्हसिंह। रैणालय = रणजीतका घर।

९३ महुकम = महुकमसिंह। थट्टो = स्थापित किया। सादूल = शार्दूलसिंह। पना = पन्नेसिंह। उचाय = ऊँचो, सर पर रखो।

९४ सरम = शर्म, लज्जा। समूचो = सम्पूर्ण।

९५ पुग्गाय = पहुँचाये। उघ्घरे = प्रकट हुए। केत = केतुग्रह। वासर किरन = सूर्य।

अब खूब जुद्ध करिबो उचित, पूरन मदति पठाय हैं ।
जो रहत किलम सिर जोर तब, बहुरि सबलता आय हैं ।।९६।।

लखनेऊ पति कवन, कवन पंचाल धरत्तिय ।
पल्हनपुर पठ्ठान, कवन भागलपुर पत्तिय ।।
खल भावलपुर कवन, कवन सिंधी जिल्लायत ।
को बपुरो नव्वाब, टूंक जावरै मिल्लायत ।।
अनयास होत मैवासपति, तुरक तोर तुट्टै तदन ।
बनराव येम कथ उच्चरत, सोर परत दिल्लय सदन ।।९७।।

सत मत्ते मातंग, द्वार खंभारनि गज्जहि ।
अयुत पंच रजपूत, सकल आयुध तन सज्जहि ।।
प्रबल तोप रथ पंक्ति, याम प्रति नोबत बज्जत ।
सूर सुभट तोखार, सार पक्खर जुत सज्जत ।।
बावन दुरंग बंके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति ।
बखतेश तनय बनराव नृप, करत राज अलवर नृपति ।।९८।।

छंद मोतीदाम

चढै बनराव सहल्लनि भोर, परै सब शत्रुनके घर सोर ।
जुरे नर हैमर गैमर जुत्थ, मनो चतुरंगनि राधव सत्थ ।।९९।।

---

९६. जेज = देर, विलंब । मत्तो मत्ति उर मद्धि = मनमें अपने आप ही मनसबा करके, अपने आप ही खूब सोच विचार कर ।

९७. अनयास = अन आस, आशा रहित ।

९८. तोखार = घोड़े । छोगो = शिरोमणि ।

परैं वहु ठोर वमीलनि वव, नचै मनु लकप काल कुटव।
निवालनि वप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ॥१००॥
करी समकोर करीनकी पति, उठी वरखा मनु ग्रीषम अति।
लसै रद इदव देह दुनाय, जुटे मनु राह सनम्मुख आय ॥१०१॥
जरैं सव पीतरतैं सम दंत, वसी हिमके मनु भोन वसंत।
झल्लकत झूल हवद्दनि पास, किधो झर मध्य रच्यो कयलास ॥१०२॥
हय सफ सारनकी खुरतार, खनकित पाहन अग्गि उपार।
सजैं हिम साखति भूखन गात, ग्रस्यो मनु आतप भान प्रभात ॥१०३॥
लसैं पति पद्धर पिट्ठ निसंक, कसैं कर वग्गनि कंधुर वंक।
गुहे कच यालनके भरि वत्थ, सितासित पीत कनादिक सत्थ ॥१०४॥
मिलै जरदोजनितैं मखतूल, सरासनपैं मनु आतस फूल।
वरक्खत पंच तते तनु अच्छ, तलप्फत मीन मनोजल तुच्छ ॥१०५॥

---

१०० ठोर = चोट। वमीलनि = नगारे, नक्कारे। वव = रणनाद। लकप = लंकापति रावणके। निवालनि = ग्रासोसे।

१०१ समकोर = बराबर, एकसार। इदव = बहुतसे चन्द्रमा। राह = राहु। देह दुनाय = शरीरको दोहरा करके। (वक चद्रमहि ग्रसै न राहू, तुलसी)

१०२ पीतर = पीतल, धातु विशेष। भोन = घर। हवद्दनि = हौदा।

१०३ सफ = पंक्ति, कतार। साखति = घोडेका साज सामान।

१०४-१०५ गुहे सत्थ = घोडेकी अयाल (गर्दनके) बाल कनोतीके साथ सफेद काले और पीले डोरोसे गुथे हुए थे।

पद्धरपति जिस घोडे पर वैठे थे वह 'पचकल्याण' (पाच सफेद चकते वाला) था। लसै पति मनोजल तुच्छ—पद्धरपति उस पच कल्याण घोडेकी पीठ पर हाथ निशक हाथमें लगाम कसे कंधेको तिरछा कर वैठे हुए थे, उसकी गर्दनके वाल कनोतीके साथ कफेद, काले और पीले डोरोसे गुथे हुये थे, ऐसा मालूम होता था कि मानो रेशम पर जरदोजीका काम हो रहा है अथवा, धनुष पर सूर्यमुखी फूल लगा हो। उसके तेज और स्वच्छ शरीर पर वे पांचों चिकत्ते, जब वह उछलता था तो मालूम होते थे मानो थोडे जलमें मछली तड़पती हो।

उड़े नभ रागनि लग्ग छछोह, मलप्फत पंच बरच्छनि वोह ।
सजै तिनपै असवार कजाक, छके उन्मत दुवारनि छाक ॥१०६॥
'लखा' हंनुमंत जिसे उमराव, जिनूं जुध मद्ध न डुल्लत पाव ।
चढ्यो मनु सिंधु उलंघत पाज, जुरे जुध कौन बनेशते आज ॥१०७॥

दोहा

यम अक्खी बनराव नृप, हारि जीति हरि हत्थ ।
लरना मरना मारना, येह तिहारे सत्थ ॥१०८॥

कर मुच्छनि घल्ले रवत, बुल्ले 'पनो', 'सुजान' ।
जो खल अग्गल भग्गि है, उगि हैं पच्छिम भान ॥१०९॥

सकल जुद्ध सामान दिय, बिदा किये बनराज ।
मनु जग वोरनको उदधि, लगे उलघन पाज ॥११०॥

'थाना' पति 'हनुमंतसी', कँवर गढी पति 'कान' ।
'वीजवार' गढपति 'लखैं', कर झल्ली किरवान ॥१११॥

छंद मोतीदाम

गढीपतिके रनजीत कुमार, सुनी यह बत्त गह्यो कर सार ।
किते वलके खल टूंके नवाव, हरों गज बाजि करो बिन आब ॥११२॥

---

१०६. छछोह = उत्साह सहित । मलप्फत = उछलते हैं । रागनि = रानोंके (जंघाके) इशारेसे ही । दुवारनि छाक = दूसरी वार निकाली हुई शराब । पंच बरच्छनि वोह = पांच बरछियों जितनी लम्बाई तक ।
१०९. रवत = रावत, वीर । अग्गल = आगे, सन्मुख ।
११०. वोरन = डूबोनेके लिए ।
१११. वीजवार = अलवर रियासतका एक प्रसिद्ध 'ठिकाना' । थानां, गढ़ी = ये भी अलवरके ठिकानोंके नाम हैं ।

यतै हनुमत कहि यह वत्त, अवै घन मेच्छ भये उन्मत्त।
गह्यो कर वान उदग्गनि हत्थ, महिख्य समान उनत्थहि नत्थ ॥११३॥
'लखै' यम अक्खिय वत्त निसंक, करो खल जुद्ध निकारहु वंक।
सवो दल पूर मदत्तिय संग, करो न विलंव जुरो यम जंग ॥११४॥
हनूं खलके दल खग्गनि जोर, शकिते मग ग्गहि छाँडि मरोर।
यतो वलहीन करो खल जुद्ध, जुरै नन जाय कहू फिर जुद्ध ॥११५॥

दोहा

विटि सनाहनि अट उर, सकल जुद्ध तन सज्जि।
चढे वीर पद्धरपती, पूर नगारनि वज्जि ॥११६॥

छंद भुजंगी

घन घोर ववील वज्जे निघात, उडे गैन पखी मनो तूल पात।
'रणो' सूर वीर चढ्यो वाजि तत्ते, भये रोसकी ज्वालते नैन रत्ते ॥११७॥
महासूर वीर चढ्यो येम 'सूजो', मनो भानके वाजिपै भान दूजो।
'पनू' पक्खरादी हय पीठि ओपै, मनू कामकी सेनपै ईश कोपै ॥११८॥
'पना'को तनू येम 'गोपाल' सज्जै, धरा नेत वधी हय खूर मज्जै।
चढ्यो रेवत पूत 'सुज्जान' केरो, भयो जेठके भान जैसो उजेरो ॥११९॥
'हरन्नाथ' कुम्मेरको नद चढ्यो, धनें आसुरोके घरो सोक वढयो।
दरोगो चढयो 'हाजर्यो' तेज ताजी, करै लून राई भई रंभ राजी ॥१२०॥

---

११३ महिख्य = भैंसे। उनत्थहि नत्थ = बिना रस्सी वालोंके नाकमें रस्सी डाल दूंगा।
११५ जोर = बल, ताकत। मरोर = मरोड़, ऐंठ, गर्व।
११६ विटि = वेष्ठित करके। अट = आटियें, कड़ियें।
११७ ववील = नगारे। निघात = चोट। गैन = गगनमें, आकाशमें।
११९ धरा नेत वधो हय खूर मज्जै = वह भाला लिए हुए था और उसका घोड़ा अपने खुरसे जमीनको खोदता था। तनू = पुत्र। रेवत = हाथी। केरो = का।
१२० करै लून राई = नोन राईको ले कर और वार कर अग्निमें डाल दिया जाता है। ऐसा करनेसे 'नजर' दृष्टि-दोष नहीं होता।

कपाली चढ़्यो बैलपै लैर लग्यो, चढ़ी सिंघ काली, लखै बैल भग्यो ।
गिरि मादिके मेखली रुंड माला, गिरे अंत तंतावली मृग्गछाला ॥१२१॥
गिर्यो कालकूटं परी भंग तुच्छी, परे बित्थुरे भूमिपै नाग बिच्छी ।
जटी भूत प्रेतं लिये लैर लग्यो, हठी बीरभद्रं तमासै उमग्यो ॥१२२॥
चली जुग्गनी चोसठी पत्र झल्ले, बसूहीन सट्ठी महाबीर चल्ले ।
मुनि जंत्र पाणी असोमं बजायो, ललक्कारि भैरूं किलक्कारि आयो ॥१२३॥
गुडी लों उडी गिद्धनी व्योम छायो, नहीं हूर रंभा रथों पंथ पायो ।
भिरी पक्खरों पक्खरों भीरि पूरं, हयं गज्ज गाहं भयं चूरमूरं ॥१२४॥
धरा धूसरी धूरि आकास लग्गी, हयं खूरते सीस धूनै पनग्गी ।
सबै सूरवीरं धर्यो सिंघ भेसं, कर्यो पद्धरि सेन 'लावै' प्रवेसं ॥१२५॥

दोहा

अब अरजन राठोरको, आवन कहूं बखानि ।
जुद्ध भयो "लावै" जदन, जिहि बिध जुट्टे आनि ॥१२६॥
बनयसिंघ मातुल तनय, जिनो अरज्जुन नाम ।
मेरतियो कुल राठवर, पुर'मारौठ' सुधाम ॥१२७॥
हैदल पैदल संग दय, बिदा किये बनराज ।
यम कहि "लावै गढ्ढ"की, तुज्ज भुजों पर लाज ॥१२८॥

छंद मोतीदाम

चढ्यो हय पक्खर बिट्टि रठोर, पर्यो सिर शेष समस्तनि जोर ।
डुली मनि मत्थ फनी फन चंपि, उरब्बिय ताम थरत्थर कंपि ॥१२९॥

---

१२१. कपाली = शिव । लैर लग्यो = पीछे २ चला । मादिके = मादक द्रव्य ।
१२२. जटी = जटा वाले, शिव । लैर = साथ ।
१२३. वसूहीन सठ्ठी = आठ कम साठ अर्थात ५२ भैरव ।
१२९. उरब्बिय = उर्वि, पृथ्वी । ताम = उस समय ।

चले चक पत्र चलद्दलभाति, तलातल ज्यो अतला विचलाति ।
शस्त्रनि तेज हुतासन धुक्ख, प्रलैं रविकी मनु तुट्टि मयुक्ख ॥१३०॥
हय सफ वज्र हरग्गिर खिज्ज, खिवें खुरतार मनो घन विज्ज ।
उडी रज डवर अवर गोम, विहगमकी पर वज्जिय व्योम ॥१३१॥
कियो मनु वाडव सिंधु प्रलोप, कियो मनु कसपैं कन्हर कोप ।
भरी मनु सिंघ करीनिपैं डग्ग, अरज्जन येम लग्यो जुध मग्ग ॥१३२॥

छप्पय

जिमि जैमल राठोर मरन चित्रागढ पायउ ।
पित्थुर सभरि ईश येम अरवुद्दनि आयउ ॥
धर छुट्टत चदेल आनि अन्हल सिर तुट्टिय ।
कन्हर पन कर हल्ल जग फतंपुर जुट्टिय ॥
यह तोर वदन राठार तन, वीर नूर वरसावियो ।
पन झल्ल पूर मारन मरन, येम अरज्जन आवियो ॥१३३॥
लख वटेर सिच्चान मनहु चीतो मृग मारन ।
हेरि पत्थ जयद्रथ वाघ हेर्‌यो मनु वारन ॥
हर हेर्‌यो मनु मार मोर हेर्‌यो हुत्तासन ।
सर हेर्‌यो आगस्त, पनग हेर्‌यो पनगासन ॥
पायो कुलग कुल वाज मनु, भीम दुसासन पावियो ।
आसुरा सीस 'लावं' मलफि, येम अरज्जुन आवियो ॥१३४॥

---

१३० यहा 'पत्र' के स्थान पर 'पत्त' पाठ होना चाहिए। चक पत्त = दिशाओंके मालिक। विचलाति = विचलित हो गये।
१३१ सफ = पक्ति, कतार। खिज्ज = खिरना, टूटना। खिवें = चिनगारी निकलती है, चमकती है। डवर = समूह। गोम = धुधला गया।
१३३ चित्रागढ़ = चित्तोड़। पित्थुर = पृथ्वीराज। अरवुद्दनि = अर्बुदाचल, आबू पहाड़।
१३४ पत्थ = पार्थ, अर्जुन। वारन = हाथी। मोर = सर्प। मलफि = कूद कर।

जिमि जालंधर तक्कि, जुद्ध जुट्टन हर आयो।
हैहय नै हंकार, मनहु फरसाधर धायो॥
पंडव पत्थ सहाय, कुस्न आयो जिमि जद्दव।
कृपि सूकेते मेघ, मनहु धायो धुर भद्दव॥
हय हक्कि बीर आतुर यते, रज डंबर नभ छावियो।
"लावै" उवेल असुरां लरन, येम अरज्जन आवियो॥१३५॥

दोहा

येम अरज्जुन आवियो, "लावा" मधि राठोर।
तदन रवद्दनके हिये, पर्‌यो अचानक सोर॥१३६॥
तुरकनके आगम तदन, कर गहि ऐचें काल।
आये जुत्थपै जुत्थ मनु, सिहालय श्रंगाल॥१३७॥
के मरना के मारना, यम नवाव पन झल्लि।
हम ऊतरि हैं फीलतें, "लावो कोट" उत्थल्लि॥१३८॥
फिरी प्रवल चतुरंगनी, पुर दुरग चहुं कोर।
इत हिन्दुनि उत आसुरनि, दगी तोप दहुं ओर॥१३९॥

छन्द मोतीदाम

यतै दुहुं ओरनि दग्गिय तोप, किये मनु काल प्रलै कृत कोप।
मिले सद मध्य जमूर जुगाल, किलक्कत जुग्गनि जानि कराल॥१४०॥
भयो दुहुं ओर भयानक सद्द, पर्‌यो उन्मत्त मतंगनि मद्द।
भयो उर सूरनके उछरंग, थरत्थर कंपिय कातर अंग॥१४१॥

---

१३९. फिरी = घूमी, घूम गई, घेरा डाल लिया। दुरंग = किला।
१४०. सद = शब्द। सदमध्य = तोपोंके शब्दोंके बीचमें। जुगाल = दोनों ओरके।
१४१. उछरंग = उत्साह।

धुनी उडि सोर उपट्टिय ज्वाल, किधो घन तुट्टिय बिज्जु कराल।
तुपक्कनि तोप जमूरनि जुट्टि, परै नर हैवर प्रान विछुट्टि ॥१४२॥
उडी झर सोर बिथोरत बाय, लगी मनु ग्रीषमकी ऋतु लाय।
तलत्तलि तोय तते मनु तेल, लगे दुहु ओरनितैं यह खेल ॥१४३॥

छप्पय

मुख्य तनय 'सादूल' सुभट सगी रोपारुन।
सजि आयुध सन्नाह, बीटि पक्खर तोपारुन ॥
खल खग्गनि खडिहु, येम वायक मुख बुल्लै।
पाहन रेख प्रमाण, 'पनैं' पूरन पन झल्ले ॥
हय हक्कि समुख चतुरगनी, बहुरि मुगल दल मारिहू।
करि जुद्ध येम चवग्गनि फिरि, आसुर देश प्रजारिहू ॥१४४॥

दोहा

पनयसिह पढरपती, सूरवीर गहि सार।
तदन मुगल दलपै प्रबल, यम हक्के तोयार ॥१४५॥

छद मोतीदाम

चढे मनु सिंधु उलघन पाज, करी मनु सिह करीनिपै गाज।
किधो बडवानल कोप समुद्र, किधो हथनापुरपै बलिभद्र ॥१४६॥

---

१४२ धुनी = धूली, धुआँ धूम्र।
१४३ झर = लपट, ज्वाला। सोर = बारूद। बिथोरत = फैलाना। बाय = वायु।
लाय = अग्नि। तलत्तलि = तलातल तकका। तते = गरम हो गया।
१४४ रोपारुन = गुस्सेसे लाल। तोपारुन = घोडोंको। चवग्गनि = चौगान, मैदान।
१४५ तोयार = घोडे।

किधों कुल अद्रनि इंद्र हकारी, किधों कुल कद्रुनिपै पनगारि ।
किधों सर सोखन कोप अगस्त, किधों द्रुम डारिनपै गज मस्त ॥१४७॥
किधों कुल रावनपै रघुराय, किधों कुल कंज हिमालय-वाय ।
किधों सहिश्राभुजपै दुजराम, किधों हनमंत असोक अराम ॥१४८॥
किधों इभकुभ व्रकोदर हत्थ, किधो जयद्रथ्थहिपै पन पत्थ ।
किधों त्रिपुरासरपै त्रिपुरारि, किधो मुरदानव सीस मुरारि ॥१४९॥
किधों मृग जुत्थनपै मृगराज, किधों लखि चंग कुलंगनि बाज ।
किधो दखके मखपै हर ताप, किधों कुल जादवपै ऋषि श्राप ॥१५०॥
किधों घननादपै लक्ष्मन वीर, जिही कुल मेच्छ'पनू' हमगीर ॥१५१॥

दोहा

तेज बाजि हक्के तदन, पनयसिह यह बिद्धि ।
मुख चढ्ढ़े जेते किलम, मरे परे धर मद्धि ॥१५२॥
किते वोह कीने किलम, लग्गे लोहन काय ।
प्रवल नरुकनके तदन, सकर भयो सहाय ॥१५३॥
येम जोरि चतुरगनी, पद्धरपति 'पन्नेस' ।
किलम संहारनको भयो, बीरभद्र गनभेश ॥१५४॥

छंद भुजंगी

करों तेज तांजीनकी वाग झल्ले, धरा लूटिबेको महासूर चल्ले ।
मतो मत्ति ले सग जंगीन सन्ने, परे मेच्छ किल्लोनपै जोर घन्ने ॥१५५॥

---

१४७. अद्रनि = पहाड़ । कद्रनि = सर्प ।
१४९. व्रकोदर = पांडुपुत्र भीम । पत्थ = पार्थ, अर्जुन ।
१५०. चंग = चंगे, मोटे ताजा । कुलंग = एक बतखकी जाति ।
१५१. हमगीर = समान, साथी । जिही = ज्यूहीं; वैसे ही ।
१५२. यह विद्धि = इस प्रकार । मुख चढ्ढ़े = सन्मुख आया ।

हरी देख मालीत भूमी प्रजारी, परे आसुरोके घरो सोक भारी।
पुरी प्रज्जरी मेच्छकी धूम धायो, धरा व्योम धप्पे मनू अभ्र छायो ॥१५६॥
मिले नग्र मेच्छदवारे गरद्द, भयो टूक भारी हहकार सद्द।
चकै ओचकै तारुनी वृद्ध छोना, किती आसुरी गर्भ श्रावत ऊना ॥१५७॥
मृगाकसीपी त्यो पुरी शक्र कूटी, किधो धीर पुडीर लाहोर लूटी।
हरे कोपि कुट्टी पुरी त्यों अनगी, विधूसे 'पनै' मेच्छकी भूमि चगी ॥१५८॥

दोहा

वूडी सोक समुद्र विच, जीव निसासनि जात।
वीवी दवलउजीरकी, यम लिखि भेजी वात ॥१५९॥
'पना' एक रघर सुना, जिना दिया फुरमाय।
पकरेंगे हमको वहै, आजकालमे आय ॥१६०॥
सकल 'टूक' वसवान खल, सरल भये तजि वक।
सधि करहु 'करनेश'ते, यम लिखि भेजे अक ॥१६१॥

छंद नीसानी

यम लिखि दोलउजीरने पुरजा पहुँचाया।
खान विरादर नोकरो सवको बुलवाया ॥

---

१५५ झल्ले=पऱडी। मतो मत्ति=अपने आप। सन्ने=सेना, फौज। घन्ने=बहुत।
१५६ मालीत=दौलत। हरी=छीन ली। धायो=फैल गया, दौडा। धप्पे=व्याप्त हो गये, भर गये।
१५७ अभ्र=वादल। नग्र=नगर। गरद्द=गारत हो गये, वरवाद हो गये। चकै ओचकै=घवड़ा गये। छोना=लड़के, वच्चे। ऊना=अधूरा।
१५८ मृगाकसीपी=हिरण्यकश्यप। चगी=ताजा।
१६० रघर=प्रणके पक्के राजपूत। जिना=जिसने।
१६१ वसवान=वसने वाले।

सबके बीच मसूरखां पुरजा वंचवाया ।
फिर कासीद जवानदां समंचार सुनाया ॥१६२॥
उस 'पन्नै' सादूलदे सब देश जराया ।
जारी सब जरातिको मध छार मिलाया ॥
खेहाडंबर धूमते धर अम्बर छाया ।
हल्ला बोलि हकारिकें किल्ला गिरदाया ॥१६३॥
'टूक' समेती भूमि गढ़ लूटनका दाया ।
करि समझासि नवावकों सबनै समझाया ॥
उस वरि यों 'दोले' नवाव पुरजा सुनि पाया ।
जहर भरे जिह्मग जिम घन रोपण छाया ॥१६४॥
रोप मुसल्ले आनि उर हल्ले सिर लग्गो ।
उस विरियों 'खुम्मान'वा 'हनुमंत' उमग्गो ॥
'सिवरा'के 'हनुमंत' भी वांई भुज लग्गो ।
केसर सन्ने कापरे कर तेग उनग्गो ॥१६५॥
पानिप तासे भेरि नद वीरा रस वग्गो ।
केते सिधू राग सुनि कातर गन भग्गो ।
तोपन दिघ्घ अवाजतें धरनी धग धग्गो ।
कोल कमठ्ठें जोर परि शिर धूनि पनग्गो ॥१६६॥

---

१६२. नै=को । पुरजा=पत्र ।
१६३. दे=के । छार मिलाया=मिट्टीमें मिलाया, वरवाद किया । गिरदाया=घेर लिया ।
१६४. समेती=सहित । दाया=हक । जिह्मग=टेढ़ा चलने वाला सर्प ।
१६५. हल्ले सिर लग्गो=हमला कर दिया । सन्ने=सने हुए, रंगे हुए । कापरे=कपड़े ।
१६६. धग धग्गो=कंपित हो गई ।

कारतूस घन युट्ठु कर सुम्मा लग थग्गे।
एक पलीती कालिका दहू ओरनि दग्गे॥
रिंजक प्याला सोरही झाला जगमग्गे।
यारो परलै कालदी ज्वालानल जग्गे॥१६७॥

छन्द मोतीदाम

मिलक्किय दीन दहूजुध पूर, हलक्किय बैठि विमाननि हूर।
किलक्किय जुग्गनि शब्द कराल, खलक्किय भूमि किते रुहिराल॥१६८॥

तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिंदिपाल।
गुपत्तिय खजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार॥१६९॥

फरी पिसतोल गुलेल कुठार, थके नन हत्थ बकै मुख मार।
जुरै कहू सीस विहीन कवध, परै कहू काल कला कृत फद॥१७०॥

किते विन पाय परे तरफात, किते कढि प्रान पयाननि जात।
किते कर पाय परे अनमेल, रचे मनु भूमि प्रपचिय खेल॥१७१॥

---

१६७. घन=ज्यादा। युट्ठु कर=युक्त कर, लगा कर, डाल कर। सुम्मा=तोपको साफ करनेका डंडा, जिसके सिरे पर एक गुच्छा लगा हुआ होता है। लग थग्गे=कंपित हो गए। पलीती=बत्ती। रिंजक=तोपके कानमें रखी जानी वाली बारूद। प्याला=तोपका कान। झाला=ज्वाला।

१६८ मिलक्किय=मिले। दीन दहू=दोनों धर्म वाले, हिन्दू, मुसलमान। खलक्किय=बहे। रुहिराल=खूनके नाले।

१६९ जमूर=छोटी तोपें। जुलाल=बड़ी बन्दूक। परघ्घन=आगल। सूल=त्रिसूल। भिंदिपाल=गोफा, गोफला, एक अस्त्र विशेष। धूप=तलवार, खांडा। करत्तिय=कतरनी। चुक=गदा।

१७० फरी=शस्त्र विशेष। गुलेल=एक प्रकारका अस्त्र, मूल प्रतिमें "गुलाल" पाठ है। जुरै=जुड़े, भिड़े।

१७१. तरफात=तरफराना, तड़फड़ाना।

लई पद चंपि अंगूठनि भूमि, सरव्वसु दव्व लई मनो सूमि ।
खरे हनुमंत दुहु तिहँ ठौर, लये मनु हिंदव सिंधु हिलोर ॥१७२॥
लये तहँ मीर मसूरहि मारि, हने मनुं सिंधु तनै त्रिपुरारि ।
पर्यो रन खेत मसूर मलेच्छ, मचक्किय सेन किलंमनि पच्छ ॥१७३॥

दोहा

वज्जहि पूरन जाम प्रति, मनहु घरी वरियार ।
यह प्रकार दुहुँ ओरते, वज्जे सार अपार ॥१७४॥
खान पान सुध वीसरी, धरी न उरमें धीर ।
मरन मसूर मलेच्छको, संभर दवलउजीर ॥१७५॥

छन्द मोतीदाम

करे तहि दोलउजीर विलाप, भयो सुरभंग महिख्य अलाप ।
लख्यो तन तेगनतें चकचूर, पुकारत मेक मसूर मसूर ॥१७६॥
वढ्यो उर सोक असाद्धि प्रलाप, तच्यो वडवानलकी मनु ताप ।
पर्यो भुव प्रान दुखी मुख फैन, तलफ्फत व्याधि हन्यो मनु अैन ॥१७७॥
यते वहु दीर्घ विरादर आय, दयो उरु धीर किते समुझाय ।
सुनी रजपूतनकी कुल रीत, परी हमको यह सच्च प्रतीत ॥१७८॥
मरै तिनके घर मंगल होय, करै जुध मृत्यू विलाप न कोय ।
करो नन सोक दवल्लउजीर, करो द्रढ़ पांव धरो उर धीर ॥१७९॥

---

१७२. चंपि=दावना। दव्व लई=दावली, अधिकारमें कर ली। सूमि=घोड़ोंके खुरोंसे।
१७३. तनै=तनय, पुत्र। मचक्किय=सरकी, हिली, हटी।
१७६. महिख्य अलाप=भैंसेकी तरह चिल्लाया।
१७७. तच्यो=तपा हुआ। अैन=हरिण।
१७८. विरादर=भाई।

छंद निसानी

मरा मीर मसूरको दुख धारा तव्वी ।
ज्यो घ्रत डारा आगिमे हिय पावक हुव्वी ॥
जानिक तत्ते तेलमे वूदें परि अव्वी ।
जानि विरूते सेरदी पग साकल दव्वी ॥१८०॥

कायमखा कपतानसे करि वाते चव्वी ।
सेख इनायत खानके भुज पलटण ढव्वी ॥
टेरि कुतवीखानसे खुद कहा मुरव्वी ।
हल्ले पूठे ना फिरै कल उसकी फव्वी ॥१८१॥

के तुम किल्ले तोरियो के मरियो सव्वी ।
देखो नव्वी क्या करै कर नाख तसव्वी ॥
उस विर यो वज्जीरदौलकू कहै कुतव्वी ।
जानिक सुर्गे लेनको हिरनाख्य मुरव्वी ॥१८२॥

दोहा

रहो नवाव निसक उर, सोक न करहु सयान ।
मारा मीर मसूर तहु, खर्यो कुतव्वी खान ॥१८३॥
प्रलय सिंधु सम खिजि असुर, गवने तोपन दग्गि ।
मही काल वासर समय, यहि विधि चले उमग्गि ॥१८४॥
स्याम वसन सायुध सिली, मिली भयानक भेस ।
मनहु हलाहलकी सरित, पुर मधि कियहु प्रवेश ॥१८५॥

---

१८० तव्वी = तव । हुव्वी = उठी, । अव्वी = आव, पानी । विरूते = क्रोधित ।

१८१ चव्वी = टेढी, चिढानेको । ढव्वी = सभलाई, अधिकारमे दी । पूठे = पीछे । फव्वी = शोभा होगी । मुरव्वी = मालिक, स्वामी ।

१८४ मही काल वासर = प्रलयका दिन ।

छप्पय

सेन समुख तिह समय आनि 'हाजरियो' जुट्टे ।
हुय कोलाहल शब्द किलम इक्वान कुट्टे ।।
खंजर सेल कटार, तेग तुरकायन तच्छे ।
स्याम काज सिर दयो, पाव धर दिये न पिच्छे ।।
सिर माल काज संकर लयो, सिर विहीन धर फिर लर्यो ।
बरि रंभ गयो सुरलोक मग, एम दरोगो 'हाजर्यो' ।।१८६।।

दोहा

सुनत वत्त रनजीत यम, आगम असुर समाज ।
मनहुं जुत्थ मातंग पर, लखि गमन्यो मृगराज ।।१८७।।
उते कुतब्बीखान अरु, यत रणजीत सजोर ।
तदन पत्थ जयद्रत्थ लों, पर्यो दहुनि पर जोर ।।१८८।।

छंद भुजंगी

'रणों', खांकुतब्बी तणे सीस चल्यो ।
मनो मत्त मातंग खूनी मचल्यो ।।
खिज्यो खांकुतब्बी मनूं सिंधू लोप्यो ।
किधों पत्थके रत्थपै द्रोन कोप्यो ।।१८९।।
जरासिंध लों अंगमें जोर पायो ।
पनग्गी मनू पॉय पुच्छी दबायो ।।
दहूंकी अनी मोसरों मुंह चढ्ढी ।
दहूंके करों ज्वालसी धूप कढ्ढी ।।१९०।।

---

१८६. कुट्टे = कूटे, मारे । तच्छे = छील दिये । स्याम = स्वामी ।
१९०. अनी = फौज । मोसरों = मंछें, होठोंके बाल ।

दुहूके जुरे छोड़ते नैन छक्के।
खरी लाट लग्गी, मनू लोह पक्के॥
दहूँ मेरलो भूमिपै मंडि पाँव।
दहू बीर वके करैं दाव घाव॥१६१॥
दहू प्रान बाजी रची मोह छड्डे।
दुहूँ जै पराजै भुजो भार मड्डे॥
दहू जेम जुट्टे मधु कीट दानू।
मनी हेत श्रीकृस्न जामूत मानू॥१६२॥
किये मेच्छ वोह किते पूर घाय।
भयो भीम कैलास पत्ती सहाय॥
वही मेक रनालय हत्थ रूक।
तुपक्क फरी मुट्ठि मेच्छ बिटूक॥१६३॥
पर्‌यो खाकुतव्वी सबै सेन भग्गी।
लगे लैर हिन्दू लिये तेग नग्गी॥
भई जीत हिन्दूनकी मेच्छ हारे।
किले मद्धितें कूट पीछे निकारैं॥१६४॥

दोहा

एक सहस अरु एक सत, एकादस जुध जुट्टि।
"रैनालय" कट्टे रवद, किल्ले बाहिर कुट्टि॥१६५॥
किल्ले भिरि भग्गो किलम, जे नहि जुट्टन जोग।
मरे डरे घायल परे, भये अजीरन रोग॥१६६॥

१६१ छोड़=क्रोध। मेर=मेरू पर्वत।
१६२ जामूत=जामवन्त। वोह=मार। घाय=घाव।
१६३ रूक=तरवार। मेक=एक। रनालय=रणजीतसिंहका स्थान, लावाकी युद्ध भूमि। वही=चली। बिटूक=दो टुकड़े हो गये।
१६५ रवद=म्लेच्छ, मुसलमान।

अहुटे दवलउजीर पँह, जियत रहे जे आय।
अपनी अपनी बुद्धि वल, कहत सकल समुझाय ॥१६७॥

वचनिका

नवावके सामने आया, हल्लेका जिकर चलाया। किस तौरसे आजका दग्गा, कोन भिरा कोन भग्गा। उस वखत वोले कालू मीर, फुरतके फरिस्ता अकलके उजीर। इस किल्लेमें सुजानसिंघ ठाकर, जिसके 'हाजर्या' चाकर। 'हाजर्या'ने आपा दिखलाया, गलवेके साथ वाहरको आया। 'हाजर्या'ने जान झोका, आफतावने विमान रोका। निमककी सरीतीपै सिर दिया, हूरके विमान वैठि आसमानको गया। आजके हल्लेमें नवावकी दुहाई, सीनासें सीना मिला कर तरवार चलाई। सव जवान वहां गया था, किल्ला लेनामें कसूर ना रहा था। उस सुन्ने-रनि मूंठ वालेने जुलम किया, तमाम मुसलमानोंको घेंचि किल्लेकी रनीमें दिया। क्या अच्छी तरवार चलाई जिस वखत वोले खान दुर्जन, काल-पीके सैयद ईलाहीवकसके फरजन। हिन्दु जाति कालके काल, वाडवके

---

१६७. अहुटे = वापस लौटे।
वचनिकामे-जिकर = चर्चा, प्रसंग। गलवेके साथ = हल्लेके साथ। जान झोका = तन-मनसे महनत करना, तन मनसे लड़ा। सरीतीपै = एवजमें। घेंचि = खींच कर। रनी = खाई। वितुंड = हाथी। जलाल्या = दरवाजेके वीचमें लगा हुआ पत्थर जो किवाड़ोंको रोकता है। (यहां जलाल्याकी टक्करका अर्थ है अडिग) उरस = आकाश। झाट = फेंट, कोडा, चपेट।

वचनिका = यह भी दवावैतकी तरह होती है। अर्थात् यह भी गद्यका एक रूप है। इसका भी "रघुनाथ रूपक" में इस प्रकार लक्षण लिखा है—

वचनिका दो प्रकारकी होती है पदवंध और गदवंध। पदवंधके दो भेद हैं। प्रथम भेदसें तो केवल 'वारता' ही रखना चाहिए, दूसरे भेदमें वारतामें मोहरा (अनुप्रास) रखना चाहिए। और दो ही भेद गदवंध वचनिकाके होते हैं। प्रथम

ज्वाल । सेरोके झुड, वलके वितुंड । हूरोके हार, दिलके उदार । कालीके चक्र, जलाल्याकी टक्कर । उरसकी तेग, मारुतका वेग । पोरसका भीम, उतरकी सीम । बीरोके बीर, सागरके धीर । नाहरके थाहर लोहकी लाट, जगूके जालम जमकी सी झाट । लावाके किल्लेमे ऐसे रजपूत, सारके सगर बलके मजबूत ।

दोहा

यम वुल्ले इकतारखा, सुनि नवाब यह बात ।
सकल विरादर बीगरे, अब प्रानन पर घात ॥१९८॥
कर कफनी कोपीन कर, कर करवा भर आब ।
अब मक्का जैबो उचित, नवणो नही नवाब ॥१९९॥
आयुधखान अजीमखा, यम अक्खी दहुँ आय ।
ते श्रुति सभर सवनके, लगी करेजनि लाय ॥२००॥
कही मीर मारुतखा, सुनहु दवलउजीर ।
कै मरिहै कै मारिहै, नहि फिर होय फकीर ॥२०१॥

छंद भुजंगी

चढ्यो कोपि उज्जीरदोला नवाब ।
लिये जुद्धके संग जंगी सबाब ॥

भेदमे तो आठ मात्राका पद होता है और दूसरे भेदमे २० मात्राका पद होता है । उक्त वचनिका पदबंध वचनिकाका दूसरा भेद है । इन सब बातोको जाननेके लिए 'रघुनाथ रूपक' जो एक उत्तम ग्रंथ है, देखना चाहिए ।

१९९ करवा = शिकोरा, मटकाना, मिट्टीका छोटा गिलासनुमा पात्र । नवणो = नम्र होना ।
२०० लाय = अग्नि । श्रुति = कान । सभर = सुन कर ।
२०२ सबाब = असबाब, सामान ।

करी अग्र तोपं किये नद्द शद्दं ।
सदा मादिकं पाय मत्ते दुरद्दं ॥२०२॥
किये भूत कप्पाटकी फेट कज्जं ।
परि त्रास सोई भई प्रान तज्जं ॥
खिले टोप सन्नाहके वान सज्जे ।
भयो कोह भेरी भयानंक वज्जे ॥२०३॥
यते लागया नै वड़े राग सिंधू ।
मिले साजि हल्ले महावीर हिन्दू ॥
नरुकूनि ले सस्त्र हत्थौ उकद्ढे ।
किधों कोटतें सावठे सेर कद्ढे ॥२०४॥
दहूं दीन आरानमे प्रान झोंके ।
लगे खेल विम्मानकों भान रोके ॥
मुनि वीर ऊमाहि ले संभू आयो ।
तजे लोक वृन्दारकूं वेत छायो ॥२०५॥
घरी चार लों सांवठी सोर दग्गी ।
तप्यो लोक तेगूनकी रीठ वग्गी ॥
किते वीर वंके गजों घाव मंडै ।
परे पाव हीनं हयं प्रान छंडै ॥२०६॥

---

२०३. फेटकज्ज = टक्कर देनेके लिए। कप्पाट = किवाड़। किये भूत = पागल किये। त्रास = डर।

२०४. सांवठे = इकट्ठे। कद्ढे = निकले, बाहर आये। यते...सिंधु = इधर सिंधुराग (वीर रसकी राग में) 'दूहे' कहे जाने लगे।

२०५. आरान = युद्ध। वेत = वेंतकी तरह।

२०६. रीठ = युद्ध।

किते अग हीने मुसल्ले कजाकी ।
लरें लुत्थ बत्थे रहे प्रान वाकी ॥
किते भूत वैताल भैरु किलक्कें ।
किती जुग्गनी गिद्धनी श्रोन छक्कें ॥२०७॥
धनी जावरेको अनी जोर गिल्यो ।
घनै घाय आरानके घान घल्यो ॥
उतै जावरे टूक पत्ती मुसल्ले ।
यतै रूक हत्थो करन्नेश झल्लै ॥२०८॥

छन्द दुर्मिला

उतते तुरकान यते हिन्दवान दहु पुर वाहर जुद्ध किये ।
तिह ठोर रठोर 'अरज्जन' से 'रनजीत' उदग्गनि खग्ग लिये ॥
दहु राम रु 'स्याम' 'हनू' तनयें 'हरनाथ' 'कुमेर'के पूत हले ।
बहु रेवतसिंह 'गुपाल' 'सुजान' 'पनै' सुतनै किरवान झलै ॥२०९॥
'बखतेश' 'सुजान' 'गोविन्दरु' 'पातिल' 'गोवरधनरु' 'लदान' पती ।
'करनेश'के पुत्र 'उदैकनदेव' दहू उमगे मृगराज भती ॥
उगली किरवान मियाननते मुगली भद कट्टि परैं विथुरे ।
शर पेख पिनाकनि वाननकी अवली अनहद्द सवद्द करें ॥२१०॥
अरिवद्ध विसव्द कराल किते करि कोप कुलाहल शव्द कढै ।
करनेश उजीरदवल्लनकी दहुँ ओर दुहाई मनुष्य पढै ॥

---

२०८ जोर गिल्यो=बलसे भरा हुआ । घने=अधिक, अनेक । घाय=प्रहारोंसे, वारोंसे । घान=समूहमें । घल्यो= सम्मिलित हुआ । रूक=तलवार ।

२१० भती=भांति, तरह । उगली=निकाली । भद=गिरनेकी हल्की आवाज, जैसे पट, धप, धम वैसे ही भद है । विथुरे=बिखर गई, फैल गई ।

वजि सार कुठारन वारनि ले, नर हैमर गैमर देह फटैं ।
खिर वाढ़ परै खग धारनतैं मनु आरनतैं चिनगी उछटै ।।२११।।

कछवाह अकंटक भूमि रमै, तुरकान हने खग धारनते ।
मनु सग्र तनै खिनि कोटि पचास, तलातल भूमि कुदारनतें ।।
हिंदूवान विमान अपच्छरकी गलवाँह मनो दमनी घनकी ।
तुरकान लिए परलोक परी गमनी मनु जुट्टिी जुराफनकी ।।२१२।।

हर मुंडनि हार वनाय हँसे, विहंसी सव जुग्गनि श्रोनछकी ।
पल खाय अघाय पलच्चर नाचत भूत पिसाचनकी किलकी ।।
वजि भैरव डैरव जत्र मुनी, धुनि गिद्धनि गुद्द अघाय उडी ।
लखि आतुर सार प्रहारयतें किलमी गति सोक समुद्र बढ़ी ।।२१३।।

ढरके मन् कुंभ मजीठनके रनभूमि तलातल रक्त मई ।
करनेश हनी खग धारनतै खल सेन चलद्दल भूमि भई ।।
कमनेत विनोट पटै कुसती उडगी सव सिद्धि किलंमनकी ।
फिरि तोप न दग्गिय खग्ग न वग्गिय भग्गिय सेन किलंमनकी ।।२१४।।

---

२११. खिर=गिरना, टूटना । वाढ़=धार, पाँण । आरन=लुहारकी भट्टी । उछटै=उछलती है । वारनि=प्रहारोंसे । अरिवद्ध=शत्रुसे घायल हुए मनुष्य ।

२१२. तनै=तनय, पुत्र । कुदारनतें=कुदालसे । दमनी=दामनि, विजली । जुराफनकी=जिराफोंकी, जुराफ, अफ्रीकाका एक पशु विशेष, जिसकी गरदन वहुत लम्बी होती है ।

२१३. डैरव=डमरू ।
गुद=गूदा । अघाय=तृप्त हो कर ।

२१४. ढरके=पड़े हुए, गिरे हुए।

दोहा

यम जुट्टे हिन्दू असुर, जुट्टे माल जखीर।
हुय तग्गो तग्गो तदन, भग्गो दवलउजीर ॥२१५॥

छप्पय

जुध जीत्यो करनेश येम मुनि जत्र बजायो।
जुध जीत्यो करनेश ईश चुनि शीश अघायो ॥
जुध जीत्यो करनेश, वीर बावन यम बक्के।
जुध जीत्यो करनेश, श्रोन जुग्गनि सब छक्के ॥
पलचार हूर अप्छर सकल, भूत प्रेत जगम जती।
नर नाग देव यम उच्चरत, जुध जीत्यो पद्धरपती ॥२१६॥
जुध हार्‌यो नव्वाव जुद्ध पद्धरपति जीत्यो।
सर छिल्लर सुकि गयो येम आसुर दल वीत्यो ॥
तिमिर घोर तुरकान भान कूरम लखि भज्ज्यो।
कुजरकुल सहारि मनहु मृगराज गरज्यो ॥
जुध जीति मेक 'महुकम' जदन, 'फतयसिंह' घर आभरन।
'भारथ' समान भारत्थ करि, किलम हूंत जीत्यो 'करन' ॥२१७॥

दोहा

'दातोपुर' दक्खिन दिसा, 'मीकर' उत्तर कोन।
'कूहर' पच्छिम जानिए, पूर्व जीएको भोन ॥२१८॥

---

२१७ छिल्लर=छिछला, कम गहरा। वीत्यो=समाप्त हो गया। भारत्थ कर=युद्ध-कर।

ताके मद्धि 'उदैपुरो', बसत सुकविको ग्राम ।
उन्नत परबत हरसको, तहँ भैरवको धाम ॥२१६॥
कवि जन कवियो दिव्य कुल, चारन चंडी बाल ।
'अलू' भक्तके वंशमें, यह मम नाम गुपाल ॥२२०॥
सूर बीर रजपूत कुल, कवि चारन कुल जानि ।
जो न बहत निज धर्म जुत, दहुं कुल दीरघ हानि ॥२२१॥
आदि धर्म छिति छत्र कुल, पूरन पैज प्रतीत ।
दान करन मारन मरन, रजपूतों यह रीत ॥२२२॥
सँग रहनो संपति विपति, सुख दुख सहनो सत्थ ।
कीरति कहनो दान जुध, कुल चारन यह कत्थ ॥२२३॥
याते हम यह ग्रन्थमें, परिश्रम कियो अपार ।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार ॥२२४॥

इति श्री कूर्म यश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलह केलि बरणनं कवि गोपालदान विरचित द्वितीय लावा जुद्ध समाप्त, समाप्तोयं पंचम प्रसंग

इति ग्रन्थ समाप्त ।

---

२२२. पैज=प्रतिज्ञा ।